



મુજિતસર તફસીર અહંસનુલ બચાન

સૂર્ય : બકરણ

તર્જુમા : મૌલાના મોહમ્મદ જુનાગઢી



તફસીર : હાફિઝ સલાહુદીન યૂસુફ



હિન્દી તર્જુમા વ તરતીબ : મોહમ્મદ તાહિર હનીક

ઇસ્લામિક ઇન્ડર્પેરશન સેન્ટર - કરચ

હોટલ નુરાની પાસે, ડાંડા બજાર, ભુજ - કરચ.

Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

પ્રકાશન નં. ૫૦

મુજિતસર તફસીર અહસનુલ બચાન

સૂરઃ બકરણ

તર્જુમા : મૌલાના મોહમ્મદ જુનાગઢી

તફસીર : હાફિઝ સલાહુદીન ચૂસુફ

હિન્દી તર્જુમા વ તરતીબ : મોહમ્મદ તાહિર હનીક

ગુજરાતી લિપિયાંતર : આઈ.આઈ.સી. - કરણ.

પ્રકાશન વર્ષ : નવેમ્બર - ૨૦૧૬

આવૃત્તિ : પ્રથમ

પ્રકાશક :



ઇસ્લામિક ઇન્ફોર્મેશન સેન્ટર - કરણ

Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

સૂરતુલ બકર:

સૂરઃ બકર:¹ મદીનામેં નાજિલ હુઈ. ઈસ મેં દો સૌ છયાસી આયતો ઓર ચાલીસ રૂકુ હૈ.

અલ્લાહ કે નામ સે શુરૂ કરતા હું, જો બડા મેહરબાન ઓર રહમ કરને વાલા હૈ.

૧. અલિફ. લામ. મીમ.²

૨. ઈસ કિતાબ (કે અલ્લાહકી કિતાબ હોને) મેં કોઈ શક નહીં, પરહેજગારો કો હિદાયત (માર્ગદર્શન) કરને વાલી હૈ.

૩. જો લોગ ગેબ (પરલોક) પર ઈમાન લાતે હૈ³ ઓર નમાજ કો કાયમ કરતે હૈ⁴ ઓર હમારે જરિયે અતા કિયે હુએ

(માલ) મેં સે ખર્ચ કરતે હૈ.

૪. ઓર જો લોગ ઈમાન લાતે હૈ ઉસ પર જો આપ કી ઓર ઉતારા ગયા⁵ ઓર જો આપ સે પહલે ઉતારા ગયા⁵ ઓર વહ આખિરત પર ભી ચકીન રખતે હૈ.

૫. યાણી લોગ અપને રબ કી ઓર સે સર્ચ્યે રાસ્તે પર હૈ ઓર યાણી લોગ કામયાબી (ઓર નજાત) હાસિલ કરને વાલે હૈ.

૬. બેશક કાફિરો કો આપ કા કરાના ચાં ન કરાના સમાન હૈ, યાણ લોગ ઈમાન ન લાયેશે.

૧. ઈસ સૂરઃ મેં આગે ચલકર ગાય કી ઘટના (વાકેઆ) કા બચાન હુआ હૈ, ઈસલિએ ઈસે બકરઃ ગાય કી ઘટના વાલી સૂર (અરબી મેં ‘બકરઃ’ ગાય કો કહતે હૈ) કહા જાતા હૈ.
૨. ઈન્હે અરબી મેં હરફે-મુક્તા (અલગ-અલગ અક્ષર) કહા જાતા હૈ, ચાની અલગ-અલગ પઢે જાને વાલે અક્ષર, ઈન કે મતલબ કે બારે મેં કોઈ પ્રમાણિત કથન (કોલ) નહીં હૈ.
૩. ગેબ કા અર્થ (માયને) વે ચીજે હૈ જિનકા હલ દિમાગ ઓર અકલ કે જરિયે નહીં, જેસે અલ્લાહ તાાલા કા હોના, વહયી (પ્રકાશનાયે) ઈલાહી, જળનત, જહનનમ, મલાયેકા (ફરિશ્ટે, ઈશાદૂત), કબ્ર કા અજાબ, હશ્ર કા હોના આદિ (વગેરહ) ઈસ સે માતૂમ હુઆ કિ અલ્લાહ ઓર રસૂલ કી બતાયી હુઈ ખબરો પર અકલ, આભાસ કે સ્ત્રીય પર ચકીન કરના ઈમાન કા હિસ્સા હૈ ઓર ઈનકા ઈન્કાર કુઝ વ ગુમરાહી હૈ.
૪. નમાજ કાયમ કરને કા મતલબ હૈ કિ પાબન્દી સે સુન્નતે નબવી કે અનુસાર નમાજ પઠના, નહીં તો નમાજ તો મુનાફિક (જો ઉપર સે મુસલમાન અન્દર સે કુછ ઓર) ભી પઢતે થે.
૫. પિછલી કિતાબોં પર ઈમાન લાને કા મતલબ યાણ હૈ કિ જો કિતાબોં નખિયો પર નાજિલ હુઈ, વે સભી સર્ચ્યી હૈ, અગરચે અબ ઉન કે અનુસાર અમલ નહીં કિયા જા સકતા, અબ અમલ કેવળ કુરાઓન ઓર નબી (સ.અ.વ.) કી હદીસ કે અનુસાર હી કિયા જાએગા.

7. अल्लाह तआला ने उनके दिल और कानों पर ठप्पा लगा दिया है और उनकी आँखों पर पर्दा है, और उन के लिए बड़ा अजाब है।¹

8. और लोगों में से कुछ कहते हैं, हम अल्लाह (परमेश्वर) पर और आधिरी दिन पर ईमान लाये हैं, लेकिन हकीकत में वे ईमान वाले नहीं हैं।²

9. वह अल्लाह को और ईमान लाने वालों को धोखा है रहे हैं, लेकिन हकीकत में वह खूद अपने आप को धोखा है रहे हैं, और उन को समझ नहीं हैं।

10. उन के दिलों में रोग है, अल्लाह ने उनके रोग को और बढ़ा दिया और उनके जूठ बोलने के कारण उन के लिए दृढ़नाक अजाब है।

11. और जब उन से कहा जाता है कि धरती पर बिगाड़ मत पैदा करो, तो जवाब देते हैं कि हम तो सिर्फ़ सुधारक हैं।

12. साप्ताह ! हकीकत में यही लोग बिगाड़ पैदा करने वाले हैं,³ लेकिन समझ (ज्ञान) नहीं रखते।

13. और जब उन से कहा जाता है कि दूसरे लोगों (यानी सहाबा) की तरह तुम भी ईमान लाओ, तो जवाब देते हैं कि क्या हम ऐसा ईमान लाये जैसा भूर्ज (बेवफ़ा) लाये हैं, साप्ताह ! हकीकत में यही भूर्ज है, लेकिन यह नहीं जानते।

14. और जब ईमानवालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम भी ईमानवाले हैं, और जब अकेले में अपने बड़ों (शेतान सिफ़त लोग) के पास जाते हैं तो कहते हैं कि हम तो तुम्हारे साथ हैं, हम तो केवल उनसे मज़ाक करते हैं।

15. अल्लाह तआला भी उन से मज़ाक करता है।⁴ और उनको सरकशी और बहकावे में और बढ़ा देता है।

1. यह उन के ईमान न लाने का सबब बताया गया है कि चूंकि कुछ और गुनाह के लगातार करने के कारण उन के दिलों से सच्चाई को कुबुल करने की ताकत खत्म हो चुकी है तो वह ईमान किस तरह ला सकते हैं ?

2. यहाँ से तीसरे गुट मुनाफ़िकों का बयान होता है, जिन के दिल ईमान से खाली थे लेकिन ईमानवालों को धोखा देने के लिए मुँह से ईमान का दिखावा करते थे।

3. बिगाड़, सुधार का उल्टा है, कुछ और गुनाह से धरती पर बिगाड़ फैलता है और अल्लाह के हुक्म के पालन से शांति (सुकून) मिलती है।

4. “अल्लाह तआला भी उन से मज़ाक करता है,” इसका एक मतलब तो यह है कि जिस तरह वे मुसलमानों के साथ मज़ाक और बेईज़ू़ती का मामला करते हैं, अल्लाह तआला भी उनसे ऐसा ही मामला करते हुए उन्हें बेईज़ू़त करता है, इसको मज़ाक से संबोधित (मुखातिब) करना भाषा का नियम है, वरना यह हकीकत में मज़ाक नहीं है, उनके मज़ाक करने की सज़ा है।

१५. यह वे लोग हैं जिन्होंने गुमराही को हिंदायत के बदले में खरीद लिया है, लेकिन इनका व्यापार^१ न शायेमंद हुआ, न पह हिंदायत हासिल कर सके।

१७. ऐन लोगों की भिसाल उस ईन्सान जैसी है जिस ने आग जलाई लेकिन जब आग ने उसके आसपास को रोशन कर दिया, तो अल्लाह ने उनकी रोशनी छीन ली और उन्हें अन्धेरे में छोड़ दिया, जो नहीं देखते।

१८. (ये) गूँगे, बहरे और अन्धे हैं, अब ये लोटने वाले नहीं हैं।

१९. या आकाश की वर्षा की तरह, जिस में अंधकार, गरज और बिजली हो, बिजली की गरज के कारण मौत से डर कर वे कानों में उगलियाँ डाल लेते हैं, और अल्लाह तआला काफिरों को धेरने वाला है।

२०. लगता है कि बिजली उनकी आंखें झपट लेगी, जब उन के लिए उजाला

करती है तो चलते हैं और जब अंधेरा करती है तो खड़े हो जाते हैं और अगर अल्लाह चाहे तो उनके कानों और आंखों को छीन ले, बेशक अल्लाह हर थीज पर कुटरत रखने वाला है।

२१. हे लोगो ! अपने उस पालनहार की ईबादत करो जिस ने तुमको और तुमसे पहले के लोगों को पैदा किया ताकि तुम पर हेजार हो जाओ।

२२. जिसने तुम्हारे लिए धरती को बिधावन और आकाश को छिट बनाया, और आकाश से वर्षा की ओर उस से इस पैदा करके तुम्हें जूधिका (रिजक) अता की, अतः यह जानते हुए किसी को अल्लाह का शरीक न बनाओ।

२३. और अगर तुम्हें उस में शक हो जिसे हम ने अपने बन्दे पर नाजिल किया है, और तुम सच्ये हों तो इसी जैसी एक सूरः बना लाओ, तुम्हें छूट है कि अल्लाह के सिवाय अपने सहयोगियों को भी बुला लो।^२

१. ईस आयत में तिजारत का भतलब सच्ये रास्ते को छोड़कर गुमराही में पड़ जाना है जो सीधा-सीधा नुकसान का सोदा है।
२. तोहीद (अल्लाह को एक मानना और उसकी ईबादत करना) के बाद अब रिसालत (ईशादूत) के बारे में जताया जा रहा है, हम ने अपने बन्दे पर जो किताब उतारी उसका अल्लाह की ओर से नाजिल होने में तुम्हें अगर शक है तो तुम अपने सभी मद्द करने वालों को भिला कर ईस जैसी एक सूरः ही बनाकर दिखाओ और अगर तुम ऐसा नहीं कर सकते तो तुम्हें समझ लेना चाहिए कि हकीकत में यह कलाम किसी ईन्सान की ईजाद नहीं है बल्कि अल्लाह का ही कलाम है और हम पर और मोहम्मद (स.अ.व.) की रिसालत पर ईमान लाकर जहन्नम की आग से बचने की कोशिश करो, जहन्नम की आग जो काफिरों के लिए ही तेयार की गई है।

२४. फिर अगर तुम ने नहीं किया और तुम कभी भी नहीं कर सकते,¹ तो (उसे सच्चा समझ कर) उस आग से डरो, जिसका धूधन धन्सान और पथ्थर है, जो काफिरों के लिए तेयार की गई है।

२५. और इमानवालों और नेक काम करनेवालों को,² उन स्वर्गों की खुशबूती दो जिनके नीचे नहरे बह रही है, जब उन्हें उन से फल खाने के लिए दिए जाएंगे तो कहेंगे कि इस से पहले हमें खाने को यही दिया गया, वह समाझपी फल होंगे और उन के लिए उस में पाकीजा बीघियां होंगी और वे उस में हमेशा रहेंगे।

२६. हकीकत में अल्लाह तआला किसी भिसाल को बयान करने से लज्जिजत नहीं होता, याहे वह मरण की हो या उससे भी तुच्छ चीज़ की, इमानवाले उसे अपने रब की ओर से सच समझते हैं

और काफिर कहते हैं कि ऐसी भिसाल देने से अल्लाह का भतलब क्या है ? इसी के द्वारा बहुतों को गुमराह करता है और बहुत लोगों को सच्चे रास्ते पर लाता है, और गुमराह वह केवल अपज्ञाकारियों (शासिकों) को ही करता है।

२७. जो लोग अल्लाह तआला के साथ की गयी मजबूत अहंद (प्रतिज्ञा) को तोड़ देते हैं, और अल्लाह तआला ने जिन चीजों को जोड़ने का हुक्म दिया है, उसे काटते हैं और धरती पर इसाद फैलाते हैं, यही लोग नुकसान उठाने पाते हैं।

२८. तुम अल्लाह को कैसे नहीं मानते, जबकि तुम बेजान थे तो उस ने तुम्हें ज्ञान दिया, फिर तुम्हें भौत देगा, फिर दोबारा जिणा करेगा, फिर तुम को उसी के पास जाना है।

1. यह कुरआन करीम की सच्चाई का एक वाजेह सुबूत है कि अरब व दूसरे द्वारा के सभी काफिरों को लल्कारा गया, लेकिन वह आज तक इसका जवाब नहीं दे सके और बेशक क्यामत आने तक ऐसा नहीं कर सकेंगे।
2. कुरआन पाक में हर जगह इमान के साथ नेक काम का बयान करके इस बात को वाजेह कर दिया गया है कि इमान और नेक काम का चोली-दामन का साथ है, नेक काम के बिना इमान का कोई फायदा नहीं और इमान के बिना नेक काम की अल्लाह के पास कोई कीमत नहीं। और नेक काम क्या है ? जो सुन्नत के अनुसार हो और सही तरीके से अल्लाह की खुशी के लिए किया जाये, सुन्नत के खिलाफ अमल भी कुब्जल नहीं है और दिखावे और रियाकारी के लिए किये गये काम भी बेकार और बेफायदा हैं।

२८. उसी ने तुम्हारे लिए, जो कुछ धरती में हैं सब पैदा किया, फिर आकाश का दृश्यादा किया^१ और उस ने सात बराबर आसमान बना दिये और वह हर चीज़ का जानने वाला है।

३०. और जब तुम्हारे रब ने इरिश्टों से कहा^२ कि, मैं धरती में एक खलीफ़ा^३ (ऐसा भिरोह जो एक-दूसरे के बाद आयेगा) बनाने जा रहा हूँ, तो उन्होंने कहा क्या तू उस में ऐसे लोगों को पैदा करेगा जो उसमें इसाई और खून-भराबा करे, और हम तेरी तारीफ़ के साथ तेरी तस्बीह करते और तेरी पाकीजगी बयान करते हैं, उस ने कहा जो मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते।

३१. और उस (अल्लाह तआला) ने आदम को सभी नाम सिखाकर उन चीज़ों को इरिश्टों के सामने पेश कर दिया और इरमाया कि अगर तुम सच्ये हो तो इन चीज़ों के नाम बताओ।

३२. उन सभी ने कहा, है अल्लाह ! तू पाक जात है, हमें तो बस उतना ही ईल्म है, जितना तूने हमें सिखाया है, पूरे ईल्म और हिक्मत वाला तू ही है।

३३. अल्लाह तआला ने आदम (अ.स.) से इरमाया, “तुम इन के नाम बता दो” जब उन्होंने बता दिये, तो इरमाया क्या मैंने तुम्हें पहले नहीं कहा था कि मैं आसमानों और जमीन के गेब को जानता हूँ और जो तुम करते अवधूपाते हो जातना हूँ,

१. ईस्लाम धर्म (दीन) के कुछ आलिमोंने ईसका अनुवाद (तर्जुमा) : “‘फिर आसमान की ओर चढ़ गया’” किया है। (सहीह बुखारी) अल्लाह तआला का आसमानों के ऊपर अर्श पर चढ़ना और खास-खास मोक्षों पर दुनियां के करीब आसमान पर उतरना अल्लाह की सिफात में से है जिस पर ईसी तरह ईमान रखना ज़रूरी है, जिस तरह से कुरआन और हटीस में बयान किया गया है।
२. मलायेका (इरिश्टे) अल्लाह के प्रकाश से पैदा की गई भजलूक है जिनका निकाना आसमान पर है, जो अपने रब के हुक्म का पालन करते हैं और उसकी तारीफ़ और पाकीजगी के बयान में व्यस्त (भशगूल) रहते हैं और उसके किसी हुक्म की नाइरमानी नहीं करते।
३. खलीफ़ा का मतलब ऐसा प्राणी (भजलूक) है जो एक-दूसरे के बाद आयेगा। (ईज्ञे कसीर)

३४. और जब हम ने इरिश्टों से कहा कि आदम को सज्जा करो, तो ईब्लीस के सिवाय सभी ने सज्जा किया। उस ने नकारा और धमंड किया¹ और वह था ही काफिरों में.²

३५. और हम ने कह दिया, हे आदम ! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो, और जहाँ से चाहो जु भरकर खाओ-पियो, लेकिन इस पेट³ के पास न जाना, वर्ना जालिम हो जाओगे.

३६. लेकिन शेतान ने उन्हें भटका कर वहाँ से निकलवा ही दिया, और हम ने कह दिया कि “उतरो, तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो, और एक मुकर्रर वक्त तक तुम्हें धरती पर ठहरना और फ़ायेदा उठाना है.”

३७. आदम (अ.स.) ने अपने पालनहार से कुछ बातें सीख ली (और अल्लाह से तोबा की) उस ने उनकी तोबा कुबूल कर ली, बेशक वही तोबा

कुबूल करने वाला रहम करने वाला है। ३८. हम ने कहा तुम सभी यहाँ से उतरो, फ़िर अगर तुम्हारे पास मेरी ओर से हिंदायत आये तो जो मेरे सही रास्ते को अपनायेगा। उन पर कोई डर नहीं होगा न वे उदासीन होंगे।

३९. और जो कुक्ष प झूठ के जरिये हमारी आयतों को झूठलायें, वे जहन्नम में रहने वाले हैं, और हमेशा उसी में रहेंगे।

४०. हे ईआईल के बेटो, मेरी उस नेभत को चाढ करो जो मैंने तुम पर की, और मुझ से किया वादा पूरा करो, मैं तुम से किया वादा पूरा करूँगा, और सिई मुझ से ही डरो।

४१. और उस (शरीअत) पर ईमान लाओ जिसे मैंने उस को साभित करने के लिये उतारा जो (तोरात) तुम्हारे साथ है और तुम इस के पहले ईन्कारी न बनो, और मेरी आयतों को थोड़े भूत्य पर न बेचो,⁴ और सिई मुझ से डरो।

१. ईब्लीस ने सज्जा से ईन्कार किया और जलील हुआ, कुरआन के अनुसार ईब्लीस इन्नातों में से था, लेकिन अल्लाह तआला ने उसे सम्मानस्वरूप (बाईज्जत) इरिश्टों में शामिल कर लिया था, ईसलिए अल्लाह के हुक्म से उसको भी सज्जा करना ज़री था, लेकिन उस ने हसद और धमंड की वजह से सज्जा करने से ईन्कार कर दिया, यानी हसद और धमंड वह पाप है जिनको ईन्सानियत की दुनियां में सब से पहले किया गया और ईसका करने वाला ईब्लीस था।
२. अर्थात् (यानी) अल्लाह तआला के पहले से ईल्म में था।
३. वह पेट किस चीज़ का था ? ईसके बारे में कुरआन और हीरास में वाजेह तोर से कुछ नहीं भिलता, ईस को गेहूं का पोधा भशहूर कर दिया गया है, जो अवास्तविक है, हमें उस के नाम को मालूम करने की ज़रूरत नहीं है और न उसका कोई फ़ायेदा है।
४. “थोड़े भूत्य (कीमत) पर भत बेचो” ईसका भतलब यह कभी नहीं कि ज़यादा कीमत भिल आये तो अल्लाह के हुक्म का सौदा कर लो, बटिक ईसका भतलब यह है कि अल्लाह के हुक्म के मुकाबले में दुनिया के फ़ायेटे को अहभियत न हो, अल्लाह के हुक्म तो ईतने कीमती है कि सारी दुनियां का सामान और चीज़ें उन के मुकाबले में हकीर हैं, आयत में अगरये ईआईल के बेटों की तरफ ईशारा किया गया है लेकिन यह हुक्म क्यामत तक सभी ईन्सानों के लिये है, जो कोई भी सच को छोड़ का पक्ष करे या जिहालत (अज्ञानता) को जाहिर कर सच से सिई दुनियावी इल पाने के लिये मुंह भोड़ेगा, वह ईस हुक्म में शामिल है। (फ़तहुल कटीर)

જર. ઓર સત્ય (હક) કા અસત્ય (બાતિલ) કે સાથ મિલાવટ મત કરો ઓર ન સચ કો છુપાઓ, તુમ્હેં તો ખુદ ઈસ્કા ઈલ્બ હૈ.

જર. ઓર નમાઝ કાચમ કરો, ઓર ઝકાત દો, ઓર ઝુકું કરને (જુકને) વાલોં કે સાથ ઝુકું કરો (જુક જાઓ).

જર. કચા લોગો કો નેકી કા હુકમ દેતે હો ? ઓર ખુદ અપને આપ કો ભૂલ જાતે હો, જબકી તુમ કિતાબ પઢતે હો, કચા ઈતની ભી તુમ મેં અકલ નહીં.

જર. ઓર સબ્ર વ નમાઝ કે જરિયે મદદ હાસિલ કરો¹ ઓર યહ બડી ચીજ હૈ, લેકિન અલ્લાહ સે ડરને વાલોં કે લિએ નહીં.

જર. જો જાનતે હૈ કિ અપને રબ સે મિલના હૈ ઓર ઉસી ઓર પલટ કર જાનેવાલે હૈ.

જર. હે (ચાકુબ) ઈસ્થાઈલ કી સન્તાનો ! મેરી ઉસ નેમત કો ચાદ કરો, જો મૈને તુમ પર ઉપકાર કિયા ઓર મૈને તુમ્હેં સારી દુનિયા પર ફજુલત દી.

જર. ઓર ઉસ દિન સે ડરો જિસ દિન કોઈ કિસી કે કામ નહીં આએગા, ન

ઉસકી કોઈ સિફારિશ કુબુલ કી જાએગી, ન ઉસ સે કોઈ બદલા કુબુલ કિયા જાએગા ઓર ન ઉન્હેં મદદ દી જાએગી.

જર. ઓર જબ હમને તુમ્હેં ફિરઓન કે આદમ્ભિયો² સે છુટકારા દિલાયા, જો તુમ્હેં બુરા અજાબ દેતે રહે, તુમ્હારે બેટોં કો કલલ કરતે રહે, ઓર તુમ્હારી બેટિયાં જિન્દા છોડતે રહે, ઈસ સે છુટકારા દિલાને મેં તુમ્હારે રબ કા બડા ઉપકાર થા.

પર. ઓર જબ હમ ને તુમ્હારે લિએ સાગર કો ફાડ દિયા³ ઓર ઉસ સે તુમ્હેં પાર કર દિયા ઓર ફિરઓન કે સાથિયો કો તુમ્હારી આંખોં કે સામને કુબો દિયા.

પર. ઓર હમને મૂસા (અ.સ.) કો ચાલીસ રાતો કા વચન દિયા, ફિર તુમને બધાડ કો માબૂદ બના લિયા, ઓર જાલિમ બન ગાયે.

પર. લેકિન હમને ઈસ કે બાવજૂદ ભી તુમ્હેં માફ કર દિયા, તાકિ તુમ શુક્ગુજાર રહો.

પર. ઓર હમને મૂસા (અ.સ.) કો તુમ્હારી હિદાયત કે લિએ કિતાબ (તોરાત) ઓર મોજિજા અતા કિયે.

1. સબ્ર ઓર નમાઝ દોનોં અલ્લાહવાલોં કે દો બડે હથિયાર હૈ, નમાઝ કે ઝરિયે એક મોઝિન કો અલ્લાહ સે સમબન્ધ આસાની સે હોતા હૈ, જિસસે ઉસે અલ્લાહ કી મર્જ ઓર મદદ હાસિલ હોતી હૈ, સબ્ર કે ઝરિયે ઉસકે ચરિત્ર (કિરદાર) મેં મજબૂતી ઓર ધર્મ મેં ઈસ્તિકામત પૈદા હોતી હૈ.
2. આલે ફિરઓન સે મુરાદ કેવળ ફિરઓન ઓર ઉસકા પરિવાર હી નહીં, બલ્ક ફિરઓન કે સભી સાથી હૈ.
3. સાગર કા ફાડના ઓર ઉસ મેં રાસ્તા બના દેના, યહ એક મોઝિજા થા, જિસકા પૂરા બચાન સૂરૂ: “શોઆરા” મેં કિયા ગયા હૈ, યહ સમુદ્ર કા જવાર-ભાટા નહીં થા, જેસાકિ સર સૈયયદ અહમદખાં ઓર દૂસરે મોઝિજા કા ઈન્કાર કરનેવાલોં કા પિચાર હૈ.

પછ. ઓર જબ મૂસા (અ.સ.) ને અપની કોમવાલોં સે કહા કિ “હે મેરી કોમવાલો! તુમ ને બછડે કો (ટેવતા) બનાકર ખુદ અપને ઉપર જુલ્ભ કિયા હૈ, અથ તુમ અપને પૈદા કરનેવાલે કી તરફ તપજ્જો કરો, અપને આપ કો (અપરાધી કો) અપને હાથો કટલ કરો, તુમ્હારે લિએ ભલાઈ અલ્લાહ તાલાદ કે પાસ ઈસી મેં હૈ” તો ઉસ ને તુમ્હારી તોબા (ક્ષમા-ચાચના) કુલ્ભુલ કી, બેશક વહી તોબા કુલ્ભુલ કરને વાલા ઓર રહું કરનેવાલા હૈ.

પપ. ઓર (તુમ ઉસે ભી ચાદ કરો) જબ તુમ ને મૂસા (અ.સ.) સે કહા થા કિ જબ તક હમ અલ્લાહ કો સામને ન ટેખ લેગે કબી ભી ઈમાન ન લાએગે (જિસ નાફરમાની કે દંડસ્વરૂપ) તુમ પર તુમ્હારે દેખતે હુએ બિજલી ઠિર પડી.

પક. (લેકિન) ફિર હમ ને તુમ્હેં મૌત કે બાદ જિંદગી ઈસલિએ દિ તાકિ તુમ

શુંકિયા અદા કરો.

પછ. ઓર હમને તુમ્હારે ઉપર બાદળો કી છાયા કી ઓર તુમ પર મન્ન વ સલવા ઉતારા¹ (ઓર કહ દિયા) હમારી અતા કી હુદ્ધ પાક ચીજે ખાઓ, ઓર ઉન્હોને હમ પર જુલ્ભ નહીં કિયા બલ્ક ખુદ અપને આપ પર જુલ્ભ કરતે થે.

પટ. ઓર હમ ને તુમ સે કહા કિ ઈસ બસ્તી મેં જાઓ² ઓર જો કુછ જહાં કહી સે ભી ચાહો જુ ભર કર ખાઓ-પિયો ઓર દરવાજે મેં સે સિર ઝુકાએ હુએ દાખિલ હો³ ઓર મુંહ સે કહો કિ “હમ માઝી ચાહે હૈ”,⁴ હમ તુમ્હારી ગલતિયો કો માફ કર દેંગે ઓર ભલાઈ કરનેવાલો કો ઓર જયાદા અતા કરેંગે.

પદ. ફિર ઉન જાલિમોં ને યહ બાત જો ઉન સે કહી ગઈ, બદલ ડાલી, હમ ને ભી ઉન જાલિમોં પર ઉનકી નાફરમાની કી વજ્હ સે આકાશ સે અજાબ ઉતારા.⁵

1. (મન્ન) કુછ કે પાસ તુરંજબીન હૈ, ચા ઓસ, જો પેડ ચા પત્થર પર તિરતી તો શહુદ કે તરફ મીઠી હો જાતી ઓર સૂખ કર ગોંદ કી તરફ હો જાતી, કુછ કે નજીદી શહુદ કી તરફ મીઠા પાની હૈ, હંદીસ હૈ કિ, “કુમ્ભી મન્ન કી તરફ હૈ” (બુખારી-મુસ્ટિલમ) સલવા બટેર ચા એક તરફ કી ચિહ્નિયા થી જો જિંબન (વધ) કરકે ખા લેતે થે. (ફિતહુલ કદીર).
2. ઉસ બસ્તી સે મુરાદ જયાદાતર મુફિસરોં કે નજીદી બેતુલ મુકદ્દસ હૈ.
3. સજદા સે મુરાદ કુછ લોગોં ને ઝુકતે હુએ દાખિલ હોને સે લિયા હૈ ઓર કુછ ને શુંકિયા કો સજદા હી માના હૈ, મુરાદ ચાહ હૈ કિ અલ્લાહ કે સામને શુંકિયા અદા કરતે હુએ આજિજુ જાહીર કરતે હુએ દાખિલ હો.
4. હિતાતુન કા મતલબ હૈ “હમારે ગુનાહોં કો માફ કર દે.”
5. ચે આકાશ સે અજાબ કયા થા ? કુછ કે નજીદી અલ્લાહ કા ગુસ્સા, અધિક ધૂન્ધ ઓર પ્લેગ થા, ઈસ આખિરી મતલબ કા પક્ષ હંદીસ સે હાસિલ હોતા હૈ.

५०. और जब भूसा (अ.स.) ने अपनी जाति के लिये पानी मांगा तो हम ने कहा कि अपनी लाठी पथथर पर आरो, जिससे बारह चश्मे फूट पड़े, हर गिरोह ने अपना चश्मा पहचान लिया (और हम ने कह दिया कि) अल्लाह तआला का अता किया हुआ अनाज खाओ-पीयो और धरती पर इसादैलाते न फिरो।

५१. और जब तुम ने कहा कि “हे भूसा (अ.स.) !” हम से एक ही तरह का खाना खाने पर सब्ब नहीं हो सकेगा, इसलिये अपने रब से दुआ कीजिये कि वह हमें धरती पर पैदा साग, ककड़ी, गेहूं, भस्तुर और ख्याज दे, आप ने कहा कि उम्दा चीज़ के बदले हड्डी चीज़ क्यों मांगते हो ? अच्छा शहर में जाओ और वहां पर तुम्हें तुम्हारी पसंद की यह सभी चीज़े भिलेंगी^१ उन पर जिल्लत और गरीबी डाल दी गई और वे अल्लाह का अभाव लेकर लोटे, यह इसलिये कि वे

अल्लाह की आयतों की नहीं मानते थे और नजियों का नाहक कत्ल करते थे, यह उनकी ज्यादतियों का नतीजा है।

५२. बेशक जो मुसलमान हो, यहूदी हो, नसारा (ईसाई) हो या साबी हो,^२ जो कोई भी अल्लाह तआला और क्यामत के दिन पर ईमान लायेगा और अच्छे काम करेगा उस का बदला उस के रब के पास है, और उनको न कोई कर है और न कोई गम होगा।

५३. और जब हम ने तुम से वयन लिया और तुम्हारे ऊपर तूर पहाड़ ला खड़ा कर दिया^३ और कहा-जो हम ने तुम्हें दिया है, उसे मजबूती से पकड़े रहो और जो कुछ उस में है उसे याद करो, ताकि तुम बच सको।

५४. फिर तुम उस के बाद भी फिर गये, फिर अगर अल्लाह तआला का इज़ल और रहमत तुम पर न होती, तो तुम नुकसान उठाने वाले होते।

1. यह हादसा भी उसी तीह के मैदान का है, भिज्ज से भतलब ईजिप्ट देश नहीं बल्कि कोई शहर है, भतलब यह है कि यहां से किसी भी शहर में चले जाओ और वहां जेती करो, अपनी पसन्द की तरकारियां व दालें उगाओ और खाओ, उनकी यह मांग चूंकि ईन्हाँम का अनादर था इसलिये फटकार के तृप में कहा गया कि “तुम्हारे लिये वहां तुम्हारी मन पसन्द चीज़े हैं。”
2. शाबीईन शाबी का बहुपयन (जमा) है, यह वे लोग हैं जो ज़रूर श़र्काती दोर में किसी सर्वे धर्म (दीन) के माननेवाले रहे होंगे (इसलिये कुरआन में यहूदी, ईसाई धर्म के साथ बयान किया गया है) लेकिन बाद में उन के अन्दर फ़िरिश्तों की पूजा का रिवाज हो गया या यह किसी भी धर्म के माननेवाले न रहे, इसी वजह से जेटीनों को साबी कहा जाने लगा।
3. जब तोरात के हुक्मों के लिये यहूदियों ने दुश्मनी के तोर पर कहा कि हम से तो इन हुक्मों का पालन नहीं हो सकेगा तो अल्लाह तआलाने तूर पहाड़ को छत की तरह उन के ऊपर उठा दिया, जिससे कर कर उन्होंने पालन करने का वयन दिया।

ક્ર. ઓર અવશ્ય હી તુમ્હે ઉન લોગો કે બારે મેં ઈલ્મ ભી હૈ, જો તુમ મેં સે શનિવાર¹ કે બારે મેં હુદ સે તજાઉજ કર ગયે ઓર હમ ને (ભી) કહ દિયા કિ તુમ જલીલ બનદર બન જાઓ.

ક્ર. ઈસે હમને અગલે-પિછલો કે લિયે હોશિયાર રહને કી વજ્હ બના દિયા, ઓર કરનેવાતો કે લિયે નસીહત હૈ.

ક્ર. ઓર મૂસા (અ.સ.) ને જબ અપની જાતિ સે કહા કિ અલ્લાહ તથાલા તુમ્હે એક ગાય² જિંબુદ્ધ કરને કા હુકમ દેતા હૈ, તો ઉન્હોને કહા કિ “હમ સે કચો મજાક કરતે હો ?” આપ ને જવાબ દિયા કિ “મેં એસી બેવકૂફી સે અલ્લાહ તથાલા કી પનાહ લેતા હું.”

ક્ર. ઉન્હોને કહા-હે મૂસા ! (અ.સ.) અલ્લાહ સે દુઆ કીજિઝાને કી હમેં ઉસ કે બારે મેં બતા દે, આપને ફરમાયા, સુનો !

વહ ગાય ન તો બૂઢી હો ઓર ન બદિયા, બદિક દરમિયાની ઉંમ કી હો, અબ તુમ્હે જો હુકમ દિયા ગયા હૈ ઉસકા પાલન કરો.

ક્ર. વે ફિર કહને લગે કી અલ્લાહ સે

દુઆ કીજિઝાને કી વહ હમેં બતા દે કિ ઉસકા રંગ કેસા હો ? ફરમાયા વહ કહુતા હૈ કિ ગાય સુનહરે તીખે રંગ કી હો, ઓર દેખને વાલોં કો ખુશ કર દેતી હો.

ક્ર. વે કહને લગે કી અપને રબ સે દુઆ કીજિઝાને કી વહ હમેં ખોલ કર બતા દે કી વહ કેસી હો ? ઈસ તરહ કી બહુત સી ગાયોં હૈ પતા નહીં ચલતા, અગર અલ્લાહને ચાણ તો હમેં હિંદાયત હાસિલ હો જાએગી.

ક્ર. ઉસ ને કહા કિ અલ્લાહ કા હુકમ હૈ કિ વહ ગાય ખેતીવાતી જમીન મેં હલ જોતનેવાતી ઓર ખેતો કો પાની પિલાને વાલી નહીં, વહ સ્વસ્થ ઓર બેદાગ હૈ, ઉન્હોને કહા અબ આપને વાજેહ કર દિયા, ફિર ભી વહ આટેશોં કા પાલન કરનેવાલે નહીં થે, લેકિન ઉસે માના ઓર ગાય કી કુર્બાની દી.

ક્ર. ઓર જબ તુમ ને એક જાન કો કઠલ કર દિયા, ફિર એક-દૂસરે પર ઈજામ લગાને લગે, ઓર અલ્લાહ કો તુમ્હારી છુપાઈ બાત જાહીર કરની થી.

1. શનિવાર કે દિન ચહૂદિયો કો મછલી કા શિકાર, બદિક કોઇ ભી કામ કરને સે રોકા ગયા થા, લેકિન ઉન્હોને એક બહાના નિકાલ કર અલ્લાહ કે હુકમ કી નાફરમાની કી. શનિવાર કે દિન (ઈભેઠાન કે લિયે) મછલિયા જયાદા આતી, ઉન્હોને ગડઢે ખોદ લિયે તાકિ મછલિયાં ઉસ મેં ફંસી રહે ઓર ફિર રથિવાર કે દિન ઉન કો પકડ લેતે.
2. ઈચ્છાઈલ કી ઓલાદ મેં બિના કિસી ઓલાદ કે એક આદમી થા, ઉસ કા એક હી વારિસ ઉસ કા ભતીજા થા, એક રાત ઉસ ભતીજેને અપને ચાચા કા કઠલ કરકે લાશ કિસી દૂસરે આદમી કે દરવાજે પર ડાલ દી, અસલી કાતિલ કી ખોજ મેં વે એક-દૂસરે કો કહને લગે, આખિર મેં બાત મૂસા (અ.સ.) તક પહુંચી, તો ઉન્હેં એક ગાય જિંબુદ્ધ કરને કા હુકમ હુંદા, ગાય કે ગોશત કા એક ટુકડા લાશ પર મારા ગયા, જિસસે વહ જિનદા હો ગયા ઓર કાતિલ કો પહ્યાન કરાતે હી મર ગયા. (ફિતહુલ કદીર)

૭૩. હમ ને કહા કि ઉસ ગાય કા એક દુક્કા મુર્દા કે જિસમ પર મારો (વહ જિન્દા હો જાએગા) ઉસી તરફ અલ્લાહ તથાલા મુર્દા કો જિન્દા કરકે તુમ્હારી અકલમંદી કે લિએ નિશાનિયાં દિખાતા હૈ.

૭૪. ફિર ઉસ કે બાદ તુમ્હારે દિલ પત્થર જેસે બલ્લિક ઉસ સે ભી જ્યાદા મજબૂત હો ગયે, કુછ પત્થરોં સે તો નહોં બહ નિકલતી હૈ તથા કુછ ફટ જાતે હૈ ઓર ઉન સે પાની નિકલતા હૈ, ઓર કુછ અલ્લાહ તથાલા કે કર સે તિંગ પડતે હૈ, ઓર તુમ અલ્લાહ તથાલા કો અપને અમલ સે અન્જાન ન જાનો.

૭૫. (હે મુસલમાનો !) કચા તુમ ચાહતો હો કિ વહ (ચહૂટી) તુમ્હારા ચકીન કર લે - જબકી ઉન મેં એસે ભી હો જો અલ્લાહ કા કલામ સુનતે હોં ફિર ઉસે સમજને કે બાદ ઉસે ફેર-બદલ કર દેતે હોં, ઓર એસા પે જાનકર કરતે હોં.

૭૬. ઓર જબ ઈમાનવાલોં સે મિલતે હૈ તો અપની ઈમાનદારી જાહીર કરતે હોં, ઓર જબ આપસ મેં મિલતે હૈ તો કહતે હૈ કિ મુસલમાનોં તક કચો વહ બાતો

પહુંચાતે હો જો અલ્લાહ ને તુમ્હે સિખાયી હૈ, કચા જાનતે નહીં કિ યે તો અલ્લાહ કે સામને તુમ પર ઉનકા સુબૂત હો જાએગા.

૭૭. કચા યે નહીં જાનતે કિ અલ્લાહ તથાલા ઉનકી છુપી ઓર જાહીર સભી બાતો જાનતા હૈ.

૭૮. ઓર ઉન મેં સે કુછ અનપદ એસે ભી હો જો ઉમ્મીદોં કે સિવાય કિતાબ નહીં જાનતે ઓર સિઈ અટકલ કરતે હૈ.

૭૯. ઉન લોગોં કે લિએ હલાકત હૈ, જો ખુદ અપને હાથો લિખી કિતાબ કો અલ્લાહ કી કિતાબ કહતે હૈ, ઓર ઈસ તરફ દુનિયા (ધન) કમાતે હૈ, અપને હાથો લિખને કી વજહ સે ઉનકી બરબાઈ હૈ ઓર અપની ઈસ કમાઈ કી વજહ સે ઉનકા ધિનાશ હૈ.

૮૦. ઓર યે લોગ કહતે હૈ કિ હમ તો કુછ હી દિન જહનનમ મેં રહેંગે, (ઉન સે) કહો કિ કચા તુમ ને અલ્લાહ તથાલા સે કોઈ વાદ લિયા હૈ¹ ? અગર હૈ તો બેશક અલ્લાહ તથાલા અપના વાદ તોડેગા નહીં, ચા તુમ અલ્લાહ કે ઉપર વહ બાતો લગાતે હો જિન્હે તુમ નહીં જાનતે².

૧. ચહૂટી કહતે થે કિ દુનિયા કા વજૂદ કેવળ સાત હજાર સાલ કે લિએ હૈ ઓર હમ હજાર સાલ કે બદલે એક દિન જહનનમ મેં રહેંગે, ઈસ તરફ સિઈ સાત દિન નરક મેં રહેંગે, કુછ કહતે થે કિ હમ ને ચાલીસ દિન બછડે કી ઈબાદત કી થી, ચાલીસ દિન નરક મેં રહેંગે, અલ્લાહ તથાલા ફરમાતા હૈ કિ કચા તુમ ને અલ્લાહ સે સમજોતા કિયા હૈ ? અલ્લાહ તથાલા કે સાથ ઈસ તરફ કા કોઈ વાદ નહીં હૈ.
૨. ચા તુમ્હારા ચહ દાવા કિ અગર હમ નરક મેં ગયે ભી તો સિઈ કુછ દિનોં કે લિયે જાયેગે, તુમ્હારે અપની તરફ સે હૈ, ઓર ઈસ તરફ તુમ અલ્લાહ કે ઉપર એસી બાતો લગાતે હો જિનકા તુમ્હે ખુદ ઈલ્મ નહીં હૈ, આગે અલ્લાહ તથાલા અપના વહ કાનૂન બચાવ કર રહા હૈ જિસ કે આધાર પર કચામત કે દિન વહ નેકી કરને વાલે ઓર બુરોં કો ઉન કી નેકી ઓર બુરે કામ કી સજા દેગા.

૮૧. બેશક જિસને ભી ગુનાહ કિયા ઓર ઉસ કે ગુનાહ ને ઉસે ઘેર લિયા વહુ જહણનમી હૈ, વહુ હમેશા જહણનમે રહેગા.

૮૨. ઓર જો લોગ ઈમાન લાયે ઓર નેક અમલ કિયે વે જન્નતી હૈ, જો હમેશા જન્નત મેં રહેંગે.

૮૩. ઓર જબ હમ ને ઈસરાઈલ કે પુત્રોને વાદા લિયા કિ-તુમ અલ્લાહ કે સિવાય કિસી ઓર કી ઈબાદત ન કરના ઓર મા-બાપ કે સાથ અચ્છા સૂલુક કરના, ઓર ઉસી તરફ કરીબી રિશ્ટેદારો, ચંતીમોં ઓર ગરીબો કે સાથ, ઓર લોગોં કો અચ્છી બાતોની બતાના, નમાજ કાયમ કરના ઓર ઝકાત દેતે રહના, લેકિન થોડે સે લોગોં કે સિવાય તુમ સભી મુકર ગયે ઓર મુંહ મોડ લિયે.

૮૪. ઓર જબ હમ ને તુમ સે વાદા લિયા કિ આપસ મેં ખૂન ન બહાના (કલ્લ ન કરના) ઓર અપનોં કો દેશ સે ન નિકાલના, તુમ ને કુબૂલ કિયા ઓર તુમ ઉસ કે ગવાહ બને.

૮૫. ફિર ભી તુમ ને અપનોં કા કલ્લ કિયા ઓર અપને એક ગુટ કો દેશ સે નિકાલા ઓર ગુનાહ ઓર જલન કરને કે કામ મેં ઉન કે ખિલાફ દૂસરે કા પક્ષ લિયા, હાં જબ વે બનની બનકર તુમ્હારે પાસ આયે તો તુમ ને ઉન કે બદલે મેં માલ દિયા (જિસે ફિરિયા કહુતે હૈ),

લેકિન ઉનકા નિકાલના જો તુમ પર હરામ થા (ઉસકી કુછ ફિક ન કી) કયા તુમ કિતાબ કી કુછ બાતોની માનતે હો ઓર કુછ કો નકારતે હો ? તુમ મેં સે જો ભી એસા કરે ઉસકી સત્રા ઈસ કે સિવાય કયા હો કિ દુનિયા મેં જિલ્લત ઓર કયામત કે દિન કઠિન સત્રાઓ કી માર ! ઓર અલ્લાહ તુમ્હારે આમાલ સે અંજાન નહીં હૈ.

૮૬. યે વે લોગ હૈ જિન્હોને દુનિયા કી જિંદગી કો આખિરત કે બદલે ખરીદ લિયા હૈ, ઉનકી ન સત્રાયે કમ હોંગી ન ઉનકી મદદ કી જાએગી.

૮૭. ઓર હમ ને મૂસા (અ.સ.) કો કિતાબ અતા કી ઓર ઉન કે બાદ લગાતાર રસૂલ ભી બેજે ઓર હમ ને ઈસા (અ.સ.) બિન મરિયમ કો વાજેહ નિશાનિયાં અતા કી ઓર પાકીજા ઝુણ (હજરત જિબ્રિલ) સે ઉનકી તાઈદ કરાયી, લેકિન જબ કલ્લી ભી તુમ્હારે પાસ રસૂલ વહુ ચીજ લાએ જો તુમ્હારે પિચારોં કે ખિલાફ થી, તુમ ને ફોરન તકબ્બુર કિયા, ફિર કુછ કો તુમ ને ઝુઠલા દિયા ઓર કુછ કો કલ્લ કર દિયા.

૮૮. ઓર ઉન્હોને કહા કિ હમારે દિલ ઢંકે હુએ હૈ, (નહીં, નહીં) બલિક ઉન કે કુફ કી વજણ સે ઉન્હેં અલ્લાહ ને ધિત્કાર દિયા હૈ, તો ઉન મેં ઈમાન વાલે સિર્ફ થોડે હૈ.¹

1. દિલોં પર સરચી બાતોં કા અસર ન પડના, કોઈ બડપ્પન કી બાત નહીં બલિક યહુ નિન્દનીય (જલીલ) હોને કી નિશાની હૈ, ઈસલિએ ઉનકા ઈમાન ભી તનિક હૈ (જો અલ્લાહ કે યાં કુબૂલ નહીં હૈ) ચા ઉન મેં ઈમાન લાને વાલે ભી થોડે હી લોગ હોંગે.

૮૯. ઓર જબ ઉન કે પાસ ઉનકી કિતાબ (તોરાત) કી પુષ્ટ (તસ્દીક) કરને કે લિએ એક કિતાબ (પાક કુરાન) આ ગઈ, અગરચે ઈસ સે પહુલે યે ખુદ ઈસ કે ઝ્રારા કાફિરોં પર જીત ચાહ્યે થે, તો આ જાને કે બાવજૂદ ઓર પહ્યાન લેને કે બાવજૂદ ઉન્હેં નકાર દિયા, અલ્લાહ (તાલા) કી લાનત હો કાફિરોં પર.

૯૦. બહુત બુરી હૈ વહ ચીજ જિસકે બદલે ઉન્હોને અપને કો બેચ ડાલા, વહ ઉનકા કુદ્દ કરના હૈ અલ્લાહ તાલા કી તરફ સે ઉત્તરી કિતાબ કો, સિઝી ઈસ બાત સે જલ કર કી અલ્લાહ ને અપની નેમત અપને જિસ બન્ટે પર ચાહી ઉતારા, ઈસ કારણથી કોધ (ગજબ) પર કોધ કે ભાગી હો ગએ^૧ ઓર ઉન કાફિરોં કે લિયે અપમાનજનક (રૂસ્વા કરને વાલા) અજાબ હૈ.

૯૧. ઓર જબ ઉન સે કહા ગયા કી ઉસ પર ઈમાન લાઓ જિસે અલ્લાહ ને ઉતારા હૈ, તો ઉન્હોને કહ દિયા કી જો હમ પર (તોરાત) નાજિલ હુદ્દ ઉસ પર હમારા ઈમાન હૈ, ઓર વહ ઉસ કે સિવાય (પાક કુરાન) કા ઈન્કાર કરતે હૈ, જબ કી વહ સચ હૈ, ઉન કે પાસ

(ધર્મગ્રન્થ) કી તસ્દીક કર રહા હૈ, (હે ! રસૂલ) ઉન સે કહો કી અગર તુમ અપની કિતાબ પર ચકીન રખતે હો તો ઈસ સે પહુલે અલ્લાહ કે રસૂલો કા કટલ કર્યો કિયા?

૯૨. ઓર તુમ્હારે પાસ મૂસા (અ.સ.) ચહી નિશાનિયાં લેકર આએ, લેકિન ફિર ભી તુમ ને બછડે કી પૂજા કી, તુમ હો હી જાલિમ.

૯૩. ઓર જબ હમ ને તુમ સે વાદા લિયા ઓર તુમ પર તૂર પહાડ ખડા કર દીયા (ઓર કહ દીયા) કી હમારી અતા કી હુદ્દ ચીજો કો મજબૂતી સે પકડો ઓર સુનો, તો ઉન્હોને કહા હમ ને સુના ઓર નાફરમાની કી, ઓર ઉન કે દિલો મેં બછડે કા પ્રેમ (જૈસા કિ) પિલા દિયા ગયા,^૨ ઉન કે કુદ્દ કી વજણ સે, (ઉનસે) કહ દીજુએ કી તુમ્હારા ઈમાન તુમ્હે બુરા હુકમ દે રહા હૈ, અગર તુમ ઈમાન વાલે હો.

૯૪. (આપ) કહ દીજુએ કી અગર અલ્લાહ કે પાસ આભિરત કા ઘર તુમ્હારે હી લિએ હૈ ઓર કિસી કે લિએ નહીં, તો આઓ અપની સરચાઈ કી પુષ્ટ (તસ્દીક) કે લિએ મૌત માંગો.

૯૫. લેકિન અપને અમલ કો દેખતે હુએ

1. કોધ (ગુર્સા) પર કોધ કા મતલબ હોતા હૈ, બહુત જચાદા કોધ, કચોકિ બાર-બાર વે કોધ કા કામ કરતે રહે, જૈસા કી તફસીલ સે ગુજર ચુકા હૈ ઓર અબ સિઝી હસદ કી વજણ સે કુરાન ઓર હજરત મોહમ્મદ સલ્લાહુઅલયહી વ સલ્લમકા ઈન્કાર કિયા.
2. એક તો પ્યાર ખુદ હી એસા જજબા હૈ કી ઈસાન કો અંધા ઓર બહરા બના દેતા હૈ, દૂસરે ઈસકો (પિલા દી ગઈ) સે તુલના (મુઆજના) કી ગઈ હૈ કચોકિ પાની ઈસાન કે નસ-નસ ઓર જિસ્મ કી આંતો મેં દોડતા હૈ જબકિ ખાને કા સામાન ઈસ તરફ નહીં હોતા. (ફિતહુલ કદીર)

वे कभी भी भौत नहीं मांगेंगे और अल्लाह (तआला) जालिमों को अरछी तरह जानता है।

८५. बल्कि सबसे ज्यादा दुनिया की जिन्दगी को खार करने वाला (अे नबी !) आप उन्हीं को पाओगे, ये जिन्दगी की लालच में मुशरिकों (मूर्तिपूजकों) से भी ज्यादा हैं, उन में से हर शाखा एक-एक हजार साल की उम्र चाहता है, अगरये ये उम्र दिया जाना भी उन्हें अजालों से नहीं बचा सकता, अल्लाह (तआला) उन के अमल को अरछी तरह देख रहा है।

८६. (अे नबी!) आप कह दीजिए कि जो जिन्दगी के दुश्मन हों, जिस ने आप के दिल पर अल्लाह का पैगाम उतारा है, जो पैगाम उनके पास की किताब की तसदीक करने वाला और ईमान वालों को हिंदायत और झुशबदरी देने वाला है, (तो अल्लाह भी उनका दुश्मन है)¹

८८. जो ईन्सान अल्लाह का और उसके फ़िरिश्तो और उसके रसूलों व जिन्दगी और मीकाईल का दुश्मन हो, ऐसे काफिरों (अधर्मियों) का दुश्मन खुद अल्लाह है।

८९. और बेशक हम ने आप की तरफ पाजेह निशानियां लेजु हैं, जिनको फ़ासिकों के सिवाय और कोई ईन्कार नहीं करता।

१००. ये लोग जब कभी भी वादा करते हैं तो उन का एक न एक गुट उसे तोड़ देता है, बल्कि उन में से ज्यादातर ईमान से खाली हैं।

१०१. और जब कभी उन के पास अल्लाह का कोई रसूल उनकी किताब की तसदीक (पुष्टि) करने आया, तो उन अहले किताब के एक गुट ने अल्लाह की किताब को इस तरह पीछे डाल दिया जैसे जानते नहीं थे।

१. हठीसों में है कि यहूदियों के कुछ आलिम नबी सल्लल्लाहू अलयहि व सल्लम के पास आये और कहा कि अगर आप सल्लल्लाहू अलयहि व सल्लमने उनका ठीक जवाब दे दिया तो हम ईमान ले आयेंगे, क्योंकि नबी के सिवा उनका जवाब कोई नहीं दे सकता, जब आप सल्लल्लाहू अलयहि व सल्लमने उन के सपालों का जवाब ठीक-ठीक दे दिया तो उन्होंने कहा कि आप सल्लल्लाहू अलयहि व सल्लम पर प्रकाशना (वही) कोन लाता है ? आप सल्लल्लाहू अलयहि व सल्लमने इरमाया “जिन्दगी”。 यहूदी कहने लगे कि जिन्दगी तो हमारा दुश्मन हैं, वही तो लडाई, कत्ल और अज्ञाब लेकर उतरता रहा है और इस बहाने से आप सल्लल्लाहू अलयहि व सल्लमको मानने से ईन्कार कर दिया। (ईब्ने कसीर और फ़तहुल कटीर)

૧૦૨. ઓર ઉસ કે પીછે લગ ગયે જિસે શૈતાન, (હજરત) સુલેમાન કે મુલ્ક મેં પઢે થે સુલેમાન ને તો કુફ ન કિયા થા બટિક યણ કુફ શૈતાનો કા થા, વે લોગોનો કો જાદુ સિખાતે થે, ઓર બાબિલ મેં હાડૃત ઓર માડૃત દો ફિરિશ્ટોં પર જો ઉતારા ગયા થા, વણ દોનોં ભી કિસી શખ્સ કો ઉસ વકત તક ન સિખાતે થે જ્યબ તક વે યણ ન કહું હેં કિ હમ તો એક ઈભ્રોહાન હોં, તૂ કુફ ન કર, ફિર લોગ ઉન સે વણ સીખતે જિસસે પતિ-પત્ની મેં કૂટ ડાલ હોં, હકીકત મેં વે બિના અલ્લાહ કી મર્જી કે કિસી કો કોઈ નુકસાન નાહી પહુંચા સકતે¹ વે લોગ વણ સીખતે હોં જો ઈન્હોંને ન નુકસાન પહુંચાયે ઓર ન ફાયેદા પહુંચા સકે, ઓર વણ નિશ્ચયત રૂપ સે જાનતે હોં કિ ઈસ કે લેને વાલે કા આખિરત મેં કોઈ હિસ્સા નાહી હોં, ઓર વણ બહુત હી બુરી ચીજ હોં જિસકે બદલે વે અપને આપ કો બેચ રહે હોં, અગર વે જાનતે હોંતે.

૧૦૩. ઓર અગર વે લોગ ઈમાન લાતે ઓર અલ્લાહ સે કર રખતે તો અલ્લાહ (તાબાલા) કી ઓર સે ભલાઈ મિલતી, અગર વે જાનતે હોંતે.

૧૦૪. એ ઈમાનવાતો ! તુમ (નબી (સ.અ.વ.)) કો રાઈના (હમારા દ્યાન દીજિયે ચા હમારા ઘ્યાલ કીજિયે) ન કહા કરો, બટિક ઉન્જુરના (હમારી ઓર દેખિયે) કહો² ઓર સુનતે રહા કરો ઓર કાફિરોને કે લિયે દુખદાચી અજાબ હોં.

૧૦૫. ન તો અહલે કિતાબ કે કાફિર ઓર ન મૂર્તિપૂજક ચાહતે હોં કિ તુમ પર તુમ્હારે રબ કી તરફ સે ભલાઈ ઉતરે (ઉન કે ઈસ હસદ સે કયા હુઅા?) અલ્લાહ તાબાલા જિસે ચાહે અપની રહમત ખાસ તરીકે સે અતા કર દે ઓર અલ્લાહ બડા ફજલ વાતા હોં.

૧૦૬. જિસ આયત કો હમ મંસૂખ કર દે ચા ભુલા હોં ઉસસે અરછી ચા ઉસ જેસી ઓર લાતે હોં³ કયા તૂ નાહી જાનતા કિ અલ્લાહ હર ચીજ કી કુદરત રખતા હોં.

1. વણ જાદુ ભી ઉસ સમય તક કિસી કો નુકસાન નાહી પહુંચા સકતા, જ્યબ તક અલ્લાહ કા હુકમ ઓર મર્જી ન હો, ઈસલિયે ઉસ કે સીખને કા કયા ફાયેદા હોં ? ચાહી વજણ હોં કિ ઈસ્લામ ને જાદુ સીખને ઓર કરને કો કુફ કહા હોં, હર તરફ કી ભલાઈ કી કામના ઓર નુકસાન સે બચાવ કે લિયે કેવળ અલ્લાહ તાબાલા સે હી દુઅા કી જાયે કયોકિ વહી હર ચીજ કા કરને વાતા હોં ઓર મખલૂક કા હર કામ ઉસી કી મર્જી સે હોતા હોં.
2. રોઈના કા મતલબ હોં, હમારા પિચાર કીજિયે, લેકિન ચહૂટી અપને હસદ કી વજણ સે ઈસ લફજ કો થોડા સા બિગાડ કર ઈસ્ટેમાલ કરતે થે જિસસે ઉસકા મતલબ બદલ જાતા થા, વે કહે થે રોઈના જિસકા મતલબ ‘હમારે ચરવાહે’, ચા રોઈના કા મતલબ હોં ‘મુર્ખ’ વગેરે, અલ્લાહ તાબાલા ને ફરમાયા કિ તુમ ઉન્જુરના કહા કરો.
3. નસ્ખ કે શાખિદક અર્થ (લફજ માયને) તો “નકલ” કરને કે હોં, લેકિન ધાર્મિક પરિભાષા મેં એક હુકમ કો મંસૂખ કરકે દૂસરા હુકમ ઉતારને કે હોં, યણ બદલાવ અલ્લાહ તાબાલા કી તરફ સે દુઅા હોં, જેસે આદમ (અ.સ.) કે સમય મેં સર્ગે બહન-ભાઈ મેં શાદી જાયજ થી, બાદ મેં ઈસે હરામ કર દિયા ગયા આદિ, ઈસી તરફ કુરાન મેં લી અલ્લાહ તાબાલા ને કુછ હુકમ મંસૂખ કરકે ઉનકી જગહ પર નયે કાનૂન ઉતારે હોં.

१०७. क्या तुझे मालूम नहीं कि धरती और आकाशों का मुल्क अल्लाह ही के लिए है, और अल्लाह के सिवाय तुम्हारा कोई संरक्षक (वली) और मद्दगार नहीं।

१०८. क्या तुम अपने रसूल से ऐसे सवाल करना चाहते हो जैसे ईससे पहले भूसा (अ.स.) से पूछा गया¹ (सुनो!) जो ईमान को कुक्ष से बदलता है वह सीधी राह से भटक जाता है।

१०९. इन अहले किताब के ज्यादातर लोग सच्चाई जाहिर हो जाने के बावजूद सिर्फ हसद और जलन की वजह से तुम्हें भी ईमान से हटा देना चाहते हैं। तुम भी माझ करो और छोड दो यहाँ तक कि अल्लाह अपना ईसला लागू कर दे, बेशक अल्लाह (तआला) हर काम करने की कुदरत रखता है।

११०. तुम नमाज की अदायगी करो और झकात (धर्मदान) देते रहो और जो भलाई तुम अपने लिये आगे लेजोगे सब कुछ अल्लाह के पास पा लोगे, बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे अमल को देख रहा है।

१११. और ये कहते हैं कि जन्नत में यहूदी और ईसाई के सिवाय कोई न जायेगा, ये सिर्फ उन की तमन्नायें हैं, उन से कहो कि अगर तुम सच्ये हो तो कोई सुबूत तो पेश करो।

११२. सुनो ! जिस ने अपने को अल्लाह के सपुर्द कर दिया, और नेक है उसी के लिये उस के रब के यहाँ अज्ञ हैं और न उन पर कोई कर होगा न कोई गम।

११३. यहूदी कहते हैं ईसाई सही रास्ते पर नहीं, और ईसाई कहते हैं कि यहूदी सही रास्ते पर नहीं, जबकि ये तौरात पढ़ते हैं, ईसी तरह इन ही जैसी बात जाहिल भी कहते हैं,² क्यामत के दिन अल्लाह इन के ईस ईजितेलाइ का ईसला कर देगा।

११४. और उस से बड़ा जालिम कौन है? जो अल्लाह तआला की मिर्जाई में अल्लाह का झिक करने से रोके, और उनको बर्बाद करने की कोशिश करे,³ ऐसे लोगों को डरते हुए उस में दाखिल होना चाहिए, उन के लिये दुनिया में भी झिल्लत है और आभिरत में भी बड़ी-बड़ी सज्जायें हैं।

१. भुसलभानों (सहाबा) को चेतावनी (तंबीह) दी जा रही है कि तुम यहूदियों की तरह अपने रसूल से अपनी मनमानी गैरज़री सवाल भत किया करो, ईस में कुक्ष की उम्मीद है।
२. अहले किताब के भुकाबले में अरब के मूर्तिपूजक पढ़े लिखे नहीं थे, ईसलिए उन्हें जाहिल कहा गया, लेकिन वे भी मूर्तिपूजक होने के बावजूद यहूदी और ईसाईयों की तरह ईस झुठी उम्मीदों में लिप्त (मुजितला) थे कि वही सच्चाई पर है ईसीलिए वे नबी सल्लल्लाहू अलयहि व सल्लम को अधर्भी कहते थे।
३. तबाही सिर्फ यही नहीं है कि उसे ढा दिया जाये तथा ईमारत को नुकसान पहुंचाया जाये, बर्क उन में अल्लाह की ईबादत और झिक करने से रोकना, धार्मिक नियमों की स्थापना (कायम करना) और शिर्क के प्रदर्शन (मजाहिर) से पाक करने से मना करना भी झुल्म और अल्लाह के धरों को बरबाद करना है।

૧૧૫. ઓર પૂરબ વ પશ્ચિમ કા માલિક અલ્લાહ હી હૈ, તુમ જિધર ભી મુંહ કરો ઉધર હી અલ્લાહ કા મુંહ હૈ,¹ અલ્લાહ તથાલા બહુત તાકતવાળા જાનનેવાળા હૈ.

૧૧૬. ઓર યે કહેતે હૈ કિ અલ્લાહ તથાલા કી ઓલાદ હૈ (નહીં બલ્લિક) વહ પાક હૈ, ઘરતી ઓર આકાશો કી સારી મખલૂક પર ઉસકી હુકૂમત હૈ ઓર હર એક ઉસકા ફરમાંબરદાર હૈ.

૧૧૭. વહ આકાશો ઓર ઘરતી કા ઈજાદ કરનેવાળા હૈ, ઓર વહ જિસ કામ કા ફેસલા કરતા હૈ કહ દેતા હૈ કિ હો જા, વહ હો જાતા હૈ.

૧૧૮. ઓર ઈસી તરહ અનપઢ લોગોને બી કહા કિ ખુદ અલ્લાહ તથાલા હમ સે બાતે કચો નહીં કરતા ચા હમારે પાસ કોઈ નિશાની કચો નહીં આતી, ઈસી તરહા ઐસી હી બાત ઉન કે પહલે લોગો

ને ભી કી થી, ઉન કે ઓર ઈન કે દિલ એક જેસે હો ગયે, હમ ને તો યકીન કરને વાલો કે લિએ નિશાનિયો કા બયાન કર દિયા.

૧૧૯. હમ ને આપ કો હક કે સાથ ખુશખબરી દેનેવાળા ઓર આગાહ કરાનેવાળા બનાકર ભેજા હૈ ઓર નરકવાસિયો કે બારે મેં આપ સે નહીં પૂછા જાયેગા.

૧૨૦. ઓર આપ સે યહુદી ઓર ઈસાઈ કબી ભી ખુશ ન હોગે જબતક કિ આપ ઉન કે મજહબ કા અનુકરણ (પૈરવી) ન કર લે, (આપ) કહ દીજિએ કિ અલ્લાહ કી હિદાયત હી હિદાયત હોતી હૈ,² ઓર અગર આપ ને અપને પાસ ઈલ્મ આ જાને કે બાવજૂદ ફિર ભી ઉનકી ઈચ્છાઓ કી પૈરવી કી તો અલ્લાહ કે પાસ ન તો આપ કા કોઈ વતી હોગા ન કોઈ મદદગાર.

1. હિજરત કે બાદ જબ મુસલમાન ‘બેતુલ મુક્દસ’ કી ઓર મુંહ કરકે નમાજ પઢા કરતે થે, તો મુસલમાનોનો કો ઈસકા દુખ થા, ઈસ મૌકા પર યાં આયત ઉત્તરી, કુછ કહેતે હૈ કિ યાં આયત ઉસ સમય ઉત્તરી જબ ‘બેતુલ મુક્દસ’ સે ફિર ખાને કાઅબા કી ઓર મુંહ કરને કા હુકમ હુઅા તો યહુદીયોને તરફ-તરફ કી બાતે ગઢી, કુછ કે નજદીક ઈસકે ઉત્તરને કી વજણ સફર મેં સવારી પર નફિલ નમાઝોનો કો પઢને કી ઈજાજત હુદ્દ કિ સવારી કા મુંહ કિધર ભી હો, નમાજ પઢ સકતે હો, કબી કુછ વજણ સે જમા હો જાતે હૈ ઓર ઉન સભી કે હુકમ કે લિએ એક હી આયત ઉત્તરતી હૈ, ઐસી આયતોને કે લિએ કઈ કથન (અકવાલ) જમા હોતે હૈ, કિસી કથન મેં ઉત્તરને કી એક વજણ કા બયાન હોતા હૈ ઓર કિસી મેં દૂસરા, યે આયત ભી ઈસી તરહ કી હૈ. (અહસનુલ તફાસીર)
2. જો અબ ઈસ્લામ ધર્મ કી શક્તિ મેં હૈ જિસકી દાવત નબી સલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લભ દે રહે હૈ, ન કિ બદલે હુએ ઝ્યુ મેં યહુદી ઓર ઈસાઈ ધર્મ.

१२१. जिन्हें हमने किताब दी^१ और वे उसे पढ़ने के हक के साथ पढ़ते हैं^२ वे इस किताब पर भी ईमान रखते हैं और जो इस पर ईमान नहीं रखते वह खुद अपना धाटा करते हैं।

१२२. ऐ ईस्याईल के पूत्रो ! मैंने तुम को जो नेमते दी है उन्हें चाँद करो और यह कि मैंने तुम्हें सारे जहां में इश्वरत अता कर रखी थी।

१२३. और उस दिन से डरो जिस दिन कोई ईन्सान किसी ईन्सान को कोई

शायेदा न पहुंचा सकेगा। न किसी ईन्सान से कोई बदला कुबूल किया जायेगा। न उसे कोई सिफारिश शायेदा पहुंचा सकेगी न उसकी मद्दत की जायेगी।

१२४. और जब ईश्वारीम (अ.स.) की उन के रब ने कई-कई बातों से परीक्षा ली^३, और उन्होंने सभी को पूरा कर दिखाया तो (अल्लाह ने) इरमाया कि मैं तुम्हें लोगों का ईमाम बना दुंगा, पूछा और मेरी ओलाउ को, जवाब दिया कि मेरा वादा जालिमों से नहीं।

1. अहले किताब के बुरे लोगों के बुरे अरित्र और अभलाक का जड़ी बयान करने के बाद उन में जो कुछ लोग अच्छे काम करने वाले और सच्चे थे, इस आयत में उनकी सिफ्तों और उन को ईमानवाले होने की खबर दी जा रही है, इन में अद्वृत्ताह बिन सलाम और उन जैसे और ईन्सान हैं जिनको यहूदियों में से ईस्लाम धर्म कुबूल करने की खुशनसीबी हासिल हुई।
2. “वह इस तरह पढ़ते हैं, जिस तरह पढ़ने का हक है” के कई भत्तलब बयान किये गये हैं जैसे (१) “द्यानपूर्वक पढ़ते हैं” जन्नत का बयान आता है तो जन्नत की तमज्जा करते हैं तथा जहन्नम का बयान आता है तो उससे बचे रहने की दुआ करते हैं। (२) इस के हलाल को हलाल, हराम को हराम समझते और अल्लाह के कलाम को बदला नहीं करते, जैसे दूसरे यहूदी करते थे। (३) उस में जो कुछ लिखा है लोगों को बताते हैं, उसकी कोई बात नहीं छिपाते (४) इसकी वाजेह (स्पष्ट) बातों के अनुसार अमल करते हैं, अस्पष्ट (गेर वाजेह) बातों पर ईमान रखते हैं और जो बाते समझ में नहीं आती उन्हें आलिमों से हल करवाते हैं। (५) इसकी एक-एक बात का पालन करते हैं। (इत्तहुल कटीर)
3. कलिमात से भुराउ धार्मिक हुक्म, हज के कानून, बेटे की कुर्बानी, हिजरत, नमृदृ की आग, और वह सभी ईम्तेहान हैं जिन से हजरत ईश्वारीम (अ.स.) गुजारे गये, और वह हर ईम्तेहान में कामयाब रहे जिसके नतीजे में ईन्सानों के मुजिया पद से सम्मानित (सरकार) किये गये, ईसलिए मुसलमान ही नहीं, यहूदी ईसाई यहां तक कि अरब के मूर्तिपूजकों, सब ही में उन के व्यक्तित्व का सम्मान (अहतेराम) है और उनको अगुवा माना और समझा जाता है।

१२५. और हम ने ऐतुल्लाह (कअबा) को ईन्सानों के लिए सपाब और अमन की जगह बनाया, तुम “मुकामे ईब्राहीम” (ईब्राहीम का मुकाम अस्तिज्ञ ह्राम में एक मुकर्रे जगह का नाम है जो काअबा के दरवाजे के सामने थोड़ी बाये हटकर है) को “भुसल्ला” (नमाज पढ़ने का मुकाम) मुकर्रे कर लो¹, और हम ने ईब्राहीम और ईस्माइल (अ.स.) से वादा लिया कि मेरे घर को तवाफ़ और अतिकाफ़ करने वालों और झुकुउ करने और सजदा करने वालों के लिए पाक और साफ़ रखो.

१२६. और जब ईब्राहीम ने कहा, हे मेरे रब ! तु ईस जगह को शान्तिमय (मामून) नगर बना और यहाँ के रहने वालों को जो अल्लाह और क्यामत के दिन पर ईमान रखने वाले हो, फिलों की रोज़ अता कर² अल्लाह ने कहा कि मैं काफिरों को भी थोड़ा फ़ायेदा दूँगा, फ़िर

उन्हें आग के अकाब की तरफ मजबूर कर दूँगा, यह पहुंचने की जुरी जगह है। १२७. जब ईब्राहीम (अ.स.) और ईस्माइल (अ.स.) कअबा की बुनियाद (और दीवारें) उठाते जाते थे और कहते जाते थे कि ऐ हमारे रब ! तू हम से कुबूल कर तू ही सुनने वाला और जानने वाला है।

१२८. हे हमारे रब ! हमें अपना ईरमांबरदार बना और हमारी ओलाद में से एक समूह को अपना ईरमांबरदार बना और हमें अपनी ईबादते सिखा और हमारी तोबा कुबूल कर, तू तोबा कुबूल करने वाला, रहम करने वाला है।

१२९. हे हमारे रब ! उन में, उन्हीं में से एस रसूल (ईश्यादूत) लेज³, जो उनके पास तेरी आयते पढ़े और उन्हें किताब व हिक्मत सिखायें⁴ और उन्हें पाक करें, बेशक तू गालिब और हिक्मत वाला है।

- ‘ईब्राहीम का मुकाम’ से भतलब वह पत्थर है, जिस पर खड़े होकर हजरत ईब्राहीम अल्यहिसलाम काअबा को बनाया करते थे, ईस पत्थर पर हजरत ईब्राहीम अल्यहिसलाम के पैर के निशान हैं। अब ईस पत्थर को एक शीशे में महूज़ कर दिया गया है, जिसे हर हाज़ और उम्रा करने वाला ईन्सान ऐतुल्लाह की जियारत के पक्त देख सकता है, ईस जगह पर तवाफ़ पूरा करने के बाद दो रकाअत नमाज पढ़ना सुन्नत है।
- अल्लाह तआला ने हजरत ईब्राहीम की ये दुआओं कुबूल की, यह नगर शान्त (अमन) कि नगरी भी है, और खेती न होने के बावजूद भी दुनिया के सभी फ़ल और हर तरह के अनाज की अधिकता को देख कर ईन्सान दंग हो जाता है।
- यह हजरत ईब्राहीम और ईस्माइल की आजिरी हुआ है, यह भी अल्लाह तआला ने कुबूल किया और हजरत ईस्माइल (अ.स.) की ओलाद में से हजरत मोहम्मद रसूल अल्लाह (स.अ.व.) को रसूल बनाया, ईसीलिए नबी (स.अ.व.) ने फ़रमाया ‘मैं अपने बाप हजरत ईब्राहीम (अ.स.) की हुआ, हजरत ईसा की खुशबूरी और अपनी मां का ख्याल हूँ,’ (मुसनद अहमद संसदर्भ ईज्ञे कसीर)
- किताब से भतलब कुरआन करीम और हिक्मत (पिङ्गान) से भतलब हैरीस है।

१३०. और ईश्वाहीम के धर्म (दीन) से वही मुंह भोड़ेगा जो खुद नेवकूफ हो, हम ने तो उसे दुनिया में भी अपना लिया और आधिरत में भी वह नेक लोगों में से है.

१३१. जब (भी) उन के रब ने कहा कि आत्मसमर्पण कर दो तो कहा कि मैंने सारे जहाँ के रब के लिए आत्मसमर्पण कर दिया.

१३२. इसी की वसीयत ईश्वाहीम और याकूब ने अपनी ओलाद को की, कि हमारे बरचों ! अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए ईस धर्म को निर्धारित कर दिया है, खबरदार ! तुम मुसलमान ही मरना।¹

१३३. क्या तुम (हजरत) याकूब की मौत के पक्षत हाजिर थे? जब उन्होंने अपनी ओलाद से कहा कि तुम मेरी मौत के बाद किसकी ईबादत करोगे, तो सभी ने जवाब दिया था कि आप के रब की और आप के बुजुर्ग ईश्वाहीम और

ईस्माईल और ईसहाक के माबूद की, जो एक ही है और हम उसी के ताबेदार रहेंगे.

१३४. यह उम्मत तो गुजर चुकी, जो उन्होंने किया वो उन के लिए है और तुम करोगे वह तुम्हारे लिए है, उन के अमल के बारे में तुम से नहीं पूछा जायेगा।

१३५. ये कहते हैं कि यहूदी और ईसाई बन जाओ तो हिंदायत पाओगे, तुम कहो कि सही रास्ते पर तो ईश्वाहीम (अ.स.) के पैरोकार हैं, और ईश्वाहीम (अ.स.) सिई अल्लाह के इरमाबद्दर थे वे मूर्तिपूजक नहीं थे.²

१३६. ऐ मुसलमानों ! तुम सब कहो हम अल्लाह पर ईमान लाये और उस पर भी जो हमारी तरफ उतारी गई और जो ईश्वाहीम, ईस्माईल, ईसहाक, याकूब और उनकी ओलाद पर उतारी गई और जो कुछ अल्लाह की तरफ से मुसा, ईसा और दूसरे निष्ठियों को दिये

१. हजरत ईश्वाहीम अल्यहिस्सलाम और हजरत याकूब अल्यहिस्सलाम ने सत्यधर्म की वसीयत अपनी ओलाद को कि जो यहूदी धर्म नहीं, ईस्लाम धर्म ही है. जैसा कि यहाँ भी ईसका बयान मौजूद है और कुरआन करीम में कई जगहों पर भी ईसका तक्सीली बयान है.
२. यहूदी मुसलमानों को यहूदी धर्म की और ईसाई ईसाई धर्म की दावत देते और कहते कि हिंदायत का नूर ईसी में है. अल्लाह तआला ने कहा कि उन से कहो कि हिंदायत ईश्वाहीम के धर्म की अनुकरण (पैरवी) में है, जो हनीक था (यानी सिई एक अल्लाह ही का पैरोकार और उसकी ईबादत करने वाला) वह मूर्तिपूजक नहीं था.

गओ, हम उन में से किसी के बीच फर्क नहीं करते, हम अल्लाह के ताबेदार हैं।¹

१३७. अगर वह तुम जैसा ईमान लाए तो हिंदायत पाओगे, और अगर भुंह मोडे तो खिलाफ में है, अल्लाह (तआला) उन से निकट भविष्य (मुस्तकबिल) में तुम्हारी मद्द करेगा। वह अच्छी तरह से सुनने और जानने चाहता है।

१३८. अल्लाह का रंग अपनाओ और अल्लाह (तआला) से अच्छा रंग किसका होगा?² हम तो उसी की ईबादत करने चाहते हैं।

१३९. (आप) कह दीजिए क्या तुम हम से अल्लाह के बारे में झगड़ते हो, जो हमारा और तुम्हारा रब है, हमारे लिए हमारे अमल है, तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल, हम तो उसी के लिए मुजिलस हैं।

१४०. क्या तुम कहते हो ईश्वारिम, ईस्माईल, ईसहाक और याकूब और उनकी ओलाद यहूदी या ईसाई थी? कह दो क्या तुम जयादा जानते हो या अल्लाह (तआला)? अल्लाह के पास सुभूत छुपाने वालों से जयादा जालिम और कोन है? और अल्लाह (तआला) तुम्हारे अमल से गाँड़िल नहीं।

1. यानी ईमान यह है कि सभी नवियों को अल्लाह तआला की ओर से जो कुछ भिला या उन पर उतरा, सभी पर ईमान लाया जाए, किसी भी किंताब या रसूल का इनकार न किया जाए, किसी ऐक किंताब या नवी को मानना, किसी को न मानना, यह नवियों में फर्क जाहिर करता है जिसे ईस्लाम ने ठीक नहीं कहा है, लेकिन अब अमल केवल कुरआन करीम के कानूनों और आटेशानुसार होंगे, पहले किंताबों में लिखी हुई के अनुसार नहीं, क्योंकि पहले तो वे अपने असल इप (शकल) में नहीं हैं, परिवर्तित (बदले हुए) हैं, दूसरे कुरआन ने उन सभी के हुक्मों को मंसूब कर दिया है।
2. ईसाईयों ने एक पीले रंग का पानी निर्धारित (मुकर्रे) कर रखा है, जो हर ईसाई लड़के को और हर उस इन्सान को भी दिया जाता है जिसका मक्सद ईसाई धर्म कुबूल करना होता है। ईस रिति का नाम उन के यहां “‘बेपिटज्म’” है। यह उन के यहां बहुत ज़्रूरी है ईस के लिए वे किसी के पाक होने की कल्पना (तसव्युर) नहीं करते, अल्लाह तआला ने उनका खंडन (तरटीद) किया है और कहा है कि सच्चा रंग तो अल्लाह का रंग है, उस से बड़ा कोई रंग नहीं। अल्लाह के रंग का अतलब वह प्राकृतिक धर्म है, या ईस्लाम धर्म है, जिसकी तरफ हर नवी ने अपने-अपने जमाने में अपनी-अपनी उम्मत को दावत दिया या ‘ऐकें्यवर्वाद’ (तोहीद) की दावत।

૧૪૧. યહ સમુદ્દરાય (ઉભમત) હૈ જો ગુજર ચુકા, જો ઉન્હોને કિયા ઉન કે લિએ હૈ ઓર જો તુમ ને કિયા તુમ્હારે લિયે, તુમ સે ઉન કે અમલ કે બારે મેં સવાલ નહીં કિયા જાએગા।¹

૧૪૨. કરીબ હી બેવકૂફ લોગ કહેંગે કિ જિસ કિબલા (જિસ દિશા) કી તરફ મુંહ કરકે નમાજ પઢી જતી હૈ) પર યહ થે ઉસ સે ઈન્હેં કિસ ચીજ ને ફેર દિયા ? (આપ) કહ દીજિએ કિ પૂરબ ઓર પશ્ચિમ કા માલિક અલ્લાહ (તાલા) હૈ વહ જિસે ચાહે સીધા રાસ્તા દિખાતા હૈ.²

૧૪૩. ઓર હમ ને ઈસી તરફ તુમ્હેં બીચ કી (સંતુલિત) ઉભમત બનાયા હૈ.³ તાકિ તુમ લોગો પર ગવાહ હો જાઓ ઓર રસૂલ (સ.અ.વ.) તુમ પર ગવાહ હો જાએ ઓર જિસ કિબલે પર તુમ પહુલે સે થે, ઉસે હમ ને સિઈ ઈસલિએ મુક્કર્દ કિયા થા કિ હમ જાન તે કિ રસૂલ કે

સરચે તાબેદાર કોન-કોન હૈ ઓર કોન હૈ જો અપની એકિયો કે બલ પલટ જાતા હૈ, જબકિ યહ કામ કઠિન હૈ, લેકિન જિન્હેં અલ્લાહ ને હિદાયત દી હૈ (ઉન પર કોઈ કઠિનાઈ નહીં) અલ્લાહ (તાલા) તુમ્હારા ઈમાન બર્બાદ નહીં કરેગા, અલ્લાહ (તાલા) લોગો કે સાથ પ્યાર ઓર રહમ કરને વાલા હૈ.

૧૪૪. હમ આપ કે મુંહ કો આસમાન કી તરફ, બાર-બાર ઉઠતે હુએ ટેખ રહે હૈ, અબ હમ આપ કો ઉસ કિબલે કી તરફ ફેર ટેંગે, જિસ સે આપ ખુશ હો જાયે, આપ અપના મુંહ મરણું હૃતામ (કઅબા) કી તરફ ફેર લે ઓર આપ જહાં કહી બી હોં આપ અપના મુંહ ઉસી ઓર ફેરા કરે. અહલે કિતાબ કો ઈસ બાત કે અલ્લાહ કી તરફ સે સચ હોને કા સરચા ઈલમ હૈ ઓર અલ્લાહ તાલા ઉન અમલોં સે ગાફિલ નહીં, જો યે કરતે હૈ.

1. ઈસ આયત મેં ફેર ફાયેદા ઓર અમલ કી પિશેખતા (ફળત) કા બચાન-કરકે બુજુગો ઓર મહાત્માઓં સે રિશતા યા ઉન પર ભરોસા કો બેકાર બતાયા ગયા હૈ, કયોડિ “જિસકો ઉસકા કર્મ (અમલ) પીછે છોડ ગયા, ઉસકા વંશ ઉસે આગે નહીં બઢાએગા” (સહીં મુસ્લિમ) મતલબ હૈ કિ બુજુગો કે અરછે કામ સે તુમ્હેં કોઈ ફાયેદા ઓર ઉન કે ગુનાહોં પર તુમ સે કોઈ પૂછતાછ ન હોગી, બાંકિ ઉન કે અમલ કે બારે મેં તુમ સે યા તુમ્હારે અમલ કે બારે મેં ઉન સે નહીં પૂછા જાએગા. “કોઈ કિસી કા બોડ નહીં ઉઠાએગા” (સૂર ફાતિર-૧૮) “ઇન્સાન કે લિએ વહી કુછ હૈ જિસ કે લિએ ઉસ ને કોશિશ કી” (સૂર અલ-નજીમ ૩૮)
2. યહ આયત કિબલા કે બારે મેં નાજિલ હુદ્દ.
3. વસતુન કા મતલબ હૈ, ‘મધ્ય’ (બીચ), લેકિન યહ બળાઈ ઓર ફળત કે લિએ બી ઈસ્તેમાલ હોતા હૈ, યહાં બી ઈસી મતલબ મેં ઈસ્તેમાલ હુઅા હૈ.

૧૪૫. ઓર આપ અગર અહલે કિતાબ કો સભી સુભૂત પેશ કર હો, ફિર ભી વે આપ કે કિબ્લે કા અનુકરણ (પૈરવી) નહીં કરેંગે ઓર ન આપ ઉન કે કિબ્લે કો માનને વાલે, ન યે આપસ મેં એક-દૂસરે કે કિબ્લે કો માનને વાલે હો. અગર આપ ઈસ કે બાવજૂદ કિ આપ કે પાસ ઈલ્મ આ ચુકા ફિર ભી ઉનકી ઈરણાઓ કો પૂરી કરને કે લિએ પૈરવી કરને લગે તો બેશક આપ ભી જાલિમ હો જાઓગે.¹

૧૪૬. જિન્હે હમને કિતાબ દી હૈ વે તો ઈસે એસા પહ્યાનતે હો, જેસે કોઈ અપને પુત્રો કો પહ્યાનતા હો, ઉનકા એક ગુટ સચ કો પહ્યાન કર ફિર છુપાતા હૈ.

૧૪૭. આપકે રબ કી તરફ સે યહ પૂરા સચ હો, હોશિયાર ! આપ શક કરને વાતો મેં સે ન હોનો.

૧૪૮. ઓર હર ઈન્સાન એક ન એક ઓર આફ્ઝટ (મુતવજિજ્હન) હો રહા હૈ, તુમ નેકી કી તરફ ટોડો જહાં કહી ભી તુમ રહોગે, અલ્લાહ તુમ્હેં લે આચેગા, અલ્લાહ (તાલા) કો હર ચીજ કી કુદરત હૈ.

૧૪૯. ઓર આપ જહાં સે નિકલે અપના મુંહ મસ્તિજટે હૃદામ કી તરફ કર લિયા કરે,

યહી સચ હૈ આપ કે રબ કી તરફ સે ઓર જો કુછ તુમ કર રહે હો ઉસ સે અલ્લાહ અન્જાન નહીં.

૧૫૦. ઓર જિસ જગહ સે આપ નિકલે અપના મુંહ મસ્તિજટે હૃદામ કી તરફ ફેર લે ઓર જહાં કહી તુમ રહો અપના મુંહ ઉસી તરફ કર લિયા કરો, તાકિ લોગો કી કોઈ હુજ્જત તુમ પર બાકી ન રહ જાએ, ઉનકે સિવાય જિન્હોને ઉન્મેં સે જુલ્મ કિયે હોએ, તુમ ઉન સે મત કરો,² મુજ સે હી કરો તાકિ મેં અપની નેમત તુમ પર પૂરી કર દૂં ઓર ઈસ લિએ ભી કિ તુમ હિદાયત પા સકો.

૧૫૧. જિસ તરહ હમ ને તુમ મેં તુમ્હી મેં સે રસૂલ (ઇશાદૂત-મોહમ્મદ સ.અ.વ.) કો લેજા, જો હમારી આયતે (પાક કુરાન) તુમ્હારે સામને તિલાવત કરતા હૈ ઓર તુમ્હેં પાક કરતા હૈ ઓર તુમ્હેં કિતાબ ઓર હિકમત ઓર ઉન બાતો કા જિન સે તુમ લાઈલ્મ થે ઈલ્મ દે રહા હૈ.

૧૫૨. ઈસલિએ તુમ મુજે ચાદ કરો મેં બી તુમ્હેં ચાદ કરુંગા ઓર મેરે શુકગુજાર રહો ઓર નાશુકી સે બચો.

૧૫૩. હે ઈમાનવાલો ! સબ્ર ઓર નમાજ કે જરિયે મદદ ચાહો, અલ્લાહ (તાલા) સબ્ર કરને વાતો કા સાથ દેતા હો³

1. યહ ચેતાવની (તંબીહ) પહલે ગુજર ચુકી હૈ, મકસદ ઉભાત કો હોશિયાર કરના હૈ કિ કુરાન ઓર હંડીસ કે ઈલ્મ કે બાવજૂદ અહલે બિદઅત કે પીછે લગના જુલ્મ ઓર ભટકાવ હૈ.
2. જાલિમો સે ન કરો, ચાની મૂર્તિપૂજકો કી બાતો કી ફિક ન કરો.
3. ઈન્સાન કી દો હી હાલતો હોતી હોએ, સુખ-સુધિધા (એશો-આરામ) ચા દુઃખ ઓર મુસીબત, સુખ મેં અલ્લાહ કા શુદ્ધ કરને પર જોર ઓર દુખ મેં સબ્ર ઓર અલ્લાહ સે મદદ લેને પર બલ હૈ.

१५४. और अल्लाह (तआला) की राह में शहीद होने वालों को भुट्टा न कहो,¹ वे जिन्दा हैं, लेकिन तुम नहीं समझते.

१५५. और हम किसी न किसी तरह तुम्हारा इम्तेहान ज़र लेंगे, दुश्मन के ८२ से, भुज-प्यास से, माल व जान, इलों की कमी से और उन सब करने वालों को खुशाखबरी हे दीजिए.

१५६. उन्हें जब कभी भी कोई कठिनाई आती है, तो कह दिया करते हैं कि हम तो खुद अल्लाह (तआला) के लिए हैं और हम उसी की ओर लोटने वाले हैं.

१५७. यही है जिन पर उन के रब की रहमत और नवाजिशें हैं और यही लोग सच्चे रास्ते पर हैं.

१५८. बेशक सफा (पहाड़) और मरवह (पहाड़) अल्लाह (तआला) की निशानियों में से हैं,² इसलिए अल्लाह के घर का हज और उम्रा करने वाले पर ईनका तपाइ कर लेने में भी कोई हज़ नहीं, अपनी खुशी से भलाई करने वालों

का अल्लाह सम्मान करता है और उन्हें अर्थी तरह जानने वाला है.

१५९. जो लोग हमारी उतारी हुई निशानियों और निर्देशों (हिदायत) को छुपाते हैं ईस के बावजूद कि हम उसे अपनी किताब (पाक कुरआन) में लोगों के लिए बयान कर चुके हैं उन लोगों पर अल्लाह की ओर सभी धिक्कारने वालों की धिक्कार हैं.³

१६०. लेकिन वह लोग जो तोबा कर ले और सुधार कर ले और बयान करें तो मैं उनकी तोबा कुबूल कर लेता हूँ, और मैं तोबा कुबूल करने वाला और रहम करने वाला हूँ.

१६१. बेशक जो काफिर कुक्ष की हालत में भर जाएं उन पर अल्लाह की ओर फ़िरिश्तों की ओर सभी लोगों की लानत है.

१६२. जिस में वे हमेशा रहेंगे न उन से अजाब हल्का किया जाएगा और न उन्हें ढील दी जायेगी.

1. शहीदों को मरा हुआ न कहना। उनके मान-सम्मान के लिए है, यह जिन्दगी बर्जन (आलोक-परलोक के बीच का जीवन है) जिसे हमारी अकल समझने में कासिर है, यह जिन्दगी सम्मान के अनुसार नियमों, ईमानवालों यहां तक कि काफिरों को भी हासिल है, शहीद की झुण्ड और कुछ कोल के अनुसार ईमान वालों की झुण्ड भी एक ध्येयिता की शक्ति में जहां चाहती है फ़िरती है। (ईब्ने कसीर और सूर : आले-ईमरान् १५८ देखें)
2. शआईर बहुपथन (जमा) शाईरतुन का है, जिसका मतलब निशानी के है, यहां हज के काम (जैसे अरफ़ात में झुकना, सर्द करना, (सफा-मरवह पहाड़ों के बीच मुकर्रर रास्ते का चक्कर लगाना, कंकरियां मारना, कुर्बानी देना से) मुराद है जो अल्लाह तआला ने मुकर्रर किया है।
3. अल्लाह तआला ने जो बातें अपनी किताब में उतारी हैं उन्हें छिपाना ईतना बड़ा गुनाह है कि अल्लाह की लानतों के सिवा दूसरे लानतें करने वालों के जरिये भी लानत की जाती है।

૧૯૩. ઓર તુમ સબ કા માબૂદ એક અલ્લાહ હી હૈ ઉસ કે સિવાય કોઈ સર્ચા માબૂદ નહીં, વહ બહુત ફૃપાલું ઓર બડા દયાતું હૈ.

૧૯૪. બેશક આકાશ ઓર ઘરતી કા બનાના, રાત દિન કા ફેર બદલ, નાવોં કા લોગોં કો ફાયેદા દેને વાલી ચીડોં કો લેકર સમુદ્ર મેં ચલના, આકાશ સે વર્ષા ઉત્તાર કર મુર્દી ઘરતી કો જિનદા કર દેના, ઈસ મેં હર તરણ કે જીવ કો ફેલા દેના, હવા કી દિશા પરિવર્તન (બદલના) કરના, ઓર બાદલ જો આકાશ વ ઘરતી કે બીચ મુસખાર હૈ ઈસ મેં અકલમંદો કે લિએ અલ્લાહ કી કુદરત કી નિશાની હૈ.

૧૯૫. ઓર કુછ લોગ એસે ભી હૈ જો અલ્લાહ કે સાક્ષીદાર દૂસરોં કો ઠંઠા કર ઉનસે એસા પ્રેમ રખતે હૈ જેસા પ્રેમ અલ્લાહ સે હોના ચાહિએ ઓર ઈમાનવાલે અલ્લાહ સે પ્રેમ મેં સખ્ત હોતે હૈ, કાશ કિ મૂર્તિપૂજક જાનતે જબકિ અલ્લાહ કે અજાબોં કો દેખકર (જાન-લેંગે) કિ સભી તાકાત અલ્લાહ હી કો હૈ ઓર અલ્લાહ સખ્ત અજાબ દેને વાલા હૈ. (તો કબી ભી મૂર્તિપૂજા ન કરતે)

૧૯૬. જિસ સમય મુખિયા લોગ અપને

પૈરોકારોં સે અલગ હો જાયેગે ઓર અજાબ કો અપની આંખોં સે દેખ લેંગે ઓર સભી રિશે ટૂટ જાયેગે.

૧૯૭. ઓર તાબેદાર કહને લગેંગે, કાશ હમ દુનિયાં કી તરફ દોબારા જાયે તો હમ ભી ઉન સે ઈસી તરફ અલગ હો જાઓ, જેસે યે હમ સે હૈ ઈસી તરફ અલ્લાહ તાલા ઉન્હેં ઉન કે અમલ દિખાએગા ઉનકો પદ્ધતાવે કે લિએ, યે કબી ભી જહન્નમ સે ન નિકલ પાએંગે.¹

૧૯૮. હે લોગો ! ઘરતી મેં જિતની ભી હલાલ ઓર પાક ચીડોં હૈ, ઉન્હેં ખાઓ-પિયો ઓર શૈતાન કે રાસ્તે પર ન ચલો,² વહ તુમ્હારા ખુલા દુશ્મન હૈ.

૧૯૯. વહ તુમ્હેં સિર્ફ બુરાઈ ઓર બેહયાઈ કા ઓર અલ્લાહ (તાલા) પર ઉન બાતોં કે કહને કા હુકમ દેતા હૈ જિનકા તુમ્હેં ઈલ્મ નહીં.

૨૦૦. ઓર ઉન સે જબ કબી કહા જાતા હૈ કિ અલ્લાહ (તાલા) કી ઉતારી હુદ્ય કિતાબ પર અમલ કરો તો જવાબ દેતે હોએ કિ હમ તો ઉસ રાસ્તે કા પાલન કરેંગે જિસ પર હમ ને અપને બુજુર્ગો (બાપ-દાદા) કો પાયા, જબકિ ઉન કે બુજુર્ગ બેવકૂફ ઓર ભટકે હુએ હોએ.³

૧. મુશર્િક આખિરત મેં ધર્મગુરુ ઓર ધર્મચારિયો કી મજબૂરી ઓર જ્યાનત પર અફ્સોસ કરેંગે, લેકિન ઈસ અફ્સોસ કા કોઈ ફાયેદા ન હોગા, કાશ દુનિયા મેં હી શિર્ક સે તોબા કર લે.
૨. ચાની શૈતાન કે તાબેદાર બનકર અલ્લાહ કી હલાલ કી હુદ્ય ચીડોં કો હરામ ન કહો, જિસ તરણ સે મૂર્તિપૂજકોને નિયા કિ અપની મૂર્તિયો કે નામ સે સમર્પિત (વક્ફ) જાનવરોં કો અપને લિએ હરામ કર લેતે થે, જિસકા તફ્સીલી બચાન સૂર : અલ-અનામ મેં આયેગા.
૩. આજ ભી અહલે બિદાત કો સમજાયા જાએ કિ ઈન નઈ બાતોં કી ધર્મ મેં કોઈ કિમત નહીં, તો વહ ચાહી જવાબ દેંગે કિ યે રીતિ-રિવાજ હમારે બુજુર્ગો સે ચલી આ રહી હૈ, જબકિ બુજુર્ગ ભી ઈન કે ઈલ્મ સે નાવાકિફ ઓર હિંદાયત સે મહિને હો સકતે હૈ, ઈસલિએ મજહની દલીલો કે સુભૂત કે સામને બુજુર્ગો કે હુકમ કો માનના, ઈમામો કી પેરવી (ખિના સુભૂત કે ઉનકી બાત માને જાના) પૂરી તરણ સે ભટકાવ હૈ, અલ્લાહ તાલા મુસલમાનોં કો ભટકાવ કે દલદલ સે નિકાલે.

૧૭૧. ઓર કાફિર ઉન જાનવરોં કી તરણ હૈ જો અપને ચરવાહે કી સિઝ્ઝ પુકાર ઓર આવાજ હી કો સુનતે હૈન (સમજતે નહીં) વહ બહરે ગુંગો ઓર અંધે હૈન, ઉનહેં અકલ નહીં હૈ.¹

૧૭૨. એ ઈમાનવાલો! જો (પાક) ચીજ હમ ને તુમ્હેં અતા કી હૈન, ઉનહેં ખાઓ-પિયો ઓર અલ્લાહ (તાદાલા) કે શુક્રગુજર રહો, અગર તુમ સિઝ્ઝ ઉસી કી ઈબાદત કરતે હો.²

૧૭૩. તુમ પર મુર્દા ઓર ખૂન (બહા હુઅા), સૂઅર કા ગોશત ઓર વહ હર ચીજ જિસ પર અલ્લાહ કે નામ કે સ્થિવાય દૂસરોં કે નામ પુકારે જાયે હરામ હૈ, લેકિન જો મજબૂર હો જાયે ઓર વહ સીમા ઉલ્લંઘન કરને વાલા ઓર જાલિમ ન હો, ઉસકો ઉન કો ખાને મેં કોઈ ગુનાહ નહીં, અલ્લાહ (તાદાલા) બખ્શાને વાલા

રહ્મ કરને વાલા હૈ.

૧૭૪. બેશક જો લોગ અલ્લાહ તાદાલા કી ઉતારી હુદ્ય કિતાબ છિપાતે હૈ, ઓર ઉસે થોડી-થોડી કીમત પર બેચતે હૈન, ચ્કીન કરો વે અપને પેટ મેં આગ ભર રહે હૈન, કયામત કે દિન અલ્લાહ તાદાલા ઉન સે બાત ભી નહીં કરેગા, ન ઉનહેં પાક કરેગા, ઉન કે લિએ સાખ્ત અજાબ હૈન.

૧૭૫. ચહી વહ લોગ હૈ જિનહોને ગુમરાહી કો હિદાયત કે બદલે ઓર અજાબ કો મગફિરત કે બદલે ખરીદ લિયા હૈ, વહ લોગ આગ કા અજાબ કિતાના સહન કરને વાલે હૈન.

૧૭૬. ઈન અજાબોં કી વજણ ચહી હૈ કિ અલ્લાહ તાદાલા ને સર્વી કિતાબ ઉતારી ઓર ઈસ કિતાબ મેં ઈખ્તેલાફ રખને વાલે જરૂર દૂર કે પિલેદ (ખિલાફ) મેં હૈન.

૧. ઈન કાફિરોં કી ભિસાલ, જિનહોને અપને બુઝુગો કી પૈરવી મેં અપની અકલ ઓર ઈલમ કો છોડ દિયા હૈ, ઉન જાનવરોં કી તરણ હૈ, જિનકો ચરવાહા બુલાતા ઓર પુકારતા હૈ, તો વહ જાનવર આવાજ તો સુનતે હૈન, લેકિન ચહ નહીં સમજતે કિ ઉનહેં કયોં બુલાયા ઓર પુકારા જા રહા હૈ? ઈસી તરણ ચહ તાબેદાર ભી બહરે હૈ કિ સચ કી આવાજ નહીં સુનતે, ગુંગો હૈ કિ સચ બાત મુંહ સે નહીં નિકાલતે, અંધે હૈ કિ સચ દેખ નહીં સકતે ઓર અકલ સે ખાલી હૈ કિ સચ કી દાવત ઓર એકેશ્વરવાદ (તોહીદ) ઓર સુન્નત કી દાવત કો સમજને કે લાયક નહીં હૈ, ચહાં દુઆ સે કરીબ કી આવાજ ઓર નિદાઅ સે દૂર કી આવાજ મુરાદ હૈ.
૨. ઈસ મેં ઈમાનવાલોં કો ઉન સભી ચીજોં કે ખાને કા હુકમ હૈ, જિનહેં અલ્લાહ ને હલાલ કી હૈન ઓર ઉસ પર અલ્લાહ કા શુક્રગુજર હોને કી બાત કહી ગયી હૈ, ઉસ સે તો એક બાત ચહ માત્રમ હુદ્ય કિ અલ્લાહ કી હલાલ કી હુદ્ય ચીજ હી પાક ઓર પાકીજા હૈન, હરામ કી હુદ્ય ચીજ પાક નહીં ચાહે વે મન કો કિતાની હી પસંદ કયોં ન હો (જેસે પશ્ચિમી દેશોં કો સુઅર કા ગોશત બહુત જચાદા પસંદ હૈન.)

૧૭૭. સારી અરદ્ધાઈ પૂરબ ઓર પશ્ચિમ કી તરફ મુંહ કરને મેળે હી નહીં, બરિક હંકિકત મેળે અરછાં વહુ ઈન્સાન હૈ જો અલ્લાહ (તાથાલા) પર, કયામત કે દિન પર, ફરિશતોં પર, અલ્લાહ કી કિતાબ પર ઓર નખિયોં પર ઈમાન રખને વાલા હૈ, જો માલ સે પ્રેમ કરને પર ભી રિશ્ટેદારોં, યતીમોં, ગરીબોં, મુસાફિરો ઓર બિખારિયોં કો દે, કેદિયોં કો આજાદ કરે, નમાજ કી પાંબંદી ઓર ઝકાત કો અદા કરે, જબ વાદા કરે તો ઉસ કો પૂરા કરે, માલ કી કમી, દુઃખ-દર્દ ઓર લડાઈ કે સમય સબ્ર કરે, યહી સરચે લોગ હોણે ઓર યહી પરહેજગાર (બુરાઈ સે બચને વાલે) હોણે.

૧૭૮. હે ઈમાનવાલો! તુમ પર કલ કિયે ગયે ઈન્સાન કા બદલા લેના ફર્જ કિયા ગયા હૈનું, આજાદ આજાદ કે બદલે, ગુલામ ગુલામ કે બદલે, નારી નારી કે બદલે, હીં અગર જિસ કિસી કો ઉસ કે ભાઈ કી તરફ સે માફ કર દિયા જાયે, ઉસે ભલાઈ કા સમ્માન (એહેતેરામ) કરના ચાહિએ ઓર આસાની કે સાથ દેયત (માલ જો કલ કે બદલે લિયા જાયે ફિદિયા) અદા કરના ચાહિએ,¹ તુમ્હારે રબ કી તરફ સે યહ છૂટ ઓર રહમત હો² ઉસ કે બાદ ભી જો ઉત્સંઘન (તજાવુજ) કરે, ઉસે બહુત અજાબ કા સામના કરના પડેગા.³

1. માઝી કી દો હાલતોં હોણે, એક તો બિના કોઈ માલ બદલે મેળે લિયે ચાનિ દેયત લિયે બિના હી સિર્ફ અલ્લાહ કી ખુશી કા હક્કાર બનને કે લિયે માફ કરના, દૂસરી હાલત કલ કે બજાયે દેયત કુબૂલ કર લેના, અગર યહ દૂસરી હાલત અપનાચી જાયે, તો કહા જા રહા હૈ કિ દેયત લેને વાલા ભલાઈ કા પાલન કરે, વ અદાઉન ઈલેહી બિઈહસાન મેળે કાતિલ સે કહા જા રહા હૈ કિ બિના કિસી કષ્ટ દિયે અરછી તરફ સે દેયત કો અદા કરે, કલ હુયે ઈન્સાન કે નજીદીકી રિશ્ટેદારોં ને ઉસ પર મેહરબાની કી હોણે ઉસ કે બદલે મેળે શુક્રિયા હી કે સાથ હે. હલ જ્ઞાવઉલ ઈહસાની ઈલ્લલ ઈહસાન. (અર્રહમાન)
2. યહ છૂટ ઓર મેહરબાની (ચાનિ બદલા, માઝી ચા દેયત તીનો હાલતોં) અલ્લાહ તાથાલા કી તરફ સે તુમ પર હુદ્દ હોણે, નહીં તો ઈસસે પહ્લે તૌરાત વાલોને કે લિયે બદલા ચા માઝી થી, લેકિન દેયત નહીં થી ઓર ઈન્જુલવાલોં (ઈસાઈયોં) મેળે કેવળ માઝી હી થી, બદલા થા ન દેયત. (ઇન્ઝને કસીર)
3. દેયત, (માલ જો મકતૂલ કે વારેસીન કાતિલ સે કલ કે બદલે મેળે સજાયે મોત માફ કરને કે લિયે માંગે) કુબૂલ કરને ચા લે લેને કે બાદ ભી ઉસકા કલ કર હે, તો યહ ઝુલ્ભ ઓર ઝયાદતી હોણે, જિસકી સજા ઉસકો દુનિયા ઓર આખિરત દોનો મેળે ભુગતના પડેગા.

૧૭૯. અકલમંદો! કિસાસ (પ્રતિહત્વા, હત્યાદંડ) મેં તુમ્હારે લિએ જિંદગી હૈ ઈસ વજણ સે તુમ (કલ કરને સે) રૂકોગે.¹

૧૮૦. તુમ પર ફરજ કર દિયા ગયા હૈ કિ જબ તુમ મેં સે કોઈ મરને લગે ઓર માલ છોડ જાતા હો, તો અપને મા-બાપ ઓર રિશ્તોદારોં કે લિએ અચ્છાઈ કે સાથ વસીયત કર જાયે,² પરહેજગારોં પર યાં ફરજ વાજેહ હૈ.

૧૮૧. અબ જો ઈન્સાન ઉસે સુનને કે બાદ બદલ હૈ, તો ઉસકા ગુનાહ બદલને વાલે પર હી હોગા, બેશક અલ્લાહ તથાલા સુનને વાલા ઓર જાનને વાલા હૈ.

૧૮૨. હા જો વસીયત કરને વાલે કે પક્ષપાત ઓર ગુનાહ સે ડરે ઓર અગર

વહ ઉન મેં આપસ મેં સુધાર કરા હે, તો ઉસ પર ગુનાહ નહીં, અલ્લાહ (તથાલા) માફ કરને વાલા મેહરબાન હૈ. ૧૮૩. એ ઈમાનવાલો! તુમ પર રોજે (પ્રત જો રમણાન કે મહીને મેં રખે જાતે હૈ) ફરજ કિયે ગયે, જિસ તરફ સે તુમ સે પહલે લોગોં પર ફરજ કિયે ગયે થે, તાકિ તુમ તકવા (અલ્લાહ સે ડર) કા રાસ્તા અપનાઓ.³

૧૮૪. નિનતી મેં કુછ હી દિન હૈ, લેકિન અગર તુમ મેં સે જો ઈન્સાન બીમાર હો યા સફર મેં હો, તો વહ દૂસરે દિનો મેં નિનતી પૂરી કર લે ઓર જો ઈસકી કુદરત રખતા હો ફિદ્યિયા મેં એક ગરીબ કો ખાના હૈ, ફિર જો ઈન્સાન ભલાઈ મેં બઢ જાયે વહ ઉસી કે લિએ બેહતર હૈ, લેકિન તુમ્હારે હક મેં બેહતર અમલ રોઝે (પ્રત) રખના હી હૈ અગર તુમ જાનતે હો.

1. જબ કાતિલ કો યાં ડર હોગા કિ કલ કે બદલે મેં ઉસે ભી માર ડાલા જાયેગા, તો વહ કિસી કો ભી કલ કરને કી હિંમત નહીં કરેગા ઓર જિસ સમાજ મેં કલ કે બદલે મેં યાં કાનૂન લાગુ હો જાતા હૈ, વહાં યાં યાં ડર સમાજ કો કલ ઓર ખૂન બહાને સે મહફૂજ રખતા હૈ, જિસ સે સમાજ મેં બહુત સુખ-શાન્તિ (અમનો-અમાન) રહતી હૈ, ઈસકા અપલોકન (મુશાહદા) સઉદી અરબ કે સમાજ મેં કિયા જા સકતા હૈ, જહાં ઈસ્લામી કાનૂન કે પાલન કે હી વજણ સે અલ્લાહ કી નેમત સે સુખ-શાન્તિ કા માહોલ હૈ.
2. વસીયત કરને કા યાં હુકમ પિરાસત કી આયત ઉત્તરને સે પહલે દિયા ગયા થા, અબ યાં મન્દૂખ હૈ.
3. સિયામ, સોમ (રોકા, પ્રત) કા મતલબ હૈ સુબહ સૂરજ નિકલને સે પહલે રાત કે અંધેરે કે બાદ જો સફેદ રોશની વાતાવરણ મેં હોતી હૈ, કે વકત સે લેકર સૂરજ કે ફૂલને તક ખાને-પીને બીવી સે હમબિસ્તરી કરને સે, અલ્લાહ કી ખુશી હાસિલ કરને કે લિએ રૂકે રહના, યાં ઈબાદત નફસ કી પાકી ઓર સફાઈ કે લિએ બહુત જરૂરી હૈ, ઈસલિએ ઈસે તુમ સે પહલે કી ઉમ્મતોં પર ભી ફરજ કિયા ગયા થા.

१८५. रमणान का महीना वह है, जिस में कुरआन उतारा गया,¹ जो लोगों के लिए हिदायत है और जो हिदायत और हक व बातिल के दरभियान फ़ैसलाकुन है, तो तुम में जो भी इस महीने को पाये उसे रोका रखना चाहिए, हाँ जो रोगी हो या सफर में हो, तो उसे दूसरे दिन में यह गिनती पूरी करनी चाहिए, अल्लाह (तआला) की मर्जु तुम्हारे साथ आसानी की है सज्ती की नहीं, वह चाहता है कि तुम गिनती पूरी कर लो और अल्लाह (तआला) की अता की गई हिदायत के अनुसार उसकी बदाइ बयान करो और उसके शुक्रगुजार रहो।

१८६. और जब मेरे बन्दे (भक्त) मेरे बारे में आप से सवाल करें तो कह है कि मैं बहुत ही करीब हूँ, हर पुकारने वाले की पुकार को जब कभी भी वह मुझे पुकारें मैं कुबूल करता हूँ, इसलिए लोगों को भी चाहिए कि वह मेरी बात माने और मुझ पर इमान रखे यही उनकी बलाई का कारण (बाईस) है।

१८७. रोजे की रातों में अपनी बीघियों से भिलने की तुम्हें ईजाजत है, वह तुम्हारा लिबास है और तुम उन के लिबास हो, तुम्हारी छिपी खायानत का अल्लाह को ईलम है, उस ने तुम्हारी तोबा को कुबूल कर तुम्हें माफ कर दिया, अब तुम्हें उन से हमिबिस्तरी की ओर अल्लाह (तआला) की लिखी हुई चीज को ढुँढने का हुक्म है, तुम खाते-पीते रहो, यहाँ तक की इज़ की सफेदी का घागा अंधेरे के काले घागे से वाजेह हो जायें,² किंर रात तक रोजे को पूरा करो और बीघियों से उस समय हमिबिस्तरी न करो जब ति तुम मस्तिष्ठों में अतेकाइ (एक मुकर्रा पक्त के लिए अल्लाह की ईबादत के मक्सद से अपने आप को मस्तिष्ठ तक ही महदूद कर लेना) में हो, यह अल्लाह (तआला) के हुदूद हैं, तुम ईन के करीब भी न जाओ, इसी तरह अल्लाह अपनी निशानियां लोगों पर बयान करता है, ताकि वे बचें।

१. रमणान में कुरआन उतारने का भतलब यह नहीं कि पूरा कुरआन किसी ऐक रमणान में उतारा, बल्कि यह है कि रमणान की शबे क़र्क़ (ऐहतेराम वाली रात) में लोहे महकूज़ (अल्लाह की वह किताब जिस में शुरू से आमिर तक सभी कुछ लिखा है) से दुनिया के आसमान में उतार दिया गया और वहाँ ऐतुल ईज्जत (ईज्जत वाला घर) में रख दिया गया, वहाँ से हालात के अतिबार से लगभग २३ साल तक उतरता रहा, (ईब्ने कसीर) इसलिए यह कहना कि कुरआन रमणान में या लेलतुल क़र्क़ या लेलतुल मुबारक में उतारा यह सब सच है।
२. ईस्लाम के शुरू में एक हुक्म यह था कि रोका खोल लेने के बाद ईशा (रात) की नमाज या सोने तक खाने-पीने और पत्नी से हमिबिस्तरी करने का हुक्म था, सोने के बाद ईन में से कोई काम नहीं किया जा सकता था, वाजेह है यह मना करना कठिन था और इस के हिसाब से काम करना कठिन था, अल्लाह तआला ने इस आयत में यह दोनों पाबन्दी मन्त्रभूम कर दी।

१८८. और एक-दूसरे का माल गलत तरीके से ना खाया करो, न हक्कार इन्सानों को दिश्वत पहुंचाकर किसी का कुछ माल जुल्म से हडप कर लिया करो, अगरये कि तुम जानते हो।¹

१८९. लोग आप से नये चांद के बारे में सवाल करते हैं, आप कह दीजिए कि यह लोगों (की ईबादत) के वक्त और हज के मौसम के लिए है (ऐहराम की हालत में) और घरों के पीछे से तुम्हारा

आना कोई नेक काम नहीं, बल्कि नेक काम वह है जो अल्लाह से डरता हो, घरों में उन के दरवाजे से आया करो,² और अल्लाह से डरते रहा करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ.

१९०. और लड़ो अल्लाह की राह में उन से जो तुमसे लड़ते हैं और जुल्म न करो³ अल्लाह (तआला) जालिम को पसंद नहीं करता है।

1. यह ऐसे इन्सान के बारे में है जिसके पास किसी का हक हो और मालिक के पास कोई सुभूत न हो, जिसका फायेदा उठाकर वह इन्सान अदालत या हक्कार से अपने हक में फैसला करा ले, इस तरह दूसरे का हक ले ले, यह जुल्म और हराम है, अदालत का फैसला जुल्म और हराम को जायेज नहीं कर सकता, यह जालिम अल्लाह तआला के सामने मुजरिम होगा। (इन्हें कसीर)
2. अन्सार जाहिलियत के दोर में जब हज्ज या उम्रः का ऐहराम (हज और उम्रः के लिए एक खास हालत जिस में मर्द एक लुंगी और एक ओढ़ने की चादर जो धार्मिक नियमानुसार लपेटी जाये, बांधता है) बांध लेते और फिर उसके बाद किसी चीज़ की ज़रूरत पड़ती, तो अपने घरों में मुख्य दरवाजे से न दाखिल होते, बल्कि पीछे की दीवार लांघ कर दाखिल होते, इसको वह सवाब समझते, अल्लाह तआला ने कहा कि यह सवाब नहीं है।
(ऐसउ ताफ़सीर)
3. इस आयत में पहली बार उन लोगों से लड़ने का हुक्म दिया गया है, जो हमेशा मुसलमानों के कत्ल करने के ख्याल में रहते थे, फिर भी ज्यादती से रोका गया है, जिसका भतलब यह है कि कुचलो नहीं, औरतों, बच्चों, बूढ़ों को जिनका ज़ंग में योगदान न हो कत्ल भत करो, पेंड वगैरह को जला देना, जानपरों को बिला वजह मार डालना भी ज्यादती है, इन से बचा जाये।
(इन्हें कसीर)

૧૮૧. ઓર ઉન્હે મારો જહાં ભી પાઓ ઓર ઉન્હે નિકાલો જહાં સે ઉન્હોને તુમ્હેનિકાલા હૈ ઓર (સુનો) કિંતના (લડાઈ, ઝગડા, ફસાદ) કલ્ત સે જ્યાદા બુરા હૈ¹ ઓર મસ્તિજટે હુરમત કે પાસ ઉન સે લડાઈ ન કરો, જબ તક કિ વે ખુદ તુમ સે ન લડો, અગર વે તુમ સે લડો, તો તુમ ભી ઉન્હે મારો,² કાફિરો કા બદલા ચહી હૈ.

૧૮૨. અગર વે રૂક જાયો, તો અલ્લાહ (તાલાલા) બહુત બખ્શાને વાલા રહું કરને વાલા હૈ.

૧૮૩. ઓર ઉન સે લડો, જબ તક કિ કિંતના ન મિટ જાયે, ઓર અલ્લાહ (તાલાલા) કા દીન રહ જાએ, અગર વહ રૂક જાયો (તો તુમ ભી રૂક જાઓ) ઝુલ્મ તો કેવળ ઝાલિમો પર હૈ.

૧૮૪. હુરમત વાલે મહીને કે બદલે હુરમત વાલે મહીને હૈ ઓર હુરમતો અદલે-બદલે કી હૈ, જે તુમ પર જુલ્મ કરે તુમ ભી ઉસ પર ઉસ તરણ કા જુલ્મ કરો જો તુમ પર કિયા હૈ ઓર અલ્લાહ તાલાલા સે કરતે રહા કરો ઓર જાન રખો કિ અલ્લાહ (તાલાલા) પરહેજગારો કે સાથ હૈ.

૧૮૫. ઓર અલ્લાહ કી રાહ મેં ખર્ચ કરો ઓર અપને હાથો કષ્ટ મેં ન પડો, ભલાઈ કરો અલ્લાહ ભલાઈ કરને વાલો સે પ્રેમ કરતા હૈ.

૧૮૬. ઓર હજ વ ઉમરે કો અલ્લાહ તાલાલા કે તિંએ પૂરા કરો,³ ઓર અગર તુમ રોક દિયે જાઓ, તો જો ભી કુર્બાની કા જાનવર હો ઉસે કુર્બાન કર ડાલો,⁴

1. મજહબ ઈસ્લામ કે શુરૂઆતી દોર મેં મક્કા શહર મેં ચૂંકિ મુસલમાન કમજોર ઓર બિખરે હુએ થે, ઈસલિએ કાફિરોસે લડના મના થા, જબ મુસલમાન મક્કા શહર સે હિજરત કરકે મદીને આયે તો મુસલમાન કી સારી તાકત જમા હો ગયી, ફિર ઉનકો જિહાદ કરને કા હુકમ અતા કિયા ગયા, શુરૂ મેં આપ કેવળ ઉન્હી સે લડતે જો મુસલમાનોનો સે લડતે, લેકિન ઈસ કે બાદ ઈસકો ઓર બઢાયા ગયા ઓર મુસલમાનોને જરૂરત કે એતબાર સે કાફિરોસે ઈલાકે મેં ભી જાકર જિહાદ કિયા.
2. હરમ કે હુદ્દું મેં લડના મના હૈ, લેકિન અગર કાફિર ઈસકી રિઆયત ન કરે ઓર તુમ સે લડો તો તુમ્હેની ઉન સે લડને કા હુકમ હૈ.
3. ચાની, હજજ ચા ઉમરે કા “એહરામ” બાંધ લો, તો ઉસકો પૂરા કરના જરૂરી હૈ, ચાહે નફલી હજજ વ ઉમરઃ હી હો. (અસરું તાફાસીર)
4. અગર રાસ્તે મેં દુશ્મન ચા ભયંકર બીમારી કી વજહ સે રૂકાપટ આ જાયે, તો એક જાનવર (હદી) બકરી, ગાય ચા ઉટ જો ભી હો, વહી કુર્બાની ટેકર સિર મુંડા લો ઓર એહરામ ખોલ દો, જિસ તરણ નબી સલ્લાલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમ ઓર આપ કે સહાબા ને હુદ્દેબિયા કી જગહ પર કુર્બાનિયોસી બલિ દી થી, હુદ્દેબિયા કા મુકામ “હરમ” કે હુદ્દું સે બાહર હૈ. (ફતહુલ કદીર) ઓર અગલે સાલ ઉસકી કજા દો જેસે નબી સલ્લાલ્લાહુ અલયહિ વ સલ્લમને ક હિજરી વાલે ઉમરે કી કજા (બદલા) જ હિજરી મેં દી.

ઓર અપને સિર ન મુંડવાઓ જબ તક કિ કુર્ભાની કુર્ભાનગાહ તક ન પહુંચ જાયે, ઓર તુમ મેં સે જો બીમાર હો યા ઉસકે સિર મેં કોઈ દંડ હો જિસકી વજ્હ સે વહ સિર મુંડવા લે તો ઉસ પર ફિટિયા હૈ કિ ચાહે તો રોજા રખ લે, યા ચાહે તો સદકા દે, યા કુર્ભાની કરે¹ લેકિન જેસે હી શાન્તિ કી હાલત હો જાયે, તો જો ઉમરે સે લેકર હજ તક તમતુઅ (લાભાનિવત)

કરે, બસ ઉસે જો ભી કુર્ભાની મોજૂદ હો ઉસે કર ડાલે, જિસમે તાકત ન હો વહ તીન રોઝે તો હજ કે દિનોં મેં રખ લે ઓર સાત વાપસી મેં ચહ પૂરે દસ હો ગયે,² ચહ હુકમ ઉન કે લિએ હૈ જો મરિજદે હરામ (મક્કા) કે રહને વાલે ન હો³ (લોગો)! અલ્લાહ સે ડરતે રહો ઓર જાન લો કિ અલ્લાહ (તઆલા) સખ્ત સજાયે દેને વાલા હૈ.

1. યાની (અર્થાત) ઉસકો કોઈ ઐસા રોગ હો જાયે કિ ઉસકો સિર મુંડવાના પડ જાયે, તો ઉસકા ફિટિયા (પ્રતિશોધ) જરૂરી હૈ. હદીસ કે અનુસાર ઐસે ઈન્સાન કો ચાહિએ કિ વહ ક ભૂખે લોગોં કો ભોજન કરાયે યા એક બકરી કી બલિ (કુર્ભાની) દે યા તીન રોઝ (પ્રત) રખે.
2. હજ તીન તરહ સે કિયા જા સકતા હૈ, જિન કે તીન નામ હૈન. (૧) ઈફરાદ - સિર્ફ હજજ કે ઈરાટે સે એહરામ બાંધના, (૨) કિરાન હજજ ઓર ઉમરા: દોનો કા ઈરાદા એક સાથ કરકે એહરામ બાંધના, ઈન દોનો હાલતો મેં હજજ કે સભી અરકાન પૂરા કિયે બિના અહરામ ખોલના જાયજ (ઉચ્ચિત) નહીં હૈ. (૩) હજજ-એ-તમતુઅ - ઈસ મેં ભી હજજ ઓર ઉમરા: દોનો કા ઈરાદા હોતા હૈ, લેકિન પહલે કેવળ ઉમરા: કા ઈરાદા કરકે એહરામ બાંધા જાતા હૈ, ઓર ફિર ઉમરા: કરકે એહરામ ખોલ દિયા જાતા હૈ ઓર ફિર ક જિલહિજજા કો હી હજજ કે લિએ મક્કા હી સે દોબારા એહરામ બાંધા જાતા હૈ, તમતુઅ કા મતલબ હૈ, ફાયેદા ઉઠાના, યા એહરામ ઉતારકર ઉમરા: ઓર હજજ કે બીચ ફાયેદા ઉઠા લિયા જાતા હૈ, હજજ-કિરાન ઓર હજજ-તમતુઅ દોનો મેં હી એક હદી (એક જાનવર કી કુર્ભાની) દેની હૈ. ઈસ આયત મેં ઈસી હજજ તમતુઅ કે હુકમ કા બચાન હૈ, તમતુઅ કરને વાલા તાકત કે એતબાર સે ૧૦ જિલહિજજા કો એક જાનવર કી કુર્ભાની દે, અગર કુર્ભાની દેને કી તાકત ન હો, તો તીન રોઝે હજજ કે દિનોં મેં ઓર સાત ઘર જાકર પૂરા કરે, હજજ કે દિન, જિન મેં રોઝે રખને હૈ ક જિલહિજજા (અરફાત કા દિન) સે પહલે યા તશરીક કે દિન હૈન. (ફિતહુલ કદીર)
3. યા તમતુઅ ઓર ઉસકે કારણ હદી યા રોઝે સિર્ફ ઉન લોગોં કે લિએ હૈ જો મક્કાવાસી ન હોનો.

૧૮૭. હજ કે મહીને મુકર્રર હૈ,^૧ ઈસલીએ જો દિન મેં હજ વાજિબ કરે વહ અપની બીવી સે જિમાઅ કરને, ગુનાહ કરને ઓર લડાઈ-જગડા કરને સે બચતા રહે, તુમ જો સવાબ કા કામ કરોગે ઉસે અલ્લાહ (તાલા) જાનને વાલા હૈ, ઓર અપને સાથ રાસ્તા કા ખર્ચ લે લિયા કરો, સબ સે બેહતર રાસ્તા ખર્ચ તો અલ્લાહ કા કર હૈ ઓર એ અકલમંદો! મુજ સે કરતે રહા કરો.

૧૮૮. તુમ પર અપને રબ કા ફજલ હુંઢ ને મેં કોઈ ગુનાહ નહીં,^૨ જબ તુમ અરફાત સે લોટો તો મશારે હરામ (મુજદલિફા) કે કરીબ અલ્લાહ કા ડિક કરો ઓર ઉસ કે ડિક કા બચાન ઉસ તરણ કરો, જેસે કિ ઉસ ને તુમ્હેં નિર્દેશ દિયે હૈ, હાલાકિ તુમ ઉસ સે પહલે ગુમરાહો મેં થે.

૧૮૯. ફિર તુમ ઉસ જગહ સે લોટો જિસ

જગહ સે સભી લોગ લોટતે હૈ ઓર અલ્લાહ (તાલા) સે ઈસ્તેગફાર કરતે રહો, બેશક અલ્લાહ (તાલા) બખ્શને વાલા, રહમ કરને વાલા હૈ.

૨૦૦. ફિર જબ તુમ હજ કે હર કામ પૂરે કર લો, તો અલ્લાહ (તાલા) કો યાદ કરો, જિસ તરણ સે તુમ અપને બુજુર્ગો કો યાદ કરતે થે, બલ્લિક ઉસસે જચાદા^૩ કુછ લોગ વહ ભી હૈ જો કહેતે હૈ “હમારે રબ ! હમેં ઈસ દુનિયા મેં હે હે, એસે લોગો કા આખિરત મેં કોઈ હિસ્સા નહીં હૈ.”

૨૦૧. ઓર કુછ લોગ વહ ભી હૈ, જો કહેતે હૈ, “એ હમારે પાલનહાર ! હમેં ઈસ દુનિયા મેં ભલાઈ અતા કર ઓર આખિરત મેં ભી ભલાઈ અતા કર ઓર હમેં જહનનમ કે અજાબ સે બચા હે.”

૨૦૨. યે વહ લોગ હૈ જિન કે તિસે ઉન કે અમલો કા હિસ્સા હૈ ઓર અલ્લાહ (તાલા) જલ્દ હી હિસાબ લેને વાલા હૈ.

1. ઓર યહ હૈશ શવ્યાલ, જીકાદ, ઓર જિલહજજ કે દસ દિન, મતલબ યહ હૈ કિ ઉમરઃ તો સાલ કે દિનોં મેં ભી હો સકતા હૈ, લેકિન હજજ તો કુછ મુકર્રર દિનોં મેં હી હોતા હૈ, ઈસલિએ ઉસકા એહરામ હજજ કે મહીનો કે સિવાચ બાંધના જાયજ નહીં. (ઇઝ્ને કસીર)
2. ફજલ કા મતલબ તિજારત ઓર કામ હૈ યાની હજજ કા સફર કરતે વકત તિજારત કરને મેં કોઈ રૂકાવટ નહીં.
3. અરબ કે લોગ હજજ કે બાદ મિના કે મુકામ પર મેલા લગાતે ઓર અપને-અપને બુજુર્ગો કી તારીફે કરતે, મુસલમાનોનો સે કહા જા રહા હૈ કિ જબ ૧૦ જિલહિજજા કો કંકરિયાં મારકર, કુર્બાની ટેકર, સિર મુંડવાકર, કાઅબા કા તવાફ કરકે ઓર સફા ઓર મરવા કે બીચ સઅઈ કરકે છુટકારા પાઓ તો ઉસકે બાદ તીન દિન મિના મેં રૂકના હૈ, ઓર વહાં, અલ્લાહ કો બહુત ચાદ કરો, જેસે કિ જાહિલિયત કે દૌર મેં તુમ અપને બુજુર્ગો કી ચર્ચા કરતે થે.

२०३. और अल्लाह (तआला) की याद उन गिनती के कुछ दिनों (तशरीक के दिन) में करो,^१ दो दिन की जल्दी करने वाले पर कोई गुनाह नहीं, और जो पीछे

रह जाये उस पर भी कोई गुनाह नहीं^२ यह परहेजगार (महान ईन्सान के लिये है, और अल्लाह (तआला) से डरते रहो, और जान रखो, कि तुम सब उसी की ओर जमा किये जाओगे।

२०४. और कुछ लोगों की दुनियावी बातें आप को खुश कर देती हैं और वह अपने दिल की बातों पर अल्लाह को गवाह करता हैं, हालांकि हकीकत में वह बड़ा झगड़ालू हैं।

२०५. और जब वह लौटकर जाता है, तो

जमीन में इसाद फैलाने, जेती और नसल की बर्बादी की कोशिश में लगा रहता है और अल्लाह (तआला) इसाद को पसंद नहीं करता है।

२०६. और जब उस से कहा जाता है कि अल्लाह से डर, तो घमंड उसे गुनाह पर उक्सा देता है, ऐसे के लिये सिर्फ जहन्नम ही हैं, और बेशक वह बहुत बुरी जगह हैं।

२०७. और कुछ लोग वह भी हैं जो कि अल्लाह (तआला) की मर्ज छासिल करने के लिये अपनी जान तक बेच डालते हैं^३ और अल्लाह (तआला) अपने बन्दों पर बड़ी शक्ति करने वाला हैं।

१. मतलब तशरीक के दिन हैं, यानी ११, १२ और १३ जिलहिज्जा, इन दिनों में अल्लाह तआला के ट्रिक से मतलब यह है कि उच्ची आवाज के साथ सुन्नत के ऐतबार से मुकर्रर तक्बीर कहे, केवल इर्ज नमाजों के बाद ही नहीं (जैसा कि एक अस्पष्ट हृदीस के आधार पर मशहूर हैं), बर्तक हर वक्त यह तक्बीर पढ़ी जाये (अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर ला ईलाह ईल्लाह, वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर वलिल्लाहिलहूद) जमरात को कंकरियां मारते वक्त हर कंकरी के साथ तक्बीर पढ़नी सुन्नत के अनुरूप (मुताबिक) है।
२. जमरात को कंकरियां मारना, तीन दिन बेहतर है, लेकिन अगर कोई दो दिन के बाद भिना से वापस आ जाये तो उसका भी हुक्म है।
३. यह आयत, कहते हैं कि हजरत सुहैब उमी के लिये उत्तरी है, जब वह हिजरत करने लगे, तो काफिरों ने कहा कि यह भाल तो यहां का कमाया हुआ है, इसे हम साथ नहीं ले जाने देंगे, हजरत सुहैब उमी ने यह सारा भाल उन के हवाले कर दिया और धर्म साथ लेकर नभी सल्ललाहु अलयहि व सल्लमकी खिदमत में हाजिर हो गये, आप ने सुनकर कहा “सुहैब ने फायेदेमंद तिजारत किया हैं。” दो बार कहा। (फतहुल कटीर)

૨૦૮. એ ઈમાનવાલો ! ઈસ્લામ મેં પૂરે તોર પર દાખિલ હો ઓર શૈતાન કે પદ ચિન્હોં કી પૈરવી ન કરો,^૧ વહ તુમ્હારા ખુલા દુશ્મન હૈ.

૨૦૯. અગર તુમ નિશાનિયોં કે આ જાને કે બાવજૂદ ભી ફિસલ જાઓ, તો જાન લો કિ અલ્લાહ (તાલા) જબરદસ્ત ઓર હિકમત વાલા હૈ.

૨૧૦. કયા લોગોં કો ઈસ બાત કા ઈન્તજાર હૈ કિ અલ્લાહ (તાલા) ખુદ બાદળો કે ઝુર્મુટ મેં આ જાયે, ઓર ફરિશ્તે ભી, ઓર કામ કા અન્ત કર દિયા જાયે, અલ્લાહ હી કી તરફ સભી કામ લોટાયે જાતે હૈ.

૨૧૧. ઈસ્થાઈલ કી ઓલાદ સે પૂછો કિ હમ ને ઉન્હેં કિતની વાજેં નિશાનિયોં અતા કી^૨ ઓર જો અલ્લાહ (તાલા) કી નેમત અપને પાસ પહુંચ જાને કે બાવજૂદ બદલ ડાલે (વહ જાન લે) કિ અલ્લાહ (તાલા) ભી કઠિન સજાઓ કા દેને વાલા હૈ.

૨૧૨. કાફિરોં કે લિએ દુનિયાવી જિન્દગી મુજબ્યન કર દી ગઈ હૈ, ઓર વહ ઈમાનવાલોં સે હંસી મજાક કરતે હૈ^૩ મગર જો પરહેજગાર હૈને કયામત કે દિન ઉનસે બહુત બડે હોંગે, અલ્લાહ (તાલા) જિસે ચાહતા હૈ બેશુમાર અતા કરતા હૈ.

૨૧૩. હકીકત મેં લોગ એક હી ઉમ્મત થે, ફિર અલ્લાહ (તાલા) ને નબિયોં કો ખુશાખબરી દેને ઓર આગાહ કરને કો બેજા ઓર ઉન કે સાથ કિતાબ ઉતારી, તાકિ લોગોં કે હર ઈજિતલાઇ કા ફેસલા હો જાયે, ઓર કેવલ ઉન્હી લોગોં ને જો ઉસે દિયે ગયે થે અપને પાસ દલીલ આ જાને કે બાવજૂદ આપસી હસદ ઓર ઘમંડકી વજહ સે ઉસ મેં ઈજિતલાઇ કિયા, ઈસલિએ અલ્લાહ (તાલા) ને ઈમાનવાલોં કે ઈસ ઈજિતલાઇ મેં ભી સર્ચાઈ કી તરફ અપની ઈજાજત કે જરિયે હિદાયત કી ઓર અલ્લાહ જિસકો ચાહે સીધે રાસ્તે કી તરફ રહનુમાઈ કરતા હૈ.

1. ઈમાનવાલોં કો કહા જા રહા હૈ કિ પૂરી તરફ સે ઈસ્લામ મેં દાખિલ હો જાઓ, ઈસ તરફ ન કરો કિ જો બાતે તુમ્હારે અપને ફાયેદા ઓર મન કે મુતાબિક હૈને તો ઉન્હેં અપના લો, બાકી કો છોડ દો, ઈસી તરફ જો બાતે તુમ છોડ આયે હો ઉસે દીન ઈસ્લામ મેં મિલાવટ કરને કી કોશિશ ન કરો, બલ્ક સિઝી દીન ઈસ્લામ કે કાનૂન કો પૂરી તરફ સે અપનાઓ.
2. મિસાલ કે તોર પર મૂસા કી છઠી, જિસ કે જરિયે હમ ને જાદૂગરોં કે જાદૂ કો તોડા, સમુદ્ર મેં રાસ્તા બનાયા, પત્થર સે બારહ ચશ્મે નિકાલે, બાદળો કા સાચા, મન્ન વ સલવા કા ઉત્તરના ઓર જો અલ્લાહ તાલા કી તાકત ઓર હમારે પૈગમ્બરો કી સર્ચાઈ કે સુભૂત થે, લેકિન ઉસ કે બાદ ભી ઉન્હોને અલ્લાહ તાલા કે હુકમ કી નાફરમાની કી.
3. ચૂંકિ મુસલમાનોં કી અકસરિયત ગરીબોં પર આધારિત (મુશ્તમિલ) થી, જો દુનિયાવી દૌલત ઓર આરામ સે મુકત થે, ઈસલિએ કાફિર ચાનિ મક્કા કે કુરૈશ ઉનકા મજાક ઉડાતે થે, જેસાકિ ધનવાનોં કા હર જમાને મેં ચહી અમલ રહા હૈ.

૨૧૪. કયા તુમ યહ પિચાર (ખ્યાલ) કર બેઠે હો કિ જગ્નત મેં ચલે જાઓગે ? અગરએ અબ તક તુમ પર વહ હાલત નહીં આયી જો તુમ સે અગલો પર આયી¹ ઉન્હેં ગરીબી ઓર બીમારી પહુંચી, ઓર વહ યાં તક ડિક્કોડે ગયે કિ રસૂલ ઓર ઉન કે સાથ કે ઈમાન વાલે લોગ કહને લગે કિ અલ્લાહ કી મદદ કબ આયેગી ? સુન રખો કિ અલ્લાહ કી મદદ કરીબ હી હૈ.

૨૧૫. આપ સે પૂછતે હૈ કિ વહ કયા ખર્ચ કરે, આપ કહ દીજિએ કિ જો માલ તુમ ખર્ચ કરો વહ માં-બાપ કે લિએ, રિશ્ટેદારોં, યતીમો વ ગરીબો ઓર મુસાફિરો કે લિએ હૈ ઓર તુમ જો કુછ ભલાઈ કરોગે અલ્લાહ (તાબાલા) કો ઉસ કા ઈલ્મ હૈ.

૨૧૬. તુમ પર જિહાદ ફર્જ કિયા ગયા,

અગરએ કિ વહ તુમ્હારે લિએ કઠિન માલૂમ હોતા હો, હો સકતા હૈ કિ તુમ કિસી ચીજ કો બુરી જાનો ઓર હકીકત મેં વહી તુમ્હારે લિએ ભલી હો, ઓર યહ બી હો સકતા હૈ કિ તુમ જિસ ચીજ કો અચ્છી સમજો ઓર વહ તુમ્હારે લિએ બુરી હો, સરચા ઈલ્મ અલ્લાહ હી કો હૈ, તુમ સિર્ફ અંજાન હો.

૨૧૭. લોગ આપ સે હુરમત વાલે મહીનો મેં જંગ કે બારે મેં સવાલ કરતે હૈ, આપ કહ દીજિએ ઉન મેં જંગ કરના બહુત બડા ગુનાહ હૈ, લેકિન અલ્લાહ કે રાસ્તે સે રોકના, ઉન કે સાથ કુઝ કરના, મરિજાટે હરામ સે રોકના ઓર વહાં કે રહને વાલો કો વહાં સે નિકાલના અલ્લાહ કે કરીબ ઉસ સે ભી બડા ગુનાહ હૈ ઓર ફિનના કટલ સે ભી બડા ગુનાહ હૈ,² યહ લોગ તુમ સે લડાઈ-જગડા કરતે

1. મદીના કી ઓર હિજરત (મકાન સે મદીના મજફલે ઈસ્લામ કુલૂલ કરને કી વજણ સે જો હિજરત હુદ્દ હૈ) કે બાદ જબ મુસલમાનોનો કો યાહૂદીઓ, મુનાફિકોનો ઓર અરબ કે મૂર્તિપૂજકોનો કે ઝરિયે કદ્ય તરણ કે કષ્ટ ઓર કઠિનાઈયાં પંહુચને કે બાદ કુછ મુસલમાનોનો ને નબી (સ.અ.વ.) સે શિકાયત કી જિસ પર મુસલમાનોનો કો અલ્લાહ તાબાલા ને યહ આયત ઉતારકર તસલ્લી હી ઓર ખુદ નબી (સ.અ.વ.) ને ફરમાયા તુમ સે પહલે લોગોનો કો ઉન કે સિર સે લેકર પૈર તક આરે સે ચીરા ગયા ઓર લોહે કી કંધી કે ઢ્રારા ઉનકા ગોશેત ખુર્ચા ગયા, લેકિન યહ જુલ્મ ઓર તકલીફે ભી ઉનકો અપને દીન સે નહીં ફિરા સકી, ફિર ફરમાયા “અલ્લાહ કી કસમ ! અલ્લાહ તાબાલા ઈસ માભલે કો પૂરા (યાની ઈસ્લામ કો ફલ) કરેગા” યહાં તક કિ એક સવાર સન્ના સે (યમન કી રાજ્યાની હૈ) હજર મૂત તક અકેલા સફર કરેગા ઓર ઉસે અલ્લાહ કે સિવાય કિસી કા કર ન હોગા.
2. રજબ, જુલકાદા, જિલહિજજા ઓર મોહર્રમ, યહ ચાર મહીને જાહિતિયત મેં ભી હુરમત વાલે મહીને માને જાતે થે, જિન મેં કટલ ઓર જંગ કરના અરછા નહીં સમજા જાતા થા, ઈસ્લામ ને ભી ઈન કે એહેતેરામ કો ઉસી તરણ રખા.

ही रहेंगे यहां तक कि अगर उन से हो सके तो तुम्हें तुम्हारे धर्म से फेर दें¹ और तुम में से जो लोग अपने धर्म से पलट जाये और उसी कुक्ष की हालत में भरे, उन के आमाल दुनिया और आभिरत के सभी बर्बाद हो गये, यह लोग जहननमी होंगे और हमेशा जहननम में ही रहेंगे.²

२१८. हां जिन्होंने ईमान कुबूल किया और हिजरत की ओर अल्लाह की राह में जिहाद किया (दीन की हिजाजत के लिए अल्लाह की राह में लड़े) वही अल्लाह की रहमत की उम्मीद रखते हैं और अल्लाह (तआला) बड़ा बधाने पाला रहम करने पाला है.

२१९. लोग आप से शराब और जुआ के बारे में सवाल करते हैं, आप कह दीजिए इन दोनों में बड़ा गुनाह है, और लोगों को इस से दुनियावी झायें।

भी होता है, लेकिन उनका गुनाह उन के झायें से कहीं ज्यादा है, आप से यह भी पूछते हैं कि क्या खर्च करें, आप कह दीजिए ज़रूरत से ज्यादा को, अल्लाह (तआला) इसी तरह अपना हुक्म वाजेह तोर से तुम्हारे लिए बयान कर रहा है कि तुम सोच समझ सको।

२२०. दुनियावी और आभिरत के अमलों को, और आप से यतीमों के बारे में भी सवाल करते हैं.³ आप कह दीजिए कि उन की भलाई करना ही अर्था है, तुम अगर अपने माल उनके माल में भिला भी लो तो वह तुम्हारे भाई है, बदूनियत और नेक नियत सब को अल्लाह पूरी तरह से जानता है, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हे कठिनाई में डाल देता, बेशक अल्लाह (तआला) जबरदस्त और हिक्मत पाला है।

१. जब यह अपनी चालों और सांकेतिकों और तुम्हें मुर्तद (ईस्लाम धर्म से छिरने पाला) बनाने की कोशिश से ढकने पाले नहीं, तो फिर तुम उन से सामना करने में हुरमत पाले महीने की वजह से क्यों ढके रहे ?
२. जो ईस्लाम धर्म से पलट जाये यानी मुर्तद हो जाये (यहि वह माझी न मांगे) तो उसकी दुनियावी सजा कत्ल है, हीस में है “मम बदूनल दीनहु इकतुलुह.” (सही॒ बुखारी, हीस ३०१७, किताबुल जिहाद) इस आयत में उसके आभिरत की सजा का बयान है।
३. जब यतीमों के माल जुल्म करके खाने वालों के लिए सभता सज्जा का हुक्म आया, तो सहाबा दर गये और यतीमों की हर चीज अलग कर दी, यहां तक कि खाना-पीना अलग कर दिया, अगर उन के खाने-पीने की चीज बच जाती, तो उसको ईस्तेमाल में न लाते, जिससे वह चीज खराब हो जाती, इस दर से कि कहीं इस सज्जा के हकदार न बना दिये जायें, इस पर यह आयत उतरी। (इन्हें कसीर)

२१. और मुशारिक ओरतों से उस पक्त तक शादी न करो जब तक कि वह ईमान न ले आये¹ ईमानवाली लौटी (दासी) भी मुशारिक (बहुटेववादी) आँखां औरत से बेहतर हैं, अगरये कि तुम्हें मुशारिक ही अच्छी लगती हो, और न मुशारिक मर्दों को अपनी ओरतों से पिवाह करने दो, जब तक की वह ईमान न ले आये, ईमानदार गुलाम (मुसलमान दास) आँखां मुशारिक (से ज्यादा अच्छा है, अगरये कि तुम्हें मुशारिक अच्छा लगे, ये लोग जहननम की तरफ बुलाते हैं और अल्लाह जन्नत की तरफ और मगाफिरत की तरफ अपने हुक्म से बुलाता है, वह अपनी निशानियां लोगों के लिए बयान कर रहा है, ताकि नसीहत हासिल करें।

२२. और आप से माहवारी के बारे में सवाल करते हैं, कह दीजिए वह गंदगी

है, माहवारी के वक्त ओरतों से अलग रहो² और जब तक वह पाक न हो जाये उनके करीब न जाओ, हां जब वह पाक हो जाये, तो उन के पास जाओ, जहां से अल्लाह ने तुम्हें ईजाजत दी है। अल्लाह माझी मांगने वाले को और पाक रहने वाले को पसंद करता है।

२३. तुम्हारी बीघियां तुम्हारी जेतियां हैं, अपनी जेतियों में जिस तरह चाहो आओ और अपने लिए (सवाब) आगे भेजो, और अल्लाह (तआला) से करते रहो, और जान रखो, कि तुम उस से मिलने वाले हो और ईमानवालों को खुशबूझी सुना दीजिए।

२४. और अल्लाह (तआला) को अपनी कसमों का (इस तरह) निशाना न बनाओ कि भलाई और परहेझगारी और लोगों के बीच सुधार करने को छोड देठो³ और अल्लाह (तआला) सुनने वाला जानने वाला है।

1. मुशारिक ओरतों से भुराउ भूर्तिपूजक या मुशारिक ओरते हैं, कियोंकि किताब वालों (यहूदी और ईसाई) ओरतों से शादी करने का हुक्म कुरआन ने दिया है, लेकिन किसी मुसलमान ओरत की शादी अहले किताब मर्दों से नहीं हो सकती, फिर भी हजरत उमर (रज़ि.) ने मसलहतन यहूदी ईसाई ओरतों से शादी करना अच्छा नहीं समझा है। (ईब्ने कसीर)
2. अपनी ज्यानी पर पहुंचने पर हर ओरत को जो माहवारी का खून आता है, उसे हैङ कहते हैं और कई बार अप्राकृतिक रूप (गैर झितरी) से बीमारी की वजह से जो खून आता है, उसे ईस्टेहाङ्गा कहते हैं, जिसका हुक्म व कानून हैङ से मुख्तलिफ़ है, हैङ के दिनों में ओरत को नमाज माफ़ है, और रोका रखने से रोका गया है, लेकिन उन के बदले दूसरे दिनों में रखना फर्ज़ है, मर्दों के लिए सिर्फ़ ईमाअ से रोका गया है।
3. यानी गुरुस्सा में ऐसी कसम भत उठाओ कि मैं इलां ईन्सान के उपर भलाई नहीं करूँगा, इलां ईन्सान से नहीं बोलूँगा, इलां ईन्सान के बीच सुलह नहीं कराउँगा, ईस तरह की कसमों के बारे में हीसे शरीर में आया है कि अगर ईस तरह की कसम खा भी लो तो उसे तोड़ दो, और कसम का कक्षार (कसम खाने के बाद अगर तोड़ दी जाये, तो उसकी सजा) अदा करो।
(कसम के कक्षारे के लिए देखिए सूरः अल मायेद, आयत ८८)

૨૮. અલ્લાહ તાથાલા તુમ્હેં તુમ્હારી ઉન કસમો પર ન પકડેગા જો મજબુત ન હો.^૧ હાં તુમ્હારી પકડ ઉસ ચીજ પર હૈ, જો તુમ્હારે દિલો કા અમલ હૈ, અલ્લાહ (તાથાલા) માફ કરને વાલા સહનશીલ હૈ.

૨૯. જો લોગ અપની બીધિયો (પટિનિયો) સે (ન ભિલને કી) કસમ ખાયે ઉન કે લિએ ચાર મહીને કી મુદ્દત હૈ.^૨ ફિર અગર વહ લોટ આયે, તો અલ્લાહ (તાથાલા) બખ્શાને વાલા રહું કરને વાલા હૈ.

૩૦. ઓર અગર તલાક કા હી દરાદ કર લે તો અલ્લાહ (તાથાલા) બહુત સુનને

વાલા જાનને વાલા હૈ.

૩૧. તલાક શુદા ઓરતો અપને આપ કો તીન માહવારી તક રોકે રહે^૩ ઉન કે લિયે જાયજ નહી કિ અલ્લાહ ને ઉન કે રિછમ મેં જો પૈદા કિયા હો ઉસે છિપાયે, અગર ઉન્હેં અલ્લાહ (તાથાલા) પર ઓર કયામત કે દિન પર દ્વારા હો, ઉનકે શોહર કો દીસ મુદ્દત મેં ઉન્હેં લોટા લેને કા પૂરા હક હૈ, અગર ઉનકા દરાદ સુધાર કા હો^૪ ઓરતો કે ભી યેસે હી હક હૈ, જેસે ઉન પર મર્દો કે હોં હેં અરણાઈ કે સાથ^૫ હાં મર્દો કી ઓરતો પર ફરીલત હૈ, ઓર અલ્લાહ (તાથાલા) જબરદસ્ત હિકમત વાલા હૈ.

૧. યાની જો બિના સોચે સમજે ઓર આદત કે તોર પર હો, લેકિન જાન બૂજકર કસમ ખાના બહુત બડા ગુનાહ હૈ.
૨. દીલા કા મતલબ કસમ ખાને કે હૈ અગર કોઈ શોહર કસમ ખા લે કિ મેં અપની બીવી કે સાથ એક માહ યા દો માહ (મિસાલ કે તોર પર) સમ્બન્ધ નહી રહ્યુંગા, ફિર કસમ કી મુદ્દત પૂરી કરકે કોઈ સમ્બન્ધ સ્થાપિત (કાચમ) કરતા હૈ, તો કોઈ સજા નહીં હૈ, ઓર અગર ફિર કસમ કી મુદ્દત પૂરી હોને કે પહુલે સમ્બન્ધ સ્થાપિત કર લે તો કસમ તોડને કા કક્ષારા અદા કરના હોગા.

અગર ચાર માહ કી મુદ્દત સે જ્યાદા યા બિના મુદ્દત કે કસમ ખાચી ગયી હૈ, તો ઉન કે લિએ દીસ આયત મેં મુદ્દત મુકર્રર કર દી ગયી હૈ કિ વહ ચાર માહ બાદ અગર ચાહે તો સમ્બન્ધ સ્થાપિત કર લે યા ઉન્હેં તલાક દે હૈ (ઉસે ચાર માહ સે જ્યાદા લટકાયે રહુને કા હુકમ નહીં હૈ) પહુલી હાલત મેં ઉસે કસમ તોડને કી સજા ભુગતાના પડેગા ઓર અગર દોનો મેં સે કોઈ હાલત નહીં અપનાયેગા, તો અદાલત ઉસકો દોનો મેં સે કિસી એક કો અપનાને પર મજબૂર કરેગા કિ વહ ઉસ સે સમ્બન્ધ સ્થાપિત કર લે યા તલાક દે હૈ તાકિ ઉસ સ્ત્રી પર જુલ્બ ન હો. (તફસીર દિલ્બને કસીર)

૩. દીસ સે મુરાદ વહ તલાક શુદા ઓરતો હૈ જો ગર્ભવતી (હામલા) ભી ન હો (કયોડિક હામલા ઓરત કે લિએ પ્રસવ કી મુદ્દત મુકર્રર હૈ) જિસે જિમાઅ સે પહુલે હી તલાક હો ગયી હો વહ ભી ન હો (કયોડિક ઉસકી કોઈ દિદાર નહીં હૈ) બૂઢી ભી ન હો જિસકો માહવારી આના બંદ હો ગયા હો (કયોડિક ઉસકી દિદાર તીન માહ હૈ)
૪. લોટાને સે શોહર કા મકસદ અગર પરેશાન કરના ન હો, તો શોહર કો દિદત કે અન્દર લોટને કા પૂરા હક હૈ, બીવી કે વલી કો દીસ મેં રૂકાવટ ડાલને કા કોઈ હક નહીં હૈ.
૫. યાની દોનો કે હક એક-દૂસરે સે મિલતે જુલતે હૈ, જિનકો પૂરા કરને કે દોનો ધાર્મિક નિયમો સે પ્રતિબન્ધિત હૈ, લેકિન મર્દ કો ઓરત પર ફરીલત પ્રાફૃતિક શક્તિ (ફિતરી તાકત) મેં, જિહાદ (ધર્મયુદ્ધ) કે હુકમ મેં, જાયદાદ કે બંટવારે મેં ઓરત સે દુગના મર્દ કો તલાક ઓર લોટાને કે હક (વગેરણ) મેં હાસિલ હૈ.

૨૨૮. યે તલાક દો બાર હૈ^૧ ફિર ચા તો અરણાઈ સે રોકના^૨ ચા જાયજ તરીકે સે છોડ દેના હૈ^૩ ઓર તુમહે ઉચિત નહી કિ તુમ ને ઉનહે જો દિયા હૈ, ઉસ મેં સે કુછ ભી લો, હાં ! યહ ઓર બાત હૈ કિ દોનોં કો અલ્લાહ કે હુદ્દું કાયમ ન રખને કા કર હો, ઈસલિએ ચાંટ તુમહે કર હો કિ યહ દોનોં અલ્લાહ કે હુદ્દું કાયમ ન રખ સકેંગે, તો સ્ત્રી આજાદી હાસિલ કરને કે લિએ કુછ દે ડાલો, ઈસ મેં દોનો પર કોઈ ગુનાહ નહી^૪ યહ અલ્લાહ કે હુદ્દું હૈ, હોશિયાર ઈન સે આગે ન બઢના ઓર

જો લોગ અલ્લાહ કે હુદ્દું કો તજાઉજ કર જાયે, વહ જાલિમ હૈ.

૨૩૦. ફિર ચાંટ ઉસકો (તીસરી બાર) તલાક દે દે, તો અબ વહ ઉસ કે લિએ હલાલ નહી જબ તક કિ વહ સ્ત્રી ઉસ કે સિવાય દૂસરે સે પિવાહ ન કરે, ફિર અગર વહ તલાક દે દે, તો ઉન દોનોં કો મેલજોલ કર લેને મેં કોઈ ગુનાહ નહી^૫ જબકિ વે જાન લે કિ અલ્લાહ કે હુદ્દું કો કાયમ રખ સકેંગે, યહ અલ્લાહ (તાલા) કે હુદ્દું હૈ, જિનહે વહ જાનને વાલે કે લિએ બચાન કર રહા હૈ.

1. ચાની વહ તલાક જિસ મેં શોહર કો રજૂઆ કા હક હૈ, વહ દો બાર હૈ, પહુલી બાર તલાક કે બાદ ભી ઓર દૂસરી બાર તલાક કે બાદ ભી શોહર અપની બીવી સે સમ્બન્ધ ફિર સે કાયમ કર સકતા હૈ, તીસરી બાર તલાક દેને કે બાદ યહ સમ્બન્ધ સ્થાપિત કરને કા હક નહી.
2. ચાની સમ્બન્ધ કાયમ કરકે ઉસે અરછી તરહ સે બસાના.
3. ચાનિ તીસરી બાર તલાક દેકર.
4. ઈસ મેં “ખુલાસ” કા બચાન હૈ, જિસ કે અનુસાર બીવી અપને શોહર સે રિશતા તોડના ચાહે તો ઉસ હાલત મેં શોહર કો હક હૈ કિ વહ અપના મહર વાપસ લે લે, પતિ અગર રિશતા તોડના ન કુબૂલ કરે, તો અદાલત શોહર કો તલાક દેને કા હુકમ કરેગી, અગર વહ ઉસે ન માને તો અદાલત શાદી ખત્મ કરેગી, ચાનિ યહ ખુલાસ, તલાક કે જરિયે ભી હો સકતા હૈ ઓર તોડને કે જરિયે ભી દોનો હાલતોમે ઈંદિત એક માહવારી હૈ.
5. ઈસ તલાક સે મુરાદ તીસરી તલાક હૈ ઓર ઈસકે બાદ શોહર કો ન તો સમ્બન્ધ સ્થાપિત કરને કા હક હૈ ઓર ન શાદી કરને કા, અબ યહ ઓરત કિસી દૂસરે મર્દ સે શાદી કરે ઓર વહ અપની મર્જી સે તલાક દે ચા ઉસકી મૌત હો જાયે, તો ઉસકે બાદ વહ અપને પહલે શોહર સે શાદી કર સકતી હૈ, લેકિન હમારે દેશ મેં જો ઈસ પ્રકાર કા “હલાલા” કરને ઓર કરાને કી બુરી રથમ હૈ, નબી (સ.અ.વ.) ને એસે “હલાલા” કરને ઓર કરાને વાલે પર લાનત કી હૈ, હલાલા કી વજહ સે કી ગઈ શાદી, શાદી નહી હોતી યહ ઝિના હૈ, ઈસ શાદી સે ઓરત અપને શોહર કે લિએ હલાલ નહી હોગી.

૨૩૧. ઓર જબ તુમ ઓરતો કો તલાક દો ઓર વહ અપની ઈંદિત (તીન માહવારી કી મુદ્દત કો કહ્યેં) ખત્મ કરને કે કરીબ હોં, તો અબ ઉન્હેં અરછી તરહ સે બસાઓ ચા ભલાઈ કે સાથ અલગ કર દો, ઓર ઉન્હેં નુકસાન પહુંચાને કે મકસદ સે જુલ્મ વ જ્યાદ્યતી કરને કે લિએ ન રોકો, જો ઈન્સાન એસા કરે ઉસ ને અપની જાન પર જુલ્મ કિયા, તુમ અલ્લાહ કે હુકમ કા મજાક ન બનાઓ¹ ઓર અલ્લાહ કી નેમત જો તુમ પર હૈ યાદ કરો ઓર જો કુછ કિતાબ વ હિકમત ઉસ ને ઉતારી હૈ, જિસ સે તુમહેં તાલીમ દે રહા હૈ ઉસે ભી, ઓર અલ્લાહ (તાલા) સે કરતે રહા કરો ઓર યાદ રખો કી અલ્લાહ (તાલા) હર એક ચીજ કો જાનતા હૈ.

૨૩૨. ઓર જબ તુમ અપની ઓરતો કો તલાક દો ઓર વહ અપની ઈંદિત પૂરી કર લે, તો ઉન્હેં ઉન્કે પતિયો સે શાદી કરને સે ન રોકો, જબકિ વહ આપસ મેં ભલાઈ કે એતબાર સે રાજુ હોં, યહ તાલીમ ઉન્હેં દી જાતી હૈ જિન્હેં તુમ મેં સે અલ્લાહ (તાલા) પર ઓર કયામત કે દિન પર

યકીન ઓર ઈમાન હો, ઈસ મેં તુમ્હારી અરછી સફાઈ ઓર પાકીજગી હૈ ઓર અલ્લાહ (તાલા) જાનતા હૈ તુમ નહીં જાનતે.

૨૩૩. ઓર માંયે અપની ઓલાદો કો પૂરે દો સાલ દૂધ પિલાયે, જિનકા ઈરાદા દૂધ પિલાને કી પૂરી મુદ્દત કા હો,² ઓર જિનકી ઓલાદ હેં ઉન્કા જિભમેદારી હૈ કી ઉન્કો રોટી કપડા હૈ, જો ભલાઈ કે સાથ હો, હર એક ઈન્સાન કો ઈતની હી કઠિનાઈ દી જાતી હૈ, જિતની ઉસકી તાકત હો, માં કો ઉસકી ઓલાદ કી વજ્હ સે ચા બાપ કો ઉસકી ઓલાદ કી વજ્હ સે ઉસે કોઈ નુકસાન ન પહુંચાયા જાયે,³ વારિસ પર ભી ઉસી જેસી જિભમેદારી હૈ, ફિર અગર દોનો (ચાની મા-બાપ) અપની રજામંદી ઓર આપસી ઈરાદા સે દૂધ છુડાના ચાહેં, તો દોનો પર કોઈ ગુનાહ નહીં, ઓર અગર તુમ અપની ઓલાદો કો દૂધ પિલાના ચાહતે હો તો ભી તુમ પર કોઈ ગુનાહ નહીં, જબકિ તુમ ઉન કે દુનિયાવી દસ્તૂર કે એતબાર સે ઉન કો હે દો, અલ્લાહ તાલા સે કરતે રહો ઓર જાનતે રહો કી અલ્લાહ તુમ્હારે અમલો કો દેખ રહા હૈ.

- કુછ લોગ મજાક મેં તલાક હે ટેટે ચા શાદી કર લેતે ચા આજાદ કર ટેટે, ફિર કહ્યે કી મેને તો મજાક કિયા થા, અલ્લાહ તાલા ને ઈસે અપની આચયત મેં મજાક કહા હૈ જિસકા મકસદ ઈસ તરહ કે કાંઓ સે રોકના હૈ, ઈસલિએ નબી (સ.અ.વ.) ને ફરમાયા કી મજાક સે ભી અગર ઉપર બચાન કિયા ગયા કામ કરેગા તો વહ હુકીકત માના જાયેગા ઓર મજાક કી તલાક, શાદી ઓર આજાદી લાગૂ હો જાયેગી. (તફસીર ઈબ્ને કસીર)
- ઈસ આચયત મેં દૂધ પિલાને કે મસસે કા હલ બચાન કિયા ગયા હૈ, ઈસમે પહલી બાત કહી ગયી હૈ વહ ચહ હૈ કી જો પૂરી મુદ્દત તક દૂધ પિલાના ચાહે, તો ચહ મુદ્દત દો સાલ કી હૈ, ઈન લફજોને ઈસ સે કમ મુદ્દત તક દૂધ પિલાને કી ગુંજાઈશ નિકલતી હૈ, દૂસરી બાત ચહ કી દૂધ પિલાને કી જ્યાદા સે જ્યાદા મુદ્દત દો સાલ હૈ.
- માં કો તકલીફ પહુંચાને કા મતલબ ચહ હૈ કી જેસે માં અપને બચ્યે કો અપને પાસ રખના ચાહે લેકિન મમતા કો હુકરાકર ઉસકા બચ્યા ઉસ સે જબરદસ્તી છીન લિયા જાયે ચા ચહ કી જિના ખર્ચ કી જિભમેદારી લિએ ઉસકો દૂધ પિલાને પર મજબૂર કિયા જાયે, બાપ કો તકલીફ પહુંચાને કા મતલબ ચહ હૈ કી માં દૂધ પિલાને સે ઈન્કાર કર દે ચા ઉસકી તાકત સે જ્યાદા ઉસ સે ઘન કી માંગ કરે.

२३४. तुम में से जो लोग मर जायें और बीधियां छोड़ जायें, वह औरतें अपने आप को चार महीने और दस (दिन) ईदूत में रखें।¹ फिर जब मुद्दत खत्म कर लें तो जो अच्छाई के साथ अपने लिए करे उस में तुम पर कोई गुनाह नहीं, और अल्लाह (तआला) तुम्हारे हर अभ्यास को जानने वाला है।

२३५. और तुम पर ईस में कोई गुनाह नहीं कि तुम ईशारा से या अस्पष्ट रूप से इन औरतों से शादी के बारे में कहो या अपने दिल में ईरादा छिपाओ, अल्लाह (तआला) को ईत्तम है कि तुम ज़्यादा उनको याद करोगे, लेकिन तुम उनसे छिपाकर वादा न कर लो, हाँ, यह बात और है कि तुम अच्छी बात बोला करो और जब तक ईदूत की मुद्दत पूरी नहीं हो शादी का बन्धन भज्बूत न करो, जान लो, कि अल्लाह (तआला) को तुम्हारे दिलों की बातों का भी ईत्तम है, तुम उस से डरते रहा करो और यह भी जान रखो, कि अल्लाह (तआला) बज्जने वाला और सहनशील है।

२३६. अगर तुम औरतों को बिना हाथ लगाये और बिना भर भुकर्दर किये तलाक है दो तो भी तुम पर कोई गुनाह नहीं, हाँ उन्हें कुछ न कुछ फायेदा दो, मालदार अपने हिसाब और गरीब अपनी ताकत के हिसाब से दस्तूर के हिसाब से अच्छा फायदा है, भलाई करने वालों के लिए यह ज़रूरी है।²

२३७. और अगर तुम औरतों को ईस से पहले तलाक है दो कि तुम ने उन्हें हाथ लगाया हो और तुम ने उनका भर भुकर्दर किया हो, तो भुकर्दर भर का आधा (भर) है दो, यह बात और है कि यह खुद माझ कर है, या यह ईन्सान माझ कर है जिसके हाथ में निकाह की गांठ है, तुम्हारा माझ कर है देना तक्षण से बहुत करीब है और आपसी फ़़र्रीलत को न भुलो बेशक अल्लाह (तआला) तुम्हारे अभ्यासों को देख रहा है।

२३८. नमाज़ों की हिकाजत करो खासकर बीच वाली नमाज़ की³ और अल्लाह (तआला) के लिए नम्रतापूर्वक (बाअदब) खड़े रहा करो।

1. भोत की यह ईदूत हर बीवी के लिए है शोहर ने उस से जिमाअ किया हो या न किया हो, गर्भवती (हामला) के लिए यह कानून नहीं क्योंकि उसकी ईदूत प्रसव हो जाना है।
2. यह उस औरत के बारे में हुक्म है कि शादी के पक्त महर (स्त्री धन) भुकर्दर नहीं की गयी थी और शोहर हमिबिस्तरी करने के पहले तलाक भी है, तो उसे कुछ न कुछ फायेदा देकर पिंडा करो, यह फायेदा (तलाक का फायेदा) भर्द की ताकत के हिसाब से होना चाहिए या मालदार अपने हिसाब और गरीब अपनी ताकत भर है।
3. बीच वाली नमाज से मुराद अस नमाज है, जिसको ईस हट्टीस रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के आधार पर भुकर्दर कर दिया गया है, जो ज़ंगे खन्दक के दिन अस की नमाज को सलाते पुस्ता कहा है।

२३६. अगर तुम्हें कर हो तो पैदल ही या सवार ही सहीह, और अगर शान्ति हो जाये तो अल्लाह (तआला) की बड़ाई को बयान करो जिस तरह कि उस ने तुम्हें उस बात की तात्त्विकी दी है, जिसे तुम नहीं जानते थे।¹

२४०. और जो तुम्हें से मर जाये और जीवियां छोड़ जाये, वह वसीयत कर जाये कि उनकी जीवियां साल भर फ़ायेदा उठायें,² उन्हें कोई न निकाले, और अगर वे खुद निकल जायें तो तुम पर इस में कोई गुनाह नहीं जो वह अपने लिए अरण्याई से करें अल्लाह (तआला) जबरदस्त और हिक्मत वाला है.

२४१. और तलाक दी हुई औरतों को अरण्यी तरह फ़ायेदा पहुंचाना परहेजगारों पर ज़रूरी है.

२४२. इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों (आटेशों) को बयान करता है ताकि तुम समझो.

२४३. क्या तुम ने उन्हें नहीं देखा जो हजारों की तादाद में मौत की वजह से अपने घरों से निकल पड़े अल्लाह ने उन से कहा कि मर जाओ फ़िर उन्हें जिन्दा कर दिया³ बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा फ़जल वाला है मगर ज़्यादा लोग शुक्रिया अदा नहीं करते.

२४४. और अल्लाह की राह में लड़ो और यह जान लो कि अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है.

२४५. कौन अल्लाह को अरण्या उदार हैगा⁴ जिसे वह फ़िर उसे कई गुना ज़्यादा अता करेगा और अल्लाह ही कभी और ज़्यादती करता है और तुम उसी की ओर दोबारा जाओगे.

1. यानी दुश्मन से कर की वजह से जिस तरह भी मुमकिन हो, पैदल चलते हुए, सवारी पर ऐसे हुए नमाझ पढ़ लो, लेकिन जब कर की हालत खत्म हो जाये तो उसी तरह नमाझ पढ़ो, जिस तरह सिखलाया गया है.
2. यह आयत अगरये तरतीब में बाद की है लेकिन मन्दसूख है, इसकी मन्दसूखी की आयत पहले आ चुकी है जिस में मौत की ईदृत चार महीना दस दिन बताई गई है, इस के सिवाय विरासत की आयत ने बीवी का हिस्सा मुकर्रर कर दिया है, अब शोहर को बीवी के लिए वसीयत (उल्तरदान) करने की कोई ज़रूरत नहीं रही न घर और न खर्च की.
3. यहां हादसा किसी पिछली उम्मत का है, जिसकी तक्षील किसी हीस में नहीं भिनती.
4. अरण्ये उदार से मुराद अल्लाह की राह में और जिहाद में माल सदका करना है यानी जान की तरह माल देने में भी संकोच न करो, माल में बढ़ोत्तरी और कभी भी अल्लाह के हाथ में है और वह दोनों तरह से तुम्हारा ईम्तेहान लेता है, कभी माल में बढ़ोत्तरी करके और कभी माल में कभी करके, फ़िर अल्लाह की राह में खर्च करने से कभी भी नहीं होती है, अल्लाह तआला इसमें कई कई गुना बढ़ोत्तरी करता है, कभी जाहिरी तोर से कभी इधरे तोर से और झूठानी तोर पर और आभिरत में तो ज़रूर उस में अधिकता आश्चर्यचकित होगी.

२४६. क्या आप ने ईस्राईल के वंश की “मुसा” के बाद की जमाअत को नहीं देखा जब उन्होंने अपने नवी (ईशांदूत) से कहा कि हमारा एक राजा बना दीजिये ताकि हम अल्लाह की राह में लड़ उन्होंने कहा कि हो सकता है कि जिहाद इर्ज हो जाने के बाद, तुम जिहाद न करो, उन्होंने कहा कि भला हम अल्लाह की राह में जिहाद कर्यों न करेंगे ? हम तो अपने धरों से उजाड़े गये हैं और ओलादों से दूर कर दिये गये हैं, फिर जब उन पर जिहाद इर्ज हुआ, तो सिवाय थोड़े से ईन्सानों के सब फिर गये और अल्लाह जालिमों को अच्छी तरह से जानता है.

२४७. और उन से उन के नवी ने कहा कि अल्लाह (तआला) ने तालूत (यह एक नाम है) को तुम्हारा बादशाह बना दिया है, तो कहने लगे भला उसका हम पर राज्य कैसे हो सकता है, उस से

बहुत अधिक राज्य के हकदार हम हैं, उसको तो धन की ज्यादती भी नहीं अता की गई है, उस (नवी) ने कहा सुनो ! अल्लाह (तआला) ने उस को तुम पर इत्तिलत दी है और उसे ईत्तम और जिस्मानी ताकतभी ज्यादा अता किया है¹ हकीकत बात यह है कि अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपना मुल्क है, अल्लाह (तआला) कुशादगी वाला और ईत्तम वाला है.

२४८. और उन के नवी ने फिर उन से कहा, उस के मुल्क की वाजेह निशानी यह है कि तुम्हारे पास वह सन्दूक आ जायेगा² जिस में तुम्हारे रब की तरफ से दिल के सुर्कून का सामान है और मूसा की ओलाद और हातून की ओलाद का बाकी छोड़ा हुआ सामान है, इरिश्ते उसे उठाकर लायेगे, बेशक यह तो तुम्हारे लिए वाजेह (स्पष्ट) निशानी है, अगर तुम ईमानदार हो.

१. हजरत तालूत उस वंश से नहीं थे, जिससे ईस्राईल की ओलादों के बादशाहों का सिलसिला चला आ रहा था, यह गरीब और एक आम सेनानी थे, जिस पर उन्होंने आपाज उठायी थी, पैगम्बर ने कहा कि यह मेरा चुनाव नहीं है, अल्लाह ने उन्हें तेनात किया है, फिर भी नेतृत्व (कियाउत) के लिए भाल से ज्यादा अकल, ईत्तम और जिस्मानी ताकत की ज़रूत है, और तालूत ईस में तुम सभी से अच्छे हैं, ईसलिए अल्लाह ने उन्हें ईस पद के लिए चुन लिया है.
२. सन्दूक यानी ताबूत, जो तोब से है, जिसके भतलब पलटने के हैं, क्योंकि ईस्राईल की ओलाद प्रसाद (तबर्झक) के लिए ईसकी ओर पलटते थे, (इतहुल कट्टीर) ईस ताबूत में हजरत मूसा व हातून (अ.स.) की पाक चीजें थीं, यह ताबूत भी उन के दुश्मन उन से छीन कर ले गये थे, यह ताबूत अल्लाह तआला ने निशानी के शक्ति में इरिश्तों के ज़रिये हजरत तालूत के घर के दरवाजे पर रखवा दिया, ईसे देखकर ईस्राईल की ओलादें खुश भी हुईं और ईसे अल्लाह तआला की तरफ से निशानी मानकर

४८. फिर जब तालूत सेना लेकर निकले तो कहा सुनो एक नदी¹ के ज़रिये अल्लाह को तुम्हारा ईमितेहान लेना है तो जो उस से पानी पियेगा वह भेरा नहीं और जो उस में से न चर्खे वह भेरा है, यह और बात है कि अपने हाथ से एक चुल्लु भर ले तो कुछ के सिवाय बाकी सभी ने पानी पी लिया, (हजरत) तालूत जब नदी से पार हो

गये और जो उन के साथे ईमानदार थे तो उन्होंने कहा कि आज तो हम में ताकत नहीं कि जालूत और उसकी झोजों से लड़² लेकिन जिन्हे अल्लाह से मिलने पर यकीन था उन्होंने कहा कि बहुत सी छोटी जमाअत अल्लाह के हुक्म से भारी जमाअतों पर इत्ह हासिल कर लेती है और अल्लाह सभ्र करने वालों के साथ है.

तालूत को अपना राजा मान लिया और अल्लाह तआला ने भी इसे उन के लिए एक चमत्कार (आयत) पर इत्ह और सभ्र की वजह बना दिया सकीना का मतलब ही अल्लाह तआला की तरफ से खास मद्दद का उतारना जिसे वह अपने खास बन्दों पर उतारता है जिसकी वजह से भयानक ज़ंग में जब बड़े-बड़े बहादूरों के दिल काप जाते हैं तो ईमानवालों के दिल दुश्मन के कर और धाक से खाती और इत्ह प कामयाबी की उम्मीद से भरे होते हैं, इस से मालूम हुआ कि नवियों की अपशोष (बाकिआत) अल्लाह के हुक्म से ज़रूर इक्तीलत और उपयोगिता (अहमियत) रखती है, लेकिन यह ज़रूरी है कि वह सही तरीके से उनकी (तबर्कत) हो, जिस तरह इस तालूत में हकीकत में हजरत मूसा और हाइन की पाक चीजें थीं, लेकिन जिस तरह आजकल कई जगहों पर मुकद्दस बाकियात कहकर कई चीजें हैं, जिनका कोई ऐतिहासिक (तारीखी) सुबूत पूरी तरह से साबित नहीं होता, इसी तरह खुद बनायी गयी चीजों से भी कुछ हासिल नहीं हो सकता, जिस तरह से कुछ लोग ननी (स.अ.व.) के जूते के समान बनाकर अपने पास रखने को या घरों में लटकाने को या खास तरीके से बनाकर तकलीफ दूर करने और इत्ति मुराद पूरी करने वाला समझते हैं, इसी तरह कभीं पर वलियों के नामों के चढ़ावे को पाक चीज और वहाँ के सामान्य बोज को पाक चीज समझते हैं, जबकि यह अल्लाह के सिवाय दूसरों पर चढ़ावा है, जो शिर्क की परीदी में आता है, इसको खाना खासकर हराम है, कभी को गुस्से कराया जाता है और उसका पानी पाक समझा जाता है, हालाकि कभीं को गुस्से कराना खानये करबा के गुस्से की नकल है, जो किसी तरह से जायज नहीं है, यह गंदा पानी पाक कैसे हो सकता है, यह सभी बातें नाजायेज हैं, इनका धार्मिक नियमों में कोई असल नहीं है.

1. यह नदी जार्डन और फ़िलस्तीन के बीच है। (इन्हे कसीर)
2. इन ईमानवालों ने भी जब शुरू में दुश्मन की बहुत बड़ी तादाद देखी, तो अपनी कम तादाद को देखते हुए इस बात को वाजेह किया, जिस पर उन के आतिमों और उन से ज़्यादा ईमान रखने वालों ने कहा कि कामयाबी तादाद में ज़्यादती और हथियार के आधार पर नहीं भिलती, बटिक अल्लाह तआला की ईरच्छा पर आधारित (मबनी) है और अल्लाह तआला का समर्थन (ताईद) हासिल करने के लिए सभ्र का होना ज़रूरी है।

२५०. और जब उनका जालूत और उसकी झोजों से मुकाबला हुआ, तो उन्होंने हुआ की, है हमारे पालनहार ! हमें सभ्र अता कर और साधित कटम बना हे और काफिर कोम पर हमारी मद्द कर.^१

२५१. अतः उन्हें अल्लाह के हुक्म से पराजित कर दिया और दाउद ने जालूत का कत्ल कर दिया^२ और अल्लाह ने उसे

मुल्क और हिक्मत^३ और जितना चाहा इल्म भी अता किया और अगर अल्लाह कुछ लोगों को दूसरे गरोह से हटाता न रहता तो घरती में इसाएँ फैल जाता, लेकिन अल्लाह हुनिया के लोगों पर बड़ा फैजल करने वाला है.^४

२५२. यह अल्लाह की आयते (सूत्र) हैं जिन्हें हम आप पर सरचाई के साथ पढ़ते हैं और निश्चय ही आप रसूलों (ईशादूतों) में से हैं.^५

१. जालूत उस दुश्मन कोम का सेना नायक था, जिस से तालूत और साथियों का मुकाबला था, यह अमालका की कोम थी, जो अपने वक्त में योद्धा और बहादुर लोग समझे जाते थे, उनकी ईसी प्रसिद्धता (शुहरत) के वजह से ठीक ज़ंग के समय में ईमानवालों ने अल्लाह के दरबार में सभ्र और मजबूती के लिए और कुक्ष के सामने ईमानवालों को फैठ और कामयाबी की हुआ की, यानी भोतिक कारणों (आदी अस्बाब) के साथ-साथ ईमानवालों के लिए ज़री है कि वह अल्लाह की ओर से कामयाबी और फैठ के लिए खास तरीके से हुआ करे, जिस तरह बद्र की ज़ंग के वक्त नबी (स.अ.व.) ने अल्लाह के दरबार में बड़ी आश्रहता और विनष्टता (ईन्कसारी-ईसरार) से फैठ और कामयाबी के लिए हुआ की थी, जिसे अल्लाह ने कुबूल किया जिसकी वजह से मुसमानों की छोटी सी तादाद ने काफिरों की बहुत बड़ी तादाद पर फैठ हासिल किया.
२. हज़रत दाउद जो अभी न पैगम्बर थे और न बादशाह, ईस तालूत की सेना में एक झोलु थे, उन के हाथों जालूत मारा गया और ईस थोड़े से ईमानवालों को बड़ी लकाकू कोम पर जुत दिलवाई.
३. ईस के बाद अल्लाह तआला ने हज़रत दाउद को बादशाहत और नबूवत दीनों अता किया.
४. ईस में अल्लाह के एक कानून की चर्चा है कि वह ईन्सानों ही के एक उम्मत के जरिये दूसरी उम्मत के जुल्म और गल्बा को खत्म करता रहता है अगर वह ऐसा न करता और किसी एक ही उम्मत को सदा ताकत और गल्बा का सोलाभ्य दिये रहता तो यह घरती जुल्म और इसाएँ से भर जाती.
५. यह पिछले वाकिआत जिनका इल्म आप पर नाजिल पाक कुरआन के जरिये हुनिया को हो रहा है, हे मुहम्मद (स.अ.व.) बेशक आप की नबूवत और सरचाई का सुबूत है, ईनका भयान न किसी किताब में किया है न किसी से सुना है, जिस से वाजेह है कि यह गेब की खबरें हैं जो वह्यी (ईशवाणी) के जरिये अल्लाह आप पर उतार रहा है.

२५३. यह रसूल हैं, जिन में से हम ने कुछ को कुछ पर इज़्जत दी है उन में से कुछ हैं जिन से अल्लाह (तआला) ने बात की है और कुछ का मर्तबा उच्चा किया है और हमने इसा पुत्र मरियम को मोर्जिजा अता किया और पाक इह से उनका समर्थन कराया,^१ अगर अल्लाह चाहता तो उन के बाद वाले अपने पास निशानियां आ जाने के बाद आपस में कभी भी लडाई-भीडाई न करते, लेकिन उन लोगों ने इधितलाइ किया, उन में से कुछ ने इमान कुबुल किया और कुछ काफिर हुए, और अगर अल्लाह (तआला) चाहता तो यह आपस में न लडते लेकिन अल्लाह (तआला) जो चाहता है, करता है।

२५४. हे इमानवालो ! जो हम ने तुम्हें दे रखा है, उस में से खर्च करते रहो, इस से पहले कि वह दिन आये जिस

दिन न तिजारत है न दोस्ती और न सिफारिश, और काफिर ही जालिम हैं। रपप. अल्लाह (तआला) ही सच्चा माबूद है, जिस के सिवाये कोई माबूद नहीं, जो जिन्दा है, और सबका थामने वाला है, जिसे न उंध आये न नीट उस की भिट्ठियत में जमीन व आसमान की सभी चीजें हैं, कौन है जो उस के हुक्म के बिना उस के सामने सिफारिश कर सके, वह जानता है जो उन के सामने हैं, जो उन के पीछे हैं और वह उस के इल्म में से किसी चीज का घेरा नहीं कर सकते, लेकिन वह जितना चाहे^२ उसकी कुर्सी की पुसअत ने जमीन व आसमान को घेर रखा है, वह अल्लाह (तआला) उनकी हिंकाजत से न थकता है और न उबता है, वह तो बहुत महान और बहुत बड़ा है।

१. मतलब वह भोर्जिजा है, जो हज़रत इसा को अता किये गये थे, जैसे मरे हुए को जिलाना आदि जिसकी तक्सील सूरः आले इमरान में आयेगी, पाक इह से मुराद जिज्ञील हैं, जैसाकि पहले भी गुजर चुका है।
२. यह आचतुल कुर्सी है, सहीह हटीसों में इसका बहुत महत्व (इक्लीलत) बयान किया गया है, जैसे यह कुरआन की सब से अक्षम आयत है, इसको रात को पढ़ने से शैतान से महकूज रहता है, इस को हर नमाज के बाद पढ़ना चाहिए। (इब्ने कसीर) कुर्सी से कुछ ने पैर रखने की जगह, कुछ ने ताकात, कुछ ने भुल्क, और कुछ ने अर्श मतलब लिया है, लेकिन अल्लाह तआला की सिफात और इज़्जतों के बारे में मोहूदिसीन (हटीस के आलिम) और बुझुर्गों की यही राय है कि अल्लाह तआला की जो सिफात, जिस तरह से कुरआन और हटीस में बयान हैं, उनको बिना किसी तर्क-पितर्क के उन पर इमान रखा जाये, इसलिए यही इमान रखना चाहिए कि हकीकत में कुर्सी है जो अर्श से अलग है, यह किस तरह की है, इस पर वह किस तरह बेठता है ? इसका बयान हम नहीं कर सकते क्योंकि इसकी कैफियत और हकीकत के बारे में हमें इल्म नहीं है।

२५६. दीन के बारे में कोई दबाव नहीं, सच-झुठ से अलग हो गया, ईसाइये जो ईन्सान तागूत (अल्लाह तआला के स्थिवाय दूसरे टेवों) को नकार कर अल्लाह (तआला) पर ईमान लाये, उस ने मजबूत कड़े को थाम लिया, जो कभी भी न टूटेगा और अल्लाह (तआला) सुनने पाता, जानने पाता है.

२५७. ईमानपालों का संरक्षक (पती) अल्लाह तआला खुद है, वह उन्हें अंधेरे से रोशनी की ओर निकाल ले जाता है, और काफिरों के दोस्त शैतान है, वह उन्हें रोशनी से अंधेरे की तरफ ले जाते हैं, यह लोग जहन्नमी है, जो हमेशा उसी में पड़े रहेंगे.

२५८. क्या तूने उसे नहीं देखा, जिस ने मुल्क पाकर ईब्राहीम (अ.स.) से उस के पालनहार के बारे में झगड़ा किया जब ईब्राहीम ने कहा के मेरा रब तो वह है जो जन्दा करता और मारता है, वह कहने लगा, मैं भी जिलाता और मारता हूँ, ईब्राहीम (अ.स.) ने कहा अल्लाह (तआला) सूरज को पूरब की ओर से ले आता है, तू उसे पश्चिम से ले आ, अब वह काफिर भौंचका रह गया और अल्लाह जातिमों को हिंदायत नहीं देता.

२५९. या, उस ईन्सान के समान जिसका गुजर उस बस्ती पर हुआ, जो छत के बल ओंधी पड़ी हुई थी, कहने लगा उसकी मौत के बाद अल्लाह (तआला) उसे किस तरह जिन्दा करेगा तो अल्लाह (तआला) ने उसे सो साल के लिये भार दिया, फिर उसे (जिन्दा) उठाया, पूछा ! “कितनी मुद्दत तुझ पर गुजरी ?” जवाब दिया कि “एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा”¹ कहा कि “तू बिल्क सो साल तक रहा, फिर अब तू अपने खाने-पीने को देख कि बिल्कुल खराब नहीं हुआ और अपने गद्दे को भी देख, हम तुझे लोगों के लिये निशानी बनाते हैं, तू देख कि हम हड्डियों को किस तरह खड़ी करते हैं, फिर उन पर गोशत यढ़ाते हैं” जब यह सब वाजेह हो चुका, तो कहने लगा, “मैं जानता हूँ कि अल्लाह (तआला) सब कुछ जानने पाता है.”²

२६०. और जब ईब्राहीम (अ.स.) ने कहा, “है मेरे रब ! मुझे दिखा कि तू मुर्दा को किस तरह जिन्दा करेगा ?” अल्लाह (तआला) ने कहा “क्या तुम्हें ईमान नहीं ?” जवाब दिया, “ईमान तो है, लेकिन मेरे दिल को ईत्तेनान हो जायेगा” कहा, “यार परिन्दे लो, उन-

1. कहा जाता है कि जब वह ईन्सान भरा था तो थोड़ा दिन यढ़ा था, और जब वह जिन्दा हुआ तो भी शाम नहीं हुई थी तो उस ने हिसाब लगाया था कि अगर मैं कल आया था, तो एक दिन बीता था दिन का कुछ हिस्सा गुजरा है जबकि हड्डिकत यह है कि ईस वाकिआ की मुद्दत सो साल की थी.
2. यानी यकीन तो मुझे पहले भी था, लेकिन अब आंखों से देखकर यकीन और ईत्तम में और मजबूती आ गयी है.

के टुकडे कर डालो, फिर हर पहाड़ पर उनका एक-एक हिस्सा रख दो, फिर उन्हें पुकारो तुम्हारे पास टौटते हुए आ जायेगे” और जान रखो कि अल्लाह (तआला) जबरदस्त हिक्मत वाला है।

२७१. जो लोग अल्लाह (तआला) की राह में अपना माल खर्च करते हैं, उनकी भिसाल उस दाने जैसी है, जिस में से सात बालियां बिकते और हर बाली में सौ दाने हों, और अल्लाह (तआला) जिसे चाहे कई गुना है और अल्लाह (तआला) बड़ा कुशादा और ईमान वाला है।

२७२. जो लोग अपना माल अल्लाह (तआला) की राह में खर्च करते हैं, फिर उसके बाद ऐहसान नहीं जताते और न तकलीफ देते हों¹ उनका इस उन के रब के पास है, उन पर न तो कोई कर है न वह

उदास होंगे।

२७३. भली बात कहना और माफ़ करना। उस सदका से बेहतर है, जिस के बाद दुख दिया जाये और अल्लाह बेनियाज और सहनशील है।

२७४. हे ईमानवालो ! अपने सदका को ऐहसान ज्ञाकर और दुख पहुंचाकर बेकार न करो, जिस तरह से वह ईन्सान जो अपना माल दिखावे के लिये खर्च करे और न अल्लाह (तआला) पर ईमान रखे और न कथामत पर, उसकी भिसाल उस चिकने पत्थर की है, जिस पर थोड़ी सी भिड़ी हो, फिर उस पर जोरदार बारिश हो और वह उसे बिल्कुल साफ़ और सफ्ट छोड़ दे,² इन दियाकारों को अपनी कमाई से कोई चीज़ हाथ नहीं लगती और अल्लाह (तआला) काफिरों के समुदाय को हिंदायत नहीं देता।

१. अल्लाह की राह में माल खर्च करने की इज़्जत का जो बयान गुजर चुका है, केवल उस ईन्सान को हासिल हो सकेगा, जो माल खर्च करने के बाद ऐहसान न जाये, और भूंह से ऐसे लझ न करे जिससे किसी गरीब के सम्मान को ठेस पहुंचे और उसको तकलीफ का ऐहसास हो, यह ईतना बड़ा गुनाह है कि नबी (स.अ.व.) ने इसमाया, “कथामत के दिन अल्लाह तआला तीन तरह के ईन्सानों से बात नहीं करेगा। उन में एक ऐहसान जताने वाला है” (भुस्तिलभ, डिताबुल ईमान)
२. इस आयत में यह कहा गया है कि, सदका व सवाब करके, भलाई करके जताना और दुख हेने वाली बातें करना। ईमानवालों को जेब नहीं देते, बल्कि उन लोगों की आदत है जो मुनाफ़िक (अवसरवाही) हैं वह दिखावे के लिये खर्च करते हैं, दूसरे ऐसे खर्च करने की भिसाल ऐसी है की जैसे पत्थर की चट्टान पर भिड़ी जम जाये और कोई उस में बीज भी न हो और उस के बाद बारिश का एक झोका आये, तो सब कुछ बह जाये और वह पत्थर भिड़ी से बिल्कुल साफ़ हो जाये, या जिस तरह वह बारिश उस पत्थर के लिये फायेदामंद नहीं हुई उसी तरह दिखावे का दान भी उसको कोई फायेदा नहीं पहुंचा सकेगा।

૨૫. ઉન લોગો કી મિસાલ જો અપના માલ અલ્લાહ (તાલા) કી મર્જી હાસિલ કરને કે તિથે ખુશી દિલ સે ઓર ચકીન કે સાથ ખર્ચ કરતે હોય, ઉસ બાગ ફેસી હે જો ઉચ્ચી ધરતી પર હો ઓર જોરદાર બારિશ સે અપના ફલ દુગના લાદે ઓર અગર ઉસ પર બારિશ ન ભી હો તો ફુહાર હી કાફી હૈ, ઓર અલ્લાહ (તાલા) તુમ્હારે અમલો કો દેખ રહા હૈ.

૨૬. કચા તુમ મેં સે કોઈ ભી ચછ ચાહતા હૈ કિ ઉસ કે ખજૂરો ઓર અંગૂરો કે બાગ હોય, જિસ મેં નહેરે બહુ રહી હોય ઓર હર તરણ કે ફલ મૌજૂદ હોય, ઉસ ઈન્સાન કા બુઢાપા આ ગચ્છા હો, ઉસ કે નન્હે-નન્હે બચ્ચે ભી હોય ઓર અચાનક બાગ કો બગુલા લગ જાયે જિસ મેં આગ ભી હો જિસ સે બાગ જલ જાયે. ઈસી તરણ અલ્લાહ (તાલા) તુમ્હારે તિથે નિશાનિયો કો બચાન કરતા હૈ, તાકિ તુમ ફિક કર સકો.

૨૭. હે ઈમાનવાલો ! અપની હલાલ કમાઈ મેં સે ઓર ધરતી મેં સે તુમ્હારે તિથે હમારી નિકાલી હુદ્દ ચીજો મેં સે ખર્ચ કરો, ઉન મેં સે બુરી ચીજો કો ખર્ચ કરને કા ઈરાદા ન કરના જિસે તુમ ખુદ લેને વાલે નહી હો, હાં ! અગર આજે બનંદ કર લો તો,^૧ ઓર જાન લો અલ્લાહ (તાલા) બેનિયાજ ઓર હમદ વાલા હૈ.

૨૮. શૈતાન તુમ્હેં ગરીબી સે કરાતા હૈ, ઓર બેહયાઈ કા હુકમ દેતા હૈ^૨ ઓર અલ્લાહ (તાલા) તુમ કો અપની રહમત ઓર ફજલ કા વાચેદા કરતા હૈ, અલ્લાહ (તાલા) બહુત મેહરબાન ઓર ઈલ્મ વાલા હૈ.

૨૯. વહ જિસે ચાહે ઈલ્મ, અકલ દેતા હૈ ઓર જિસે અકલમંદી દી ગઈ ઉસે બહુત સારી ભલાઈ દી ગઈ ઓર નસીહત કેવળ અકલમંદ હી હાસિલ કરતે હૈન.

1. ચા જિસ તરણ સે તુમ ખુદ બેકાર ચીજે લેના અરણા નહી સમજતે, ઉસી તરણ અલ્લાહ કી રાહ મેં અરણી ચીજ હી ખર્ચ કરો.
2. ચાની નેક કામ મેં માલ ખર્ચ કરના હો, તો શૈતાન ચછ કરે પૈદા કરાતા હૈ કિ ઈસ સે તુમ ગરીબ ઓર તિખારી હો જાઓગે, લેકિન બુરે કામો મેં બેકાર કરને મેં એસે ઈરાદો કો કરીબ નહી આને દેતા બાટિક ઉન બુરે કામો કો ઈસ તરણ બના-સંવાર કે પેશ કરતા હૈ કિ ઉન કે તિથે છિપી હુદ્દ ઈરણાયે ઈસ તરણ જાગ જાતી હોય કિ ઉન પર ઈન્સાન બડે સે બડા માલ ખર્ચ કર ડાલતા હૈ.

२७०. तुम याहे जितना खर्च करो (या सदका करो) और जो कुछ नज़र मानो¹ उसे अल्लाह (तआला) जानता है और जालिमों का कोई सहायक नहीं।

२७१. अगर तुम दान-पुण्य (सदकात) को जाहिर करो, तो वह भी अच्छा है, और अगर तुम उसे छिपा कर गरीबों को दे दो, तो यह तुम्हारे लिये सबसे अच्छा है, अल्लाह (तआला) तुम्हारे गुनाहों को खट्ट कर देगा और अल्लाह (तआला) तुम्हारे सभी अभ्यासों से बाखबर है।

२७२. उन्हें हिंदायत पर ला खड़ा करना तुम्हारे अधिकार में नहीं, बल्कि हिंदायत (मार्गदर्शन) अल्लाह (तआला) देता है जिसे चाहता है, और तुम जो अच्छी चीज अल्लाह की राह में दोगे उसका फायेदा खुद पाओगे, तुम्हें सिई अल्लाह (तआला) की खुशी हासिल (प्राप्त) करने के लिये खर्च करना चाहिये, तुम

जो कुछ माल खर्च करोगे उसका पूरा-पूरा बदला तुम्हें दिया जायेगा और तुम्हारा हक (अधिकार) न मारा जायेगा।

२७३. दान के लायक सिई वह गरीब हैं जो अल्लाह की राह में रोक दिये गये, जो देश में चल-झिर नहीं सकते,² लेवकुफ लोग उनके सवाल न करने की वजह से उन्हें मालदार समझते हैं, आप उन के मुँह को देखकर अलाभत से उन्हें पहचान लेंगे, वह लोगों से चिमटकर भीं नहीं भाँगते, तुम जो कुछ माल खर्च करो अल्लाह (तआला) उसका जानने वाला हैं।

२७४. जो लोग अपने माल को रात-दिन छुपा कर या खुल्लम-खुल्ला खर्च करते हैं, उन के लिये उन के रब के पास बदला है, न उन्हें कोई कर है और न कोई गम।

1. मनोती (नज़र) का भतलब है कि मेरा फ्लां काम हो गया या फ्लां दुःख का खात्मा हो जायेगा, तो मैं अल्लाह की राह में ईतना सदका करूँगा, इस नज़र को पूरा करना ज़रूरी है, अगर किसी नाफरमानी और नाजायेज काम की नज़र मानी है तो उसे पूरा करना ज़रूरी नहीं है, नज़र भी नमाझ और रोज़े की तरह ईबादत है, ईसलिये अल्लाह के सिवाय किसी और की नज़र मानना उसकी ईबादत है जो शिर्क है, जैसाकि आज़कल मशहूर मजारों पर मनोती और चढ़ावे का यह काम आम है, अल्लाह तआला इस शिर्क से बचाये।

2. इस से मुराद वह मुहाजिर हैं जो मक्का से मदीना आये और अल्लाह की राह में आने की वजह से उनकी हर चीज छूट गयी, इस परिधि (जुमरा) में दीन की तालीम हासिल करने वाले विद्यार्थी और आलिम (धार्मिक शिक्षक) भी आते हैं।

२७५. ब्याज खाने वाले लोग न खड़े होंगे, लेकिन उसी तरह, जिस तरह वह खड़ा होता है, जिसे शैतान लग कर पागल बना देता है,¹ यह ईसलिये कि यह कहा करते थे कि तिजारत भी तो ब्याज ही की तरह है,² जबकि अल्लाह (तआला) ने तिजारत को हलाल किया और ब्याज को हराम, और जो ईन्सान अपने पास आयी हुई अल्लाह (तआला) की नसीहत सुन कर इक गया उस के लिये वह है जो गुजर गया,³ और उसका मामला अल्लाह (तआला) के पास है और जो फ़िर (हराम की ओर) पलटा वह जहननभी है, ये हमेशा उसी में रहेंगे.

२७६. अल्लाह (तआला) ब्याज को

मिटाता है और दान को बढ़ाता है, और अल्लाह (तआला) किसी नाशुका और काफ़िर को भिन्न नहीं बनाता।

२७७. जो लोग ईमान के साथ (सुन्नत के अनुसार) काम करते, नमाजें को कायम करते हैं और जकात अदा करते हैं, उनका फ़िल उन के रब के पास है, उन पर न तो कोई कर है और न कोई दुःख।

२७८. हे ईमानवालो ! अल्लाह (तआला) से डरो और जो ब्याज बाकी रह गया है, वह छोड दो अगर तुम सचमुच ईमानवाले हो।

२७९. अगर ऐसा नहीं करते तो अल्लाह (तआला) और उस के रसूल से लड़ने के लिये तैयार हो जाओ,⁵ और अगर माझी मांग लो तो तुम्हारा असल

1. ब्याज लेने वाले की यह हालत कब्र से उठते वक्त या कथामत के भैदान में होगी।
2. हालाकि तिजारत में तो सामान और पैसे का बराबर लेन टैन होता रहता है, दूसरे ईस में फ़ायेदा व नुकसान की उम्मटी रहती है, जबकि ब्याज में यह दोनों बातें नहीं होती हैं, ईसलिये अल्लाह ने बेचने को हलाल और ब्याज को हराम कहा है, फ़िर यह दोनों एक कैसे हो सकते हैं ?
3. ईमान लाने और माझी मांग लेने के बाद पिछला ब्याज लेने पर पक्क नहीं होगी।
4. यह ब्याज के वास्तविक (हकीकी) और आतिक नुकसान के बाद सदका के फ़ायेदा की तक्षील है, ब्याज से देखने में तो बछोतरी होती है, लेकिन उसके असल मायने के अनुसार परिणाम स्पर्श (अंजाम के ऐतबार से) ब्याज का माल उसकी बरबादी और खराबी की वजह बनती है, ईस बात का समर्थन (ताईद) अब पश्चिमी देशों के अर्थशास्त्री भी करने लगे हैं।
5. यह ऐसी कड़ी चेतावनी (तंबीह) है जो किसी दूसरे गुनाह के करने पर नहीं आई है, ईसलिये हज़रत अब्दुल्लाह खिल अब्बास ने कहा कि जो ईन्सान ईस्लामी मुल्क में ब्याज छोड़ने के लिये तैयार न हो तो वक्त के राज्य प्रभुण (हाकिम) की जिम्मेदारी है कि उससे तोबा कराये (क्योंकि वह अल्लाह और रसूल से ज़ंग का अलान कर रहा है) और न इकने की हालत में उसकी गर्दन मार दे। (ईज्ञे कसीर)

माल तुम्हारा ही है न तुम जुल्म करो और न तुम पर जुल्म किया जाये।¹

२८०. और अगर कोई गरीब हो तो उसे सहूलत तक पक्त देना चाहिये, और सदका कर दो तो तुम्हारे लिये ज्यादा अच्छा है, अगर तुम में इल्म हो।

२८१. और उस दिन से करो, जिस में तुम सब (अल्लाह तआला) की तरक्क लोटाये जाओगे और हर ईन्सान को उस के अमल के ऐतबार से पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा और उन पर जुल्म नहीं किया जायेगा।²

२८२. हे ईमानवालो ! जब तुम आपस में मुकर्रर मुद्दत के लिए एक-दूसरे से उधार का लेन-देन करो तो लिख लिया करो और लेखक को चाहिये कि आपस का मामला ईन्साफ के साथ लिखे, लेखक

(लिखने वाले) को चाहिये कि लिखने से ईन्कार न करे, जैसे अल्लाह (तआला) ने उसे सिखाया है उसी तरह उसे भी लिख देना चाहिये और जिस के जिम्मे हक हो वह लिखवाये और अपने अल्लाह (तआला) से डरे जो उसका रब है, और हुक्क में से कुछ घटाये नहीं, हाँ जिस ईन्सान पर हुक्क हो और वह जाहिल हो या कमज़ोर हो या लिखवाने की ताकत न रखता हो तो उसका वली ईन्साफ के साथ लिखवा दे और अपने में से दो भर्दों को गवाह रख लो, अगर दो भर्द न हों तो एक भर्द और दो औरतें जिन्हे तुम गवाह के तोर पर पसन्द कर लो, ताकि एक की भूल-चूक को दूसरी चाउ दिला दे,³ और गवाहों को चाहिये कि वे जब बुलाये जायें तो ईन्कार न करें, और कर्ज को जिसकी मुद्दत मुकर्रर है चाहे छोटा हो या बड़ा हो लिखने में

1. तुम अगर असल माल से ज्यादा माल वसूल करोगे, तो यह तुम्हारा जुल्म होगा और अगर तुम्हें असल माल न दिया जाये तो यह तुम पर जुल्म होगा।
2. कुछ कोल के ऐतबार से यह नबी करीम (स.अ.व.) पर नाजिल आजिरी आयत (श्लोक) है जिस के बाद ही आप का ईतिकाल हो गया।
3. यह एक भर्द के सामने दो औरतों को मुकर्रर करने की इज़लत और अकलमंटी है, या औरत अकल और याद रखने में भर्द से कमज़ोर है। (जैसाकि सहीह मुस्लिम की एक हीस में औरत को कम अकल कहा गया है) यह औरत के हुक्क का हनन और बेईज़ज़ती का सुबूत नहीं है, (जैसाकि कुछ लोग कहते हैं) बल्कि उनकी फितरी कमज़ोरी का बयान है जो अल्लाह तआला के इल्म और भर्ज पर भबनी है, धमंड की वजह से कोई ईसको कुबूल न करे तो और बात हैं, लेकिन हकीकत और घटनाओं के आधार पर ईसका खंडन नहीं किया जा सकता।

सुस्ती न करो, अल्लाह तआला के करीब यह बात बहुत ईन्साफ़ वाली है, और गवाही को ठीक रखने वाली और शक से भी ज्यादा बचाने वाली है,¹ और यह बात अलग है कि वह भामला नगद तिजारत की शक्ति में हो जो आपस में लेन-देन कर रहे हो तो तुम पर उसके न लिखने में कोई गुनाह नहीं, खरीदने बेचने के वक्त भी गवाह मुकर्रे कर लिया करो, और (याद रखो) न तो लिखने वाले को नुकसान पहुंचाया जाये और न गवाहों को² और अगर तुम ऐसा करो तो यह तुम्हारी खुली नाफ़रमानी है, अल्लाह (तआला) से

इरो, अल्लाह (तआला) तुम्हें नसीहत दे रहा है और अल्लाह (तआला) सब कुछ जानने वाला है।

२८३. और अगर तुम सफर में हो और लिखने वाला न पाओ तो गिरवी अपने पास रख लिया करो, और अगर आपस में एक-दूसरे पर यकीन हो, तो जिसे अभानत दी गयी है वह उसे अदा कर दे, और अल्लाह (तआला) से डरता रहे जो उसका रब है³ और गवाही को न छुपाओ और जो उसे छिपा ले वह अन का पापी है,⁴ और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह (तआला) उसे अरब्धी तरह जानता है।

1. लिखने का फायदा है कि ईससे ईन्साफ़ की मांग पूरी होगी, गवाही भी सही होगी (कि गवाह के भोजूद न होने या भोत के बाद उनका लिखा हुआ लेख गवाह बन जायेगा) और किसी तरह के शक से दोनों पक्ष महकूज रहेंगे, क्योंकि शक होने की हालत में लेख देख लेने पर शक दूर कर लिया जायेगा।
2. ईनको नुकसान पहुंचाने से मुराद यह है कि बहुत दूर से उन्हें बुलाया जाये, जिस से उनकी व्यस्तता (मश्गूलियत) में अद्यन और तिजारत में नुकसान हो या उनको झुठी बात लिखने या उसका गवाह बनने के लिए मजबूर किया जाये।
3. अगर एक-दूसरे पर भरोसा हो तो जिना गिरवी रखे भी कर्ज का सोदा कर सकते हो, अभानत से मुराद यहां कर्ज है, अल्लाह से डरते हुए उसे जायेज तरीके से अदा कर दो।
4. गवाही को छिपाना बहुत बड़ा गुनाह है, ईसलिये ईसकी बहुत बुराई यहां कुरआन में और हट्टीस में की गयी है, ईसलिये सही गवाही की बड़ी अहमियत भी है, सहीह मुस्लिम की हट्टीस है कि नबी (स.अ.व.) ने इरमाया: “वह सब से अरब्धा गवाह है, जो जिना गवाही की मांग के खुद गवाही के लिये हाजिर हो जाये。” (सहीह मुस्लिम).

૨૮૪. જમીનો આસમાન કી હર ચીજ અલ્લાહ (તાલા) કે અધિકાર મેળે હૈ, તુમ્હારે દિલો મેળે જો કુછ હૈ, ઉસે ચાહે જાહિર કરો યા છુપાઓ, અલ્લાહ (તાલા) ઉસકા હિસાબ લેગા, ફિર જિસે ચાહે માફ કર દે ઓર જિસે ચાહે સજા હે ઓર અલ્લાહ (તાલા) હર ચીજ પર કુદરત રખતા હૈ.

૨૮૫. રસૂલ ઉસ ચીજ પર ઈમાન લાયે જો ઉસકી તરફ અલ્લાહ (તાલા) કી તરફ સે ઉતારી ગયી ઓર મુસલમાન ભી ઈમાન લાયે, યહ સબ અલ્લાહ (તાલા) ઓર ઉસકે ફરિશે પર, ઓર ઉસ કી કિતાબો પર, ઓર ઉસ કે રસૂલો પર ઈમાન લાયે, ઉસ કે રસૂલો મેળે કિસી કે બીચ હમ ફર્ક નહીં કરતે, ઉન્હોને કહા કિ હમ ને સુના ઓર

ઈતાઅત કી, હમ તુઝ સે માફી ચાહતે હૈ, હે હમારે રબ ! ઓર હમે તેરી હી તરફ લોટના હૈ.

૨૮૬. અલ્લાહ કિસી ભી આત્મા (નિઃસ) પર ઉસ કી તાકત સે જયાબોજ નહીં ડાલતા, જો સવાબ વહ કરે વહ ઉસ કે લિએ હૈ ઓર જો બુરાઈ વહ કરે વહ ઉસી પર હૈ, હે મારે રબ ! અગર હમ ભૂલ ગયે હોં યા ગલતી કી હો તો હમેં ન પકડના, હે હમારે રબ ! હમ પર વહ બોજ ન ડાલ જો હમ સે પહુલે લોગો પર ડાલા થા, હે હમારે રબ ! હમ પર વહ બોજ ન ડાલ જો હમારી તાકત મેળે ન હો ઓર હમેં માફ કર દે, ઓર હમેં માફી અતા કર, ઓર હમ પર રહમ કર, તૂ હી હમારા માલિક હૈ, હમેં કાફિર કોમ પર ફિઠું અતા કર.



અપીલ

અહુમુદુલીલાહ, ઈસ્લામિક ઇન્ફરેશન સેન્ટર-ભુજની સ્થાપના ૨૦૧૨ ના વર્ષમાં થઇ હતી. તેનો હેતુ અલ્લાહના દીનથી અજાણ લોકો સુધી ઈસ્લામનો સંદેશ પહોંચાડવાનો છે. સંસ્થા દીનની દાવત માટે જે કંઈ કરી રહી છે તેની માહિતી આપ સો સુધી પુસ્તકોના માદ્યમથી પહોંચતી રહી છે. આપ જાણો છો કે દીની સાહિત્ય છપાવવા માટે પિશેખ આચ્યોજન અને નાણાકીય બંડોળની જરૂર રહે છે. આ સંદર્ભમાં આપને તન-મન અને ધનથી સંસ્થાને સહકાર આપવાની નામ અપીલ કરીએ છીએ.